बीकानेरी-प्रत्यय

[बीकानेरी आवद्ध रूपों का वर्णनात्मक अध्ययन]

(लघु शोध-प्रबन्ध)

भगवान दास किराडू

एम ए (हिन्दी), रिसर्च स्कॉलर

भूमिका लेखक

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

एम ए पी एच डी

अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

डूंगर महाविद्यालय, बीकानेर

प्रकाशक

श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकानेर

मूल्य
रु १२.५०

बीकानेरी–प्रत्यय

– लेखक –
भगवान दास किराड़ू

प्रकाशक
श्री गणेश-शक्ति प्रकाशन, बीकाने

– मुद्रक –
मरुदीप प्रिंटिंग प्रेस, कोट गेट, बीकानेर

BIKANERI PRATYAY

Bhagwan Dass Kirarco

Price Rs 12 50

परमपूज्य स्व० नानाजी प० हरदास जी पुरोहित पुण्य स्मृति ग्रन्थमाला



स्व० प० हरदास जी पुरोहित

भूमिका

भारोपीय परिवार की भाषाओं और बोलियों में धातु को महत्त्वपूर्ण स्थान प्राप्त है। वह शब्द की नाभिक होती है। इसीका रूप-विस्तार भाषा की संपत्ति बनता है। अनेक रूप बदल कर भी भाषा में भी वह अपने रूप को बनाये रखती है और अर्थ के अनेक परिवर्तनों में वह स्वार्थ की रक्षा किये रहती है। रूप रचना की प्रक्रिया में पडकर वह अपनी ध्वनियों में मुख सुख या अन्य किसी कारण से परिवर्तन स्वीकार करती है, पर रूप ध्वनि ग्रामीय परिवर्तन में भी वह सर्वथा अदृश्य नहीं बन पाती।

उक्त परिवार की भाषाओं और बोलियों में धातु के बाद महत्त्वपूर्ण स्थान प्रत्यय को प्राप्त है। इनका स्वतंत्र कोशात्मक अर्थ नहीं होता, किन्तु ये दूसरे शब्दों के साथ लगकर उसे नया अर्थ देते हैं और शब्द को वाक्यों में प्रयोग योग्य बनाते हैं। इनकी क्रिया द्विविध होती है (१) शब्द निर्माण करना तथा (२) निर्मित शब्दों को वाक्य में प्रयोग योग्य बनाना। ये शब्द साधक भी होते हैं और रूप साधक भी। शब्द साधक में इनकी पहली क्रिया धातु के साथ प्रकट होती है और दूसरी क्रिया पूर्व-प्रक्रिया से निर्मित शब्दों के साथ प्रकट होती है। इसी आधार पर इन्हें कृदन्त (Primarry) और तद्धित (Secondary) प्रत्ययों की संज्ञा दी गयी है। ये दोनों प्रकार के प्रत्यय भाषा में प्रातिपदिकों का निर्माण करते हैं।

रूप रचना की दृष्टि से प्रातिपदिकों का नाम पदों में भी वही स्थान है जो क्रिया पदों में धातुओं का है। दोनों में केवल अर्थ होते हैं, व्याकरणिक रूप नहीं होते। मानो ये दोनों ही उस अनगढ पत्थर के समान हैं जिन्हें भाषा भवन में निर्माण के पूर्व व्याकरणिक संस्कार में होकर गुजरना आवश्यक है। यह व्याकरणिक संस्कार ही भाषा की रूप साधना है।

बीकानेरी बोली भारोपीय परिवार की ही एक बोली है। इस परिवार की भारतीय आर्य भाषाओं की यशस्वी परम्परा रही है। इसी की वैदिक संस्कृत भाषा ने विश्व को प्राचीनतम साहित्य प्रदान किया है। श्रुतियों की सुरक्षा के लिये ध्वनि व अर्थ का जो

अध्ययन अतीत मे हो गया वही भाषा विज्ञान के इतिहास को भी आरम्भ दे गया जिसे बाद मे पाणिनिप्रभृति वैयाकरणो ने आगे बढाया। पाणिनि की अष्टाध्यायी मानवी प्रतिभा की श्रेष्ठतम कृति है, जिसमे सस्कृत का सर्वांगीण वर्णनात्मक अध्ययन हुआ है। प्राकृतों के अध्ययन मे हेम चन्द्र ने भाषा का अध्ययन इतिहास क्रम से किया पर वे पाणिनि की परम्परा को आगे नही बढा सके ।

आधुनिक युग मे भारत मे भाषाओ का वज्ञानिक अध्ययन विदेशी भाषा वज्ञानिको के अनुकरण पर हुआ । ग्रियर्सन कनॉग, बीम्स, ट्रम्प, पिशल हार्नली, टनर, आदि ने भारतीय भाषाओ पर जो कार्य किया वही वहा के लिये प्रेरक बना। अनेक आधुनिक भारतीय भाषाओ पर आधुनिक काल मे काय हुआ और विद्वानो की दृष्टि राजस्थानी पर भी गयी। ग्रियसन के उपरान्त टसीटोरी का पश्चिमी पुरानी राजस्थानी का अध्ययन महत्त्व पूर्ण है। डा० सुनीति कुमार चटर्जी ने राजस्थानी भाषा का अध्ययन मनोयोग से किया और उसे अपने चार भाषणो मे राजस्थानी भाषा पुस्तक रूप मे प्रस्तुत किया। राजस्थान मे शिक्षा के प्रसार के साथ हाडोती, शेखावाटी, मेवाडी आदि बोलियो पर यहाँ के विद्वानो ने काय किया, इससे कुछ महत्त्वपूर्ण निष्कर्ष सामने आये।

यद्यपि हिन्दी और राजस्थानी भाषाओ पर पर्याप्त काय हुआ है, फिर भी उनकी विभिन्न बोलियो पर शोध कार्य के लिये पर्याप्त गु जाइश है। एक भाषा या विभाषा की अनेक बोलिया अपने भौगोलिक व ऐतिहासिक अतर से परस्पर पृथक सी प्रतीत होती है। पश्चिमी और पूर्वी राजस्थानी के मध्य अरावली पवत की दुगमता इस अन्तर का हेतु बनी है। यही दुगमता विशाल रेतीले मदानो मे बिखरी जन – सख्या के परस्पर मिलन व विचार – विनिमय मे भी बाधक बनी है। अत बीकानेरी व मारवाडी मे पर्याप्त भिन्नता दृष्टिगोचर होती है। यह भिन्नता दोनो मे ध्वनि व प्रत्यय विधान का अध्ययन करने से स्पष्ट दिखाई दे सकती है।

बीकानेरी प्रत्ययो पर लिखी गई प्रस्तुत पुस्तक बीकानेर क्षेत्र के अध्येता द्वारा लिखा गया लघु – प्रबध है। अध्येता श्री किराडू इस क्षेत्र के निवासी है और बीकानेरी भाषी है। अत इनके द्वारा प्रस्तुत

सामग्री अधिक विश्वसनीय और प्रामाणिक होनी चाहिए। लेखक का संस्कृत का अध्ययन भी प्रस्तुत विषय के अध्ययन मे सहायक बना है और इसे अधिक वैज्ञानिक बना सका है साथ ही वह पूर्वाग्रहो से मुक्त है, जो इस शैली के विद्वानो मे प्राय मिलता है।

कभी-कभी देश की चोटी के विद्वानो या राजतन्त्र द्वारा ऐसी बात कह दी जाती है जिन्हें विषय विशेष का लघु अध्येता भी गले नही उतार पाता। सन १९६१ की जनगणना मे बीकानेरी भाषियो की कुल सख्या ४७ बतायी गयी है।[1] जिनमे से राजस्थान के नगरो मे तो इसके बोलने वाले हैं ही नही।[2] यह तथ्य आश्चर्यजनक है। जनगणना के कार्य मे लगे अप्रशिक्षित कर्मचारियो के द्वारा एकत्र भ्रान्त आकडा से ऐसी भूल हुई है। प्रस्तुत प्रबंध का लेखक बीकानेरी भाषियो के मध्य मे रहता है। अत वह यह तो जानता है कि इसके बोलने वालो की सख्या 'जनगणना' मे दी गई सख्या से कई सौ गुनी है, पर साधनो के अभाव मे वह ठीक आकडे प्रस्तुत नही कर सका है।

पुस्तक मे कृत प्रत्यय पर छठे और दूसरे अध्यायो मे विचार हुआ है - षष्ठ अध्याय का शीर्षक तो 'कृत् प्रत्यय' ही है, पर द्वितीय अध्याय के 'नाम – प्रत्यय शीर्षक के अन्तर्गत' प्रथम पर प्रत्यय (२ ३ १) उप शीर्षक से जो विचार हुआ है - वह भी कृत् प्रत्यय विचार ही है। द्वितीय अध्याय की आवश्यकतावश लेखक ने कृत प्रत्ययों पर यही विचार कर लिया और पुनरावृत्ति भय से वहा वह मौन रहा है। इसमे बोली के सर्वांगीण अध्ययन मे तो किसी प्रकार की त्रुटि उत्पन्न नही हुई, पर वहा इसके सकेत अनुल्लेख से तनिक अस्पष्टता आई है।

लेखक ने विषय-वर्गीकरण मे जिस सूझ-बूझ और वैज्ञानिक दृष्टि का परिचय दिया है, उसी का निर्वाह विषय प्रतिपादन मे भी किया है। पुस्तक का ततीय अध्याय 'सर्वनाम प्रत्यय' लेखक की गवेषणा बुद्धि की पैनी पकड से उद्भुत है। उसने बीकानेरी बोली के सर्वनामो के केन्द्रक रूपो को खोजकर उसके मूल आधार – विधायक व तिर्यक् आधार - विधायक प्रत्ययो की जो प्रतिष्ठा की है इससे भाषा विज्ञान के अध्येता को यह सोचने के लिए विवश होना पडता है कि

१– सैंसस आफ इडिया १९६१, पुस्तक प्रथम, पृ० ८३
२– वही पृ ८४

भाषा के तत्त्वो मे धातु, प्रातिपादिक, प्रत्यय व निपात के अतिरिक्त भी गवेषणीय विषय है।

कृत – प्रत्यय के अध्याय मे भूतकालिक त–प्रत्यय (६ २ २) मे मरियोडो, चूसियोडो आदि कृदन्त शब्दा की रचना आकर्षक है। इसमे धातु + भूत कालिक कृत प्रत्यय + तिर्यक प्रत्यय + स्वार्थक प्रत्यय + तिर्यक् प्रत्यय (√मर् + /इय्/ +/ओ/ + /ड/ + /ओ/) मिलते ह। प्राय होता यह है कि जहा – जहा शब्द के साथ स्वार्थक प्रत्यय प्राप्त होता है वहा वहा वह ही तिर्यक् प्रत्यय को अपना लेता है और मूल शब्द को अपने पूर्व रूप म छोड देता है। पर यहा यह प्रत्यय दो बार प्रयुक्त हुआ है। पहला / ओ/ किसी लिंग – वचन जनित विकार को प्राप्त नही हुआ, पर दूसरा विकारी है। पूर्व/ओ/ का यह अविकृत रूप ही भ्रान्ति का कारण बना हुआ है। राजस्थानी म अनेक स्वार्थक प्रत्यय— ट ड, क, इय ल, आदि है और मूल शब्द का विकार प्राय ये ही प्रत्यय ग्रहण करते है।

पुस्तक का सप्तम अध्याय ' परसर्ग – प्रत्यय ' है। इसमे परसर्ग और निपात पर विचार हुआ है। परसर्ग वाक्य म पद या पद समुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक सबध व्यक्त करते हैं। अत उन पर विचार करके लेखक न प्रत्यय-अध्ययन को – उसके व्युत्पादक व व्याकरणिक सबध — अयन अध्ययन को पूर्ण एव सर्वांगीण बना दिया है।

भाषा के अध्ययन का काय साहित्य-शोध-काय से अधिक सूक्ष्म व दुरूह होता है जो या तो सुदीघकालीन अभ्यास द्वारा सभव है अथवा असामान्य बौद्धिक क्षमता द्वारा। विद्वान् लेखक की इस कृति में दोना का समन्वय दिखाई देता है।

अत मुझे अपने छात्र श्री निराडू के इस प्रशसनीय प्रयास की भूमिका लिखते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है। मुझे विश्वास है कि यह कृति भाषा – शोध मे अनुसधान करने की दिशा म प्रेरणा-दायिनी सिद्ध होगी।

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा
अध्यक्ष हिन्दी विभाग, डूगर महाविद्यालय
बीकानेर

प्राक्कथन

प्रत्यय वह शब्द या शब्दांश है जिसका अपना कोई स्वतंत्र कोशात्मक अर्थ नहीं होता किन्तु दूसरे शब्दों के साथ लगकर सार्थक होता है। आधुनिक भाषा विज्ञानी प्रत्ययों को आबद्धपदग्राम कहते हैं। ये दो प्रकार के होते हैं– शब्द निर्माणकारी प्रत्यय तथा रूप निर्माणकारी प्रत्यय। शब्द निर्माणकारी प्रत्यय भी दो प्रकार के होते हैं कृत् एवं तद्धित। कृत् प्रत्ययों के संबंध से धातुजन्य शब्द बनते हैं और तद्धित प्रत्ययों के संबंध से संज्ञा और विशेषण शब्दों का निर्माण होता है। रूप-निर्माणकारी प्रत्यय नाम और धातु शब्दों के कारक, क्रिया तथा काल का लिंगवचन के परिवेश मे निर्धारण करते हैं।

भाषा में, मूलतः आर्यभाषाओं के वर्ग की भाषाओं में, उपर्युक्त दोनों प्रकार के प्रत्ययों का पृथक् पृथक् बहुत बड़ा योगदान है। जितने महत्त्व के शब्द होते हैं, उससे कहीं अधिक महत्त्व के प्रत्यय होते हैं और उससे भी कहीं अधिक महत्त्व के अनेक व्याकरणिक रूप होते हैं क्योंकि भाषा का चरम अवयव वाक्य होता है और विभिन्न शब्दों के बीच वाक्य मे संबंध तत्व की स्थापना प्रत्ययों के बिना संभव नहीं होती, भले ही कहीं शून्य प्रत्यय ही क्यों न हो।

भाषा के इस महत्त्वपूर्ण अवयव का विश्लेषण करने की प्रेरणा मुझे अपने श्रद्धेय गुरुवर डा० कन्हैया लाल जी शर्मा से मिली और मैंने बीकानेरी में प्रत्ययों के अनुसंधान का निश्चय कर लिया। मै जानता हूँ कि इस विषय पर अभी तक कोई काम नहीं हुआ है और मैं तो यह भी जानता हूँ कि प्रत्ययों के परिपार्श्व में बहुत ही थोड़ा काम हुआ है। यद्यपि डॉ० उदय नारायण तिवारी, डॉ० धीरेन्द्र वर्मा डॉ० हरदेव बाहरी, डॉ० भोलानाथ तिवारी, डॉ० चन्द्रभान रावत, डॉ० देवेन्द्र नाथ प्रभृति अनेक विद्वानों ने प्रत्ययों के ऊपर काम किया है तथापि प्रत्यय संधान की दृष्टि से डॉ० उप्रेति का काम अविस्मरणीय है। यह सब काम हिन्दी के क्षेत्र में हुआ है और मुझे इनसे अमोघ प्रेरणा मिली है, किन्तु मेरे लिए यह भुलाना संभव न हुआ कि जहाँ हिन्दी और बीकानेरी के कुछ

प्रत्यय समान हैं, वहाँ बीकानेरी के अनेक प्रत्यय मौलिक भी है। अतएव मैं उभय निष्ठ प्रत्ययो की अपेक्षा बीकानेरी के मौलिक प्रत्यया के प्रति अधिक निष्ठावान एव सतक रहा हू।

प्रस्तुत लघु शोध-प्रवध को निम्नलिखित सात अध्यायो म विभाजित किया गया है—

प्रथम अध्याय का शीर्षक 'विषय प्रवेश' है। इसमे बीकानेर क्षेत्र का परिचय, बीकानेरी क्षेत्र व सीमाए, बीकानेरी भाषी, तथा बीकानरी की भाषा वज्ञानिक विशेषताओ का वणन प्रस्तुत किया गया है। मेरे लघु शोध-प्रवध का विषय 'बीकानेरी-प्रत्यय- विधान' है अत इसी अध्याय मे प्रत्ययो के ऐतिहासिक स्वरूप पर भी प्रकाश डाला गया है। शोध-प्रबध का यह अध्याय वस्तुत प्रस्तुत अध्ययन के लिये भूमि तयार कर देता है।

द्वितीय अध्याय मे बीकानेरी नाम-व्युत्पादक प्रत्ययों का वणन प्रस्तुत किया गया है। नाम व्युत्पादक प्रत्ययो को तीन भागो मे विभाजित किया गया है। ये हैं— पूव प्रत्यय मध्य प्रत्यय एव अत्य प्रत्यय। अत्य प्रत्ययो को पुन दो भागो मे विभाजित किया गया है - प्रथम पर प्रत्यय एव द्वितीय पर प्रत्यय।

तृतीय अध्याय सवनाम-प्रत्यय है। इस अध्याय म उपलब्ध सवनामो का वर्गीकरण किया गया है एव उनकी रूप रचना तथा सरचना तालिकाओ को प्रस्तुत कर उनम आबद्ध अ शो का विश्लेषण किया गया है।

चतुथ अध्याय म विशेषण व्युत्पादक प्रत्ययो को दो वर्गों म विभक्त किया गया है मूल एव यौगिक। यौगिक विशेषण प्रत्ययो को पुन पूव प्रत्यय एव पर-प्रत्ययों म वर्गीकृत कर पर प्रत्ययो का निम्नलिखित उपभागो म विभाजित किया गया है - सज्ञा स विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय सवनाम स विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय क्रिया स विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय एव धातु स विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।

पचम अध्याय 'आख्यात प्रत्यय' है। धातु में व्युत्पादक प्रत्ययो का योग होता है अत व्युत्पादक प्रत्ययों की सुविधा एव धातु भेद के आधार पर इस अध्याय का नाम 'आख्यात प्रत्यय' रखा गया है। यह अध्याय दो भागों म विभा

जित है धातु व्युत्पादक प्रत्यय एव व्याकरणिक प्रत्यय। धातु व्युत्पादक प्रत्ययो को निम्नलिखित चार उपभागो म विभाजित किया गया है—
(१) नाम धातु-प्रत्यय (२) प्रेरणार्थक-धातु-प्रत्यय (३) सकमक धातु-प्रत्यय (४) अनुकरणात्मक धातु-प्रत्यय। व्याकरणिक प्रत्ययो को भी चार उपभागो म विभाजित किया गया है– (१) काल (२) अथ (३) वाच्य (४) लिंग वचन एव पुरुष।

षष्ठ अध्याय 'कृत-प्रत्यय' है। इसम कृत प्रत्ययो का वणन किया गया है।

सप्तम अध्याय 'पश्च-प्रत्यय' है जिसम पश्च प्रत्ययो का वणन है।

मेरे काय मे मैं किसी नवीनता का दावा न करता हुआ भी इतना ता कह ही सकता हू कि इसम मेरा परिश्रम है, मेरी सूझ बूझ एव मेरी गवेषणा है और मेरा अपना विश्लेषण है। बीच बीच म मुझे आशा निराशा के अनेक घात प्रतिघाता का सामना करना पडा है। उस स्थिति मे मुझे अपने प्रबुद्ध निदेशक से समुचित प्रेरणा मिली है। अतएव उनके प्रति हृदय से आभारी हू। इस अवसर पर उन सब के प्रति कृतज्ञता प्रकट किय बिना नहीं रह सकता जिन्होंने विभिन्न प्रकार से प्रस्तुत लघु शोध-प्रबध के लेखन में योगदान दिया। बीकानेरी के ममन विद्वान सवश्री नरोत्तमदास स्वामी, विद्याधर शास्त्री मुरलीधर व्यास तथा मूलचन्द 'प्राणेश' के प्रति विशेष आभार प्रकट करता हू।

अपने स्व० बाबा पुरुषोत्तमदास जी किराडू, द्वारकादास जी किराडू व स्व० बडियाजी पाना देवी के आशीर्वाद का फल ही यह कृति है। भगवान् उनकी आत्माओं को शान्ति प्रदान करे। मैं अपने परम पूज्य पिताजी गिरधर लाल जी किराडू व पूज्या माताजी शान्ति देवी व बडिया जी लक्ष्मी देवी के प्रति अपने आभार को शब्दो म व्यक्त नहीं कर सकता जिन्होंने अपने गृह कार्यों म व्यस्त होने पर भी समय निकाल कर बीकानेरी के वास्तविक स्वरूप को मरे सामने प्रस्तुत किया जिससे मुझे प्रत्यय चयन मे सुविधा मिली। साथ ही चाचाजी राधाकृष्ण जी, चाचीजी राजन्देवी एव बडे भाई साहब प्रह्लाददास जी का भी आभारी हू।

परम पूज्य स्वर्गीय नानाजी श्री हरदासजी, श्रद्धास्पद मामाजी सव श्री लक्ष्मीनारायण जी, हरनारायण जी युगलनारायण जी व व्रजनारायण जी, श्रोत्रिय बगसीराम जी तपोमूर्ति चौथामासी जी, पाचा मासीजी छठी मासीजी व श्री नारायण भाईसाहब का आशीर्वाद ही प्रस्तुत प्रबध के रूप म प्रतिफलित है। अत इन सभी के प्रति मैं श्रद्धावनत हू।

आदरणीय भाई श्री गोपाल नारायण एम० ए० (हिन्दी सस्कृत) एलएल०बी०, शास्त्री, श्री रामकृष्ण एम० ए० (हिन्दी सस्कृत), श्री शिवशकर नारायण एम ए (हिन्दी) श्री बृजनाथ एम० ए० (हिन्दी, सस्कृत) श्री वेद प्रकाश एम कॉम, भगिनी पुष्पा शमा एम० ए० (हिन्दी–सस्कृत), आदि ने इस विषय पर मेरा माग दशन किया है भातृ तुल्य दुर्गादास एव गिरधन दास ने परोक्ष व अपरोक्ष रूप से जो योगदान दिया है वह श्लाघनीय है। प्रबध को समय पर मुद्रण यवस्था करने मे महदीप प्रेस के व्यवस्थापक मक्खन भाई साहब व भाई जुगलकिशोर ने विशेष तत्परता दिखाई है। अत उनके प्रति मैं आभारी हू।

परमश्रद्धेय गुरुवर डा० कन्हैयालाल जी शर्मा ने अपने अमूल्य समय को न देखते हुए आशीर्वाद स्वरूप भूमिका लिखने की महती कृपा की है। अत गुरु देव को मेरे अनेक प्रणाम अर्पित हैं।

अत मे करहुनमपराघ स तुमर्हन्ति स त इस नम्रता के साथ मेरा यह श्रम पुष्प मा भारती को अपण करता हू।

प० गिरधर लाल जी किराडू
साले की होली, बीकानेर।
विजयदशमी, स० २०२८

भगवान दास किराडू



हिन्दी साहित्य के लब्ध प्रतिष्ठ विद्वान

श्रद्धेय गुरवर डॉ० सरनामसिंह जी शर्मा 'अरुण'

को

सादर समर्पित

संक्षिप्त-रूप

अप०	अपभ्रंश
आ० भा० आ० भा०	आधुनिक भारतीय आर्य भाषा
आ० ई० ऊ० व्य० वि०	आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, व्यंजनान्त विशेषण
ई०	ईसा
ई० पू० प्र०	ईसा पूर्व प्रथम शताब्दी
एल० एस० आई०	लिंग्विस्टिक सर्वे आफ इण्डिया
गौ० ही० ओ०	गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
ति० आ० वि० प्र०	तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय
पृ०	पृष्ठ
प०	पंक्ति
प्रा०	प्राकृत
पु०	पुल्लिंग
पु० स०	पुल्लिंग संज्ञा
पप्र०	पर प्रत्यय
बी० रा० इ०	बीकानेर राज्य का इतिहास
भा० वा० स०	भाव वाचक संज्ञा
मू० आ० वि० प्र०	मूल आधार विधायक प्रत्यय
मू० एव वि० स० वि० रूप	मूल एवं विकारी संज्ञा व विशेषण रूप
लि० व० का०	लिंग-वचन-कारक
स० आ० वि० प्र०	सम्बोधन आधार विधायक प्रत्यय
स्त्री० स०	स्त्री वाचक संज्ञा
सं०	संस्कृत

संकेत-चिन्ह

ध्वनि प्रक्रियात्मक दृष्टि से सपरिवतक का द्योतक ।

तथ्य के स्पष्टीकरण के लिए प्रयुक्त सकेत

हलन्त

व्युत्पन्न या सिद्ध रूप का द्योतक

ऐतिहासिक पूर्व रूप से पर रूप का द्योतक

पर प्रत्यय एवं विभक्ति का विभाजक सकेत

धातु सकेत

प्रत्यय के पश्चात् लगने से पूव रूप एव उसके पूव म लगाने से पर रूप की द्योतक ।

४ विशेषण–प्रत्यय ६२

५ आख्यात-प्रत्यय ८३

बीकानेरी-प्रत्यय

भगवान दास किराडू

अध्याय/१

विषय–प्रवेश

१ बीकानेर क्षेत्र का परिचय

वीरता के प्रांगण म स्वनामधन्य राजस्थान प्रान्त का अपना विशिष्ट स्थान है । बीकानेर इसी प्रान्त के पश्चिम उत्तर म स्थित एक भूखण्ड है जो स्वर्णाभ सिकता के बड़े-बड़े टीलों से आवृत्त है । बीकानेर का उत्तर-पूर्वी भाग शतद्रु सरस्वती की सहायता स अनुप्राणित रह चुका है । पश्चिम मे मूलत्राण (मूल स्थान मुलतान) से भी इसका परम प्राचीन सम्बन्ध रहा है । राष्ट्रकूटो का आदि निवास दक्षिण भारत म था । इनके साथ आने वाली जातियाँ भी दक्षिणात्य थी । मुगल काल म भी बीकानेर नरेशो का आवागमन दक्षिण म होता रहा है ।[1]

भूगर्भ शास्त्रियों का अनुमान है कि यह प्रदेश जूरसिक, क्रीटेशियम एवं इयोसिन के युगो म समुद्र मग्न था और यह समुद्र टेथिस के नाम से विख्यात था । 'ज्योलाजी आफ इण्डिया" के लेखक मि० वाडिया न भी इसी तथ्य की ओर संकेत किया है । टेरीशरी युग म इस प्रदेश की भौगोलिक स्थिति म परिवर्तन हुआ और पृथ्वी की आन्तरिक शक्तियो के संक्रमण से वह भाग ऊपर उठने लगा । शनै शनै समुद्र समाप्त हो गया एवं रेतीला भाग निकल आया । वाल्मीकि रामायण म भी समुद्र से मरुस्थल की उत्पत्ति विषयक एक रोचक गाथा

१ प० विद्याधर शास्त्री वर्तमान बीकानेरी और संस्कृत, राजस्थान भारती, अंक २, भाग ४ अक्टूबर १९५४

मिलती है।[1]

इस विवेचन से स्पष्ट होता है कि समुद्र के पीछे हट जाने या सूख जाने पर मरु प्रदेश उद्भूत हुआ। बीकानेर प्रदेश में आज भी कहीं कहीं समुद्र के अवशेष के रूप में शंख, सीपी, कौड़ी गोल पत्थर आदि मिलते हैं जो बीकानेर के किसी काल विशेष में समुद्राप्लावित होने की सूचना देते हैं।

इसी बीकानेर क्षेत्र में बोली जाने वाली बोली को डा० ग्रियर्सन[2] डा० सुनीति कुमार चटर्जी,[3] डा० भोलानाथ तिवाडी,[4] प० नरोत्तमदास स्वामी[5] श्री रामकृष्ण व्यास[6] प्रभृति विद्वानों ने बीकानेरी बोली नाम से अभिहित किया है।

१ २ बीकानेरी क्षेत्र

बीकानेरी बोली का क्षेत्र तत्कालीन बीकानेर राज्य का अधिकांश दक्षिणी भाग है। तत्कालीन बीकानेर राज्य राजस्थान बनने के उपरान्त तीन जिलों में विभक्त हो गया—बीकानेर गंगानगर व चूरू। इनमें से गंगानगर का अधिकांश भाग बीकानेरी भाषी नहीं है। केवल उसके दक्षिणी-पूर्वी भाग के भादरा और नोहर तहसील के दक्षिणी के भाग इस बोली की उत्तरी पूर्वी सीमा बनाते हैं। वर्तमान बीकानेरी जिले की चारों तहसील बीकानेर, कोलायत नोखा व लूणकरणसर बीकानेरी भाषी हैं। चूरू जिले की रतनगढ सरदारशहर सुजानगढ व डूंगरगढ तो पूर्ण रूप से बीकानेरी भाषी तहसीलें हैं पर राजगढ का एक तिहाई पश्चिमी भाग और चूरू का भी लगभग आधा पश्चिमी भाग बीकानेरी बोलता है। इसी जिले की तारानगर तहसील बीकानेरी क्षेत्र में आती है। बीकानेरी की पश्चिमी सीमा ग्रिय

१— तस्मात् तद् बाणपातेन त्वपः कुक्षिष्वशोषयत्।
विख्यातं त्रिषु लोकेषु मरुकान्तारमेवतत्॥
सर्ग २२। ३६–३७। युद्ध काण्ड

२— डॉ० ग्रियर्सन एल एस आई भाग–९ पृष्ठ १३०

३— डॉ० सुनीति कुमार चटर्जी राजस्थानी भाषा पृष्ठ ६–७

४— डॉ० भोलानाथ तिवाडी भाषा विज्ञान कोष, पृष्ठ ५१५

५— प० नरोत्तमदास स्वामी राजस्थानी पृष्ठ ५५

६— श्री रामकृष्ण व्यास बीकानेरी नामपद पृष्ठ ७

सन के अनुसार केवल राजस्थान तक ही सीमित नही है। पाकिस्तान के बहावलपुर जिले का दक्षिणी पूर्वी भाग भी बीकानेरी क्षेत्र के अन्तर्गत आता है, पर वस्तुस्थिति यह है कि अब बीकानेरी की सीमाएँ सिमिट कर केवल भारत की सीमाओं से लग गई है। प्रस्तुत लेखक के लिए इस तथ्य को पुष्ट प्रमाणों के आधार पर प्रमाणित करने की असम्भावना से आरम्भ मे दिए हुए मान चित्र म ग्रियसन को ही आधार बनाया गया है।

१ ३ सीमाएँ

बीकानेरी बोली की उत्तरी सीमा लहदा, राठी और पजाबी बोलियो द्वारा बनाई जाती है। इसकी उत्तरी पूर्वी सीमा पर पजाबी तथा बागडी बोलियाँ मिलती हैं। बाँगडी तथा शेखावाटी इसकी पूर्वी सीमा बनाती हैं। इसके दक्षिण पूर्व म शेखावाटी बोली जाती है। बीकानेरी की दक्षिणी सीमा पर थाली एव आदर्श मारवाडी का क्षेत्र आता है। थाली बोली ही इसकी दक्षिणी पश्चिमी सीमा बनाती है। पश्चिमी सीमा पर लहदा भाषी व्यक्ति मिलते हैं और उत्तरी पश्चिमी सीमा लहदा तथा राठी बोलिया के द्वारा बनाई जाती है।

१ ४ बीकानेरी भाषी

डॉ० ग्रियसन के अनुसार बीकानेरी बोलने वाला की जनसख्या ५ ३३, ००० है।[1] सन् १९६१ की जनगणना के अनुसार बीकानेरी भाषिया की जनसख्या भारत म अत्यल्प है। १९६१ की जनगणना के आधार पर बीकानेरी भाषिया की जनसख्या बताई गई है वह सवथा भ्रामक है क्योंकि यदि बीकानेरी का स्वतन्त्र अस्तित्व स्वीकार किया जाता है और इस आदर्श मारवाडी से भिन्न माना जाता है तो अधिकाश बीकानेर क्षेत्र की जनसख्या की बोली बीकानेरी है एव अकेले बीकानेर म लगभग २ लाख व्यक्ति निवास करते हैं जिनम एक तिहाई व्यक्ति ठेठ बीकानेरी भाषी हैं। मैंने बीकानेर नगर एव निकटवर्ती ग्रामा म बीकानेरी के भाषा वैज्ञानिक स्वरूप को दृष्टि में रखकर लोगा स प्रश्न किये और उत्तर स्वरूप जो तथ्य मेरे सामने आये उसस निश्चित रूपेण कहा जा सकता है कि उसमे बीकानेरी

१—ग्रियसन एल एस आई भाग ९, पृष्ठ १३०

भाषिया की जनसख्या १९६१ की जनगणना के अखिल भारतवष के आँकडा से सैकडा गुना अधिक है। भाषा विषयक गलत आँकडे जनगणना के अवसर पर इसलिए एकत्र हो जाते हैं कि भाषा एव बोलिया का महत्वपूर्ण काय ऐसे व्यक्तिया के द्वारा सम्पन्न होता है जो भाषा एव बोलिया के स्वरूप का विश्लेषण नही कर सकते। इसका दूसरा कारण यह है कि जनगणना के अवसर पर बीकानेरी बोलने वाला न अपनी बोली मारवाडी ही बताई है। अत वतमान बीकानेरी भाषिया की जन सख्या क्षेत्र व सीमा के आधार पर ७ १५,००० मानी जा सकती है।

१ ५ बीकानेरी की भाषा वैज्ञानिक विशेषताएँ

बीकानेरी की प्रमुख ध्वन्यात्मक एव रूपात्मक विशेषताए निम्नलिखित हैं-

१ ५ १ ध्वन्यात्मक विशेषताए

१- अन्त्य ध्वनि की दृष्टि से बीकानेरी ओकारान्त है -

बीकानेरी	हिन्दी
घोडो	घोडा
दादो	दादा

२- बीकानेरी म नासिक्य ध्वनिया स पूव आन वाली 'आ ध्वनि ओ' म परिवर्तित हो जाती है -

बीकानेरी	हिन्दी
हाण	हानि
ओम्बा	आम

३- बीकानरी म शब्दा के आदि स्वर (विशेषत अ) के दीर्घीकरण की प्रवृत्ति पायी जाती है -

बीकानेरी	हिन्दी
पाडोसी	पडोसी
खाकडी	ककडी

४- -बीकानरी मे हिन्दी के सयुक्त स्वर 'ए' एव "औ -क्रमश "इ' एवं 'आ' म परिवर्तित हो जाते हैं -

बीकानेरी	हिन्दी
किस्सो	कैसा
विस्सो	वैसा
ओरत	औरत

५– बीकानेरी म आरम्भ का 'य" प्राय 'ज' म परिवर्तित हो जाता है–

बीकानेरी	हिन्दी
जुग	युग
जम	यम

६– बीकानेरी म अ त्य 'य' का प्राय लोप हो जाता है–

बीकानेरी	हिन्दी
पुन	पुण्य
भाग	भाग्य

७– मध्यवर्ती 'ह' ध्वनि बीकानेरी म 'व' एव कभी कभी "य' म परिवर्तित हो जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
मनवार	मनुहार
लोवार	लुहार

यदि "ह" ध्वनि 'व" म परिवर्तित नही होती तो वह लुप्त होकर पूववर्ती ध्वनियों को दीघ कर देती है–

बीकानेरी	हिन्दी
जर	जहर
पाड़	पहाड़

अधिकांशत अत्य "ह' ध्वनि भी लुप्त हो जाती है–

बीकानेरी	हिन्दी
लो	लोह

८– बीकानेरी म क्ष ध्वनि का प्रयोग नहीं होता । 'क्ष' के स्थान पर 'छ' अथवा 'ख' का प्रयोग होता है–

बीकानेरी	हिन्दी	
लछमी	लक्ष्मी	क्ष > छ
राखस	राक्षस	क्ष > ख

९– 'श', 'ष', स ऊष्म व्यंजनों म केवल दन्त्य स ध्वनि ही उपलब्ध होती है–

बीकानेरी	हिन्दी
सिसा	शिशा
सुसरा	श्वसुर

१०– बीकानेरी की अपनी कतिपय विशेष ध्वनियाँ हैं जो ध्वनि ग्राम रूप म प्रतिष्ठित है—

१– न्ह	न्हावणो	(नहाना)
२– म्ह	म्हे	(हम)

११– बीकानेरी म 'ल' का उच्चारण दो प्रकार से होता है। ल' हिन्दी के समान ही है पर ल उच्चारण के आधार पर बोली म कहीं उत्क्षिप्त कहीं मूर्द्धन्य एव कहीं पार्श्विक ध्वनियों की तरह व्यवहृत होता है–

ल		ल	
काल	(वक्त)	काल	(अकाल)
गाल	(कपोल)	गाल	(गाली)
वालो	(प्यारा)	बालो	(जलाना)

१२– बीकानेरी की एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि शब्द की उदात्त। अनुदात्त ध्वनियों म अन्तर आते ही अर्थ मे अन्तर आ जाता है–

अनुदात्त		उदात्त	
कोड	(चाव)	को ढ	(कुष्ठ रोग)
कद	(लम्बाई)	क द	(कब)

१३– बीकानेरी म ऋ और रफ क्रमश रि रु और रकार म परिवर्तित हो जात हैं –

बीकानेरी	हिन्दी
रिमि	ऋषि
रत	ऋतु
करम	कर्म
धरम	धर्म

१४– अकारण अनुनासिकता की प्रवृत्ति बीकानेरी की मुख्य विशेषता है ।

१ ५ २ रूपात्मक विशेषताएँ

१– बीकानेरी म अन्य आधुनिक भारतीय आर्यभाषाओं के समान दो लिंग एव दो वचन ही उपलब्ध होते हैं।

२– बीकानेरी म कर्ता-कारक चिह्न का अभाव है साथ ही सकर्मक क्रियाओं के भूतकालिक रूपों के साथ भी कर्ता बिना किसी परसग की सहायता के प्रयुक्त होता है। यथा—

म्हैं रोटी खाई	=	मैंने रोटी खाई
छोरा दूध पियो	=	लड़का ने दूध पिया

कर्म कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'नै' परसर्ग का प्रयोग होता है ।

रोम न पढ़ाय दे	=	राम को पढ़ा दो

सम्प्रदान कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'रै', "नै परसग का प्रयोग होता है।

घोड़ा रै घास लायो हूँ	=	घोड़ा के लिए घास लाया हूँ
छोरा नै आसीस	=	लड़का के लिए आशीर्वाद

करण एव अपादान कारक म सूं परसग का प्रयोग होता है।

पढ़त जी सू बातां हुई	=	पंडित जी से बातें हुईं
डागलै सू पड़ग्यो	=	छत पर से गिर गया

सम्बन्ध कारक की अभिव्यक्ति के लिए रो, रा री परसर्ग का प्रयोग होता है—

राम रो घोड़ो	=	राम का घोड़ा
राम री घोड़ी	=	राम की घोड़ी
राम रा घोड़ा	=	राम के घोड़े

अधिकरण कारक की अभिव्यक्ति के लिए 'म' परसर्ग का व्यवहार होता है।

घर म कोयनी = घर म नहीं है

बीकानेरी म निकटवर्ती एव दूरवर्ती दोना प्रकार के निश्चय वाचक सवनामा के एक वचनीय रूप लिंग से प्रभावित होते हैं।

वो	पुल्लिग	औ	पुल्लिग
वा	स्त्रीलिग	आ	स्त्रीलिग

बीकानेरी म उत्तम एव मध्यम पुरुष के एक वचन एव बहु वचन के रूप निम्नलिखित हैं—

	एकवचन	बहुवचन
उतम पुरुष	हूँ, म्हें	म्हे म्हो
मध्यम पुरुष	तू, थू	थे, थो

इसके अतिरिक्त बीकानेरी म एक विशेष सवनाम 'आपा' भी उपलब्ध होता है। यह श्रोतृ सापेक्ष सवनाम ... है जिसमे श्रोता और वक्ता दोना समाहित हो जाते हैं। यथा —

'आपा दस वजी जीमोला'

इसका अथ होगा हम अपने मित्र के साथ (श्रोता सहित) दस बजे खाना खायगे।

बीकानेरी में पूर्णांक बोधक गणना सूचक ओकारान्त विशेषणो (दो सो आदि) के अतिरिक्त समस्त ओकारान्त विशेषणो म अपने विशेष्य के लिंग वचन एव कारक के अनुरूप परिवतन होता है। अन्य विशेषणो (आकारान्त ईकारान्त, ऊकारान्त एव व्यजनान्त) मे अपने विशेष्य के लिंग वचन एव कारक के अनुरूप परिवतन नही होता।

बीकानेरी में वर्तमान काल में तिङ्न्तीय क्रिया पद प्रयुक्त होते हैं यथा—

बीकानेरी	हिन्दी
छोरो करै है ।	लड़का करता है ।
छोरी आवै है ।	लड़की आती है ।
छोरा खावै है ।	लड़के खाते हैं ।

बीकानेरी में वर्तमान निश्चयार्थ वर्तमान कृदन्त की सहायता से बनाये जाने के स्थान पर सामान्य वर्तमान के साथ सहायक क्रिया के योग से बनाया जाता है—

हूं मारूं हूं ।	मैं मारता हूं ।
हूं जाऊं हूं ।	मैं जाता हूं ।

वर्तमान कालिक सहायक क्रिया धातु √ह बीकानेरी में अन्य स्वतन्त्र क्रिया रूपों के समान ही तिङ् प्रत्यय ग्रहण करती है यथा—

	एक वचन	बहु वचन
अन्य पुरुष	है	है
मध्यम पुरुष	है	हो
उत्तम पुरुष	हूं	हाँ

८— बीकानेरी में भूतकालिक सहायक क्रियारूप √ह धातु में कृत् प्रत्यय के योग से बनते हैं । साथ ही हिन्दी की भांति √थ सहायक क्रिया धातु ही मानी जा सकता है । किन्तु ओकारान्त वाली होने के कारण बीकानेरी में जहां आकारान्तता बहुवचन का बोध कराती है वहां हिन्दी में एक वचन का ।

छोरो हो, थो	(लड़का था)
छोरा हा, था	(लड़के थे)
छोरी ही, थी	(लड़की थी)

९— हिन्दी की √कर धातु के भूत कालिक कृदन्त रूप किया, किये, की, के स्थान पर बीकानेरी में क्रमशः कियो, करियो करिया करी रूप उपलब्ध होते हैं ।

१०- बीकानेरी म भूतकाल के निर्माण के लिए प्राय धातु म -यो प्रत्यय (स्वरान्त धातु एकवचन म य्+ओ) एव बहुवचन म -या (स्वरान्त धातु बहुवचन य्+आ) प्रत्यय जोडा जाता है। -इयो प्रत्यय व्यजनात एकवचन म एव-इया प्रत्यय व्यजनात बहुवचन म जोडा जाता है यथा-

स्वरात धातु

	एक वचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	म्हे सायो	म्हा साया
मध्यम पुरुष	तू आयो	थ आया
अन्य पुरुष	बे सायो	बा सायो

व्यजनात धातु

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	म्हे काढ़ियो	म्हा काढ़िया
मध्यम पुरुष	थूं पढियो	थे पढिया
अन्य पुरुष	बे मारियो	बो मारिया

११- बीकानेरी म भूतकालिक कृदत की रचना के लिए - ड़' स्वार्थक प्रत्यय का बहुलता से प्रयोग होता है यथा-

एक वचन	बहुवचन
सायोडो केलो	सायाड़ा केला
तलियोडो पापड़	तलियोड़ा पापड़

सूचना-

स्वाथक प्रत्यय -ओड भी माना गया है क्योंकि -ओ पर लिंग वचन-कारक का प्रभाव नहीं पडता।

१२- बीकानेरी म भविष्यत् काल का निर्माण दो प्रकार स होता है-

(अ) सामान्य वर्तमान मे 'लो' या "ला' के योग से -

	एक वचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारे लो, ला	मारे ला

मध्यम पुरुष	मारै लो	मारो ला
उत्तम पुरुष	मारू लो, ला	माराँ ला
(आ)	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	मारसी	मारसी
मध्यम पुरुष	मारसी	मारसो
उत्तम पुरुष	मारीस	मारसा

निश्चयार्थ भाव का बोध कराने के लिए बीकानेरी म –ईज प्रत्यय का प्रयोग क्रिया रूप क भविष्यत् काल मे होता है –

वो आसीज हू जाईसीज आदि

१३- बीकानेरी म पूर्व कालिक क्रिया के निर्माण के लिए "र" क्रिया के अन्त म लगाया जाता है। स्वरान्त धातु से पूर्व 'य' श्रुति का आगम होता है–

स्वरान्त		व्यजनान्त	
खायर	== खाकर	पढर	== पढकर
आयर	== आकर	जीमर	== भोजन करके
जायर	== जाकर	रमर	== खेलकर

१ ६ प्रत्यय का ऐतिहासिक स्वरूप

मरे लघु-शोध-प्रबन्ध की सीमा बीकानेरी के प्रत्ययो तक ही सीमित है तथा उनका वर्णनात्मक अध्ययन प्रस्तुत करना मेरा अभिप्रेय है। अत प्रत्यय शब्द के सामान्य आशय उसके प्रयोग एव ऐतिहासिक विकास की दृष्टि स विचार करना अनिवार्य है क्योकि परम्परागत मान्यताओं एव उसके अर्थ विस्तार की सीमाओ मे आज अन्तर उपस्थित हो गया है।

सर्व प्रथम 'प्रत्यय" शब्द का प्रयोग ऋग्वेद[1] म मिलता है तथा इनका अर्थ म केवल नूतनता का आशय व्यक्त होता है। ऐसा प्रतीत होता है कि पाणिनि से पूर्व किसी व्याकरण-ग्रन्थ की अनुपलब्धि के कारण वेदो में इस प्रकार के पारिभाषिक शब्द का स्वरूप देखन को नही मिलता क्योकि वह किसी प्रकार के शास्त्रग्रन्थ नही है। सर्व प्रथम पारिभाषिक एव रूढ

१—ऋग्वेद — १० । ७

अथ म इसका प्रयोग पाणिनि की अष्टाध्यायी म दखन का मिलता है। उन्होने प्रत्यय के सम्बन्ध म कहा है कि जिन आवद्ध अ गा का वणन अध्याय ३ से ५ तक किया गया है वे प्रत्यय के नाम से अभिहित हुए है जिनका योग प्रकृति मे पश्चात्वर्ती है तथा उसका आदि वण उदात्त होता है।[1]

पाणिनि के व्याख्याता श्री वसु न व्याख्या करत हुए बताया है कि 'परसर्गीय व्युत्पादक प्रत्यय होते हैं जो प्रकृति, धातु क पश्चात् नवीन रूप-निष्पादन हेतु प्रयुक्त होता है तथा उसके आदि अक्षर पर पूण बलाघात होता है।"[2] इसी प्रकार श्री वसु ने लघु सिद्धान्त कौमुदी म भी इसी मान्यता को दोहराया है।[3]

सस्कृत के कोषकारो ने भी इसे परवर्ती व्युत्पादक अ श के रूप म स्वीकार किया है। शब्द कल्पद्रुम' म प्रत्यय को प्रकृति के उत्तर म आने वाला व्युत्पादक अ श माना है।[4] 'वाचस्पति कोष म भी इसी प्रकार के पारिभाषिक अर्थ को मान्यता दी गई है।[5] इसके अतिरिक्त सस्कृत अ ग्रेजी कोषो मे भी यही अथ मान्य हुआ है।[6] श्री एम मोनियर विलियम द्वारा सम्पादित 'सस्कृत इगलिश डिक्शनरी' म पूव प्रत्यय तथा पश्च प्रत्यय स्वीकार किये गये हैं।[7] सक्षिप्तसार व्याकरण' म भी सुप तिङ० कृत् तथा तद्धित के आवद्ध अ श प्रत्यय के रूप मे स्वीकार हुए हैं।[8] सस्कृत क अन्तगत आवध अ श को ही प्रत्यय की सज्ञा दी गई है।

हिन्दी म भी सस्कृत की परम्परा को अपनाया गया है। हिन्दी के

१—पाणिनि अष्टाध्यायी, १।२२
२—श्रीचन्द्र वसु दी अष्टाध्यायी आफ पाणिनि, पष्ठ ३४७
३—श्रीचन्द्र वसु दी लघु सिद्धान्त कौमुदी पष्ठ ६२
४— वोपदेव प्रत्युत्तर जायमाना (शब्द कल्पद्रुम)
५— वाचस्पति वाचस्पति कोष, पृष्ठ ३७१
६— एम मोनियर विलियम सस्कृत इगलिश डिक्शनरी, पाट २, पष्ठ १०८६
७— वही, पष्ठ ६७३
८— सक्षिप्त व्याकरण- (प्रत्यय इति सुप्तिङ्कृतद्धिता प्रत्यया) पष्ठ ४२६

प्रमुख वयाकरण श्री कामता प्रसाद गुरु ने उपसग एव प्रत्यय सम्बन्धी मान्यता पर विचार व्यक्त करत हुए उपसर्ग को पूव व्युत्पादक प्रत्यय के रूप म तथा प्रत्यय को पर व्युत्पादक आबद्ध रूपांश के रूप म स्वीकार किया है।[1] उन्होने व्याकरणिक सम्बन्ध बोध करान वाले आबद्ध रूपाशा को भी प्रत्यय की सीमा म स्वीकार कर उन्हें चरम प्रत्यय के नाम से अभिहित किया है।[2] श्री किशोरीदास वाजपयी ने भी हिन्दी शब्दानुशासन' म इसी दृष्टिकोण का प्रतिपादन किया है।[3] श्री धीरेन्द्र वर्मा ने भी अन्य विद्वाना के मतानुसार ही प्रत्यय सम्बन्धी मान्यता का प्रस्तुत किया है। सस्कृत सना प्राय तीन अशा से मिलकर बनती है धातु प्रत्यय तथा कारक चिन्ह। प्रत्यय से मिलकर मूल शब्द बनता है और उसम आवश्यकतानुसार कारक चिह्न लग जाते हैं।[4] श्री उदयनारायण तिवारी न भी सस्कृत तथा हिन्दी की पूव परम्पराओ से प्ररित होकर उपसग एव प्रत्यय सम्बन्धी मान्यताए व्यक्त की है।[5] डा० लक्ष्मी सागर वार्ष्णेय के मतानुसार प्रत्यय वह शब्द है जिसका अपना कोई स्वतन्त्र कोशात्मक अथ नही होता, किन्तु दूसरे शब्दा के साथ लगकर सार्थक होता है। आधुनिक भाषा विज्ञानी प्रत्यया को आबद्धपद ग्राम कहते हैं।"[6] डा० भोलानाथ तिवारी एव टसीटारी आदि विद्वाना ने भी इसी मत का समथन किया है।[7]

समग्र रूप से दृष्टिपात करन पर प्रतीत होता है कि सभी विद्वानो ने विभक्ति, सग, उपसग सभी का शब्द साधक प्रत्यय के अथ म प्रत्यय के रूप म स्वीकार किया है। परिभाषाओ को यदि कसौटी पर कसे तो श्री उग्रनिजी की परिभाषा श्लाघनीय है। उनक अनुसार प्रत्यय भाषा के वे आबद्ध अश है जिनम स्वतन्त्र रूप से अर्थबोध की क्षमता नही होती वरन् स्वतन्त्र रूपांश के साथ

१— श्री कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण पृष्ठ ३३०
२— वही पृष्ठ ३३१
३— श्री किशोरीदास वाजपयी शब्दानुशासन पृष्ठ १३२
४— डॉ० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृष्ठ २२२
५— डॉ० उदयनारायण तिवारी हिन्दी भाषा का उद्गम और विकास
६— डॉ० लक्ष्मीसागर वार्ष्णेय हिन्दी भाषा का इतिहास
७— डॉ० भोलानाथ तिवारी हिन्दी भाषा पृष्ठ ११९–२६

युक्त होकर ही वे अर्थवत्ता को प्राप्त करते हैं ।[1]"

डॉ० चन्द्रभान रावत ने भी अप्रत्यक्ष रूप में प्रत्ययों के शब्द साधक पूर्व एवं पर रूपों को स्वीकार किया है । इन्होंने अपने शोध प्रबन्ध के "पद विचार" अध्याय में लिंग, वचन एवं कारक बोधक आबद्ध अंशों को भी प्रत्ययों के रूप में स्वीकार किया है[2] डॉ० रमेशचन्द्र जैन भी बद्ध रूपांशों के विश्लेषण में श्री उप्रतिजी की मान्यता को स्वीकार करते हुए दिखाई देते हैं— "बद्ध रूपांशों का शब्द नहीं माना जा सकता क्योंकि ये रूपांश किसी शब्द के साथ जुड़ कर ही किसी वाक्य रचना में व्यवहृत होते हैं किसी भाषा के निर्माण में इन शब्दांशों का महत्व यौगिक शब्द रचना तक ही सीमित है— शब्दांशों का योग किसी शब्द में होता है ।[3] डा० कैलाशचन्द्र अग्रवाल ने भी डा० उप्रतिजी की मान्यता को स्वीकार किया है। इनके अनुसार प्रत्ययों के मुख्यत दो भेद हो सकते हैं— (१) व्युत्पादक (२) व्याकरणिक । व्याकरणिक प्रत्यय सम्बन्धी विवेचन पद विचार (संज्ञा, सर्वनाम विशेषण क्रिया आदि) में हो चुका है । व्युत्पादक प्रत्यय वे हैं जो किसी धातु अथवा प्रकृति के पूर्व भाग अथवा पर भाग में लगकर यौगिक शब्द रचना करते हैं ।[4]

विदेशी भाषा शास्त्रियों ने भी पदिमग्राम वर्गीकरण सन्दर्भ में प्रत्यय का स्वरूप निर्धारण किया है जो इस प्रकार है—

१— जो खंडीय रूपांश स्वतन्त्र नहीं है वे आबद्ध अंश हैं ।[5]

२— भाषीय स्वरूप, जिसका उच्चारण (अर्थ द्योतनता की दृष्टि से) स्वतन्त्र रूप में सम्भव नहीं होता, आबद्ध अंश कहा जाता है ।[6]

३— प्रयोग की दृष्टि से मूलांशों के साथ आबद्ध अंशों का प्रयोग

१— डा० मुरारीलाल उप्रति हिन्दी में प्रत्यय विचार पृष्ठ २०
२— डा० चन्द्रभान रावत मथुरा जिले की बोली (पद विचार अध्याय)
३— डा० रमेशचन्द्र जैन हिन्दी समास रचना का अध्ययन, पृष्ठ ५–६
४— डॉ० कैलाशचन्द्र अग्रवाल शेखावाटी बोली का वर्णनात्मक अध्ययन
५— हॉकेट ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स, पृष्ठ १६८
६— ब्लूमफील्ड लैंग्वेज, पृष्ठ १६०

होता है उन्हे प्रत्यय के नाम से अभिहित किया जाता है ।[1]

४— आवद्ध अंश का प्रयोग किसी पदिमग्राम के साथ अनिवार्य है, प्रत्यय आवद्ध अंश है ।[2]

५— पदिमग्राम का विभाजन मूल एवं प्रत्यय के रूप में किया जाता है ।[3]

उपर्युक्त विदेशी भाषाशास्त्रियों के विचारों पर विहगम दृष्टिपात करने के उपरान्त निम्नांकित निष्कर्ष प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

अ— आवद्ध अंश एक पदिमग्राम है ।

आ— जो स्वतन्त्र रूपांश या आवद्ध रूपांश के साथ प्रयुक्त होता है ।

इ— जिसका स्वतन्त्र उच्चारण एवं प्रयोग भाषा में सम्भव नहीं है ।

ई— जिसके प्रयोग की क्रमिक व्याख्या होती है ।

उ— जिसे समान्य रूप से "एफिक्सेस" के नाम से अभिहित किया गया है ।

सभी मतो पर समग्र रूप से विचार करते हुए हम कह सकते हैं कि भाषा के वे साधक एवं गौण अंश जिनका स्वतन्त्र प्रयोग सम्भव नहीं है आवद्ध अंश के नाम से अभिहित किये जा सकते हैं तथा इसका समानायक प्रत्यय अथवा पदिमग्राम को माना जा सकता है । इस प्रकार प्रत्यय शब्द मे नवीन अर्थ का अभिनिवेश होगा और वही प्रस्तुत लघु-शोध-प्रबंध की सीमा के निर्धारण मे आधार सिद्ध होगा ।

उपर्युक्त निष्कर्ष के आधार पर प्रत्यय की सीमा के अन्तर्गत भारतीय मनीषियों द्वारा निर्धारित सभी उपसर्ग, प्रत्यय (अपने सकुचित रूप में)

१— ब्लिंग एच० हरिल स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स, पृष्ठ १६१

२— आर० एच० रौबिन्स जनरल लिंग्विस्टिक्स इन इस्ट्रक्चर

३— एच० ए० ग्लेसन जे० आर० लिंग्विस्टिक्स सर्वे, पृष्ठ २०६

विभक्ति अथवा इससे पूर्व कोई भी शब्द आ सकता है। मैंने अध्ययन सुविधा की दृष्टि से इस प्रत्यय शब्द को तीन भागों में विभाजित किया है—

(१) व्युत्पादक प्रत्यय
(२) विभक्ति प्रत्यय
(३) परत्र प्रत्यय

१— व्युत्पादक प्रत्यय

भाषा के अन्तर्गत शब्द भण्डार की दृष्टि से व्युत्पत्ति का विशेष महत्त्व है। व्युत्पत्ति के क्षेत्र में हम शब्द के संरचना विधान, स्वतन्त्र रूपांश, आबद्ध रूपांश एवं उसके स्रोत पर विचार करते हैं। इसे क्रमशः वर्णनात्मक एवं ऐतिहासिक विश्लेषण के नाम से अभिहित किया जा सकता है।

व्युत्पत्ति के फल स्वरूप शब्द का मूल एवं व्युत्पन्न रूप हमारे समक्ष उपस्थित होता है। वैयाकरणों ने मूल रूप को रूढ तथा व्युत्पन्न रूप को यौगिक की संज्ञा दी है। मूल से उनका आशय है जो भाषा के सत्त्व बोधक एवं उसके विधान वाचक अंश हैं जिन्हें नाम या आख्यात की संज्ञा से अभिहित किया जा सकता है।[1] इन्हें संस्कृत वैयाकरणों की शब्दावली में प्रातिपदिक एवं धातु के नाम से अभिहित किया गया है। संस्कृत व्याकरण के अन्तर्गत प्रातिपदिक या धातु के साथ इतर उपसर्ग प्रत्यय आदि के योग से नवीन शब्द की संरचना का बोध कराया गया है। प्रातिपदिक एवं धातु एक प्रकार से स्वतन्त्र रूपांश के नाम से आधुनिक भाषाशास्त्रीय शब्दावली के अन्तर्गत अभिहित किया जा सकता है।

यौगिक शब्द से आशय है मूल— उपसर्ग या प्रत्यय के योग द्वारा शब्द की अभिनव सृष्टि तथा फल स्वरूप उसमें नवीन अर्थद्योतन की क्षमता। उपसर्ग एवं प्रत्यय को आधुनिक भाषा शास्त्रीय शब्दावली में आबद्ध रूपांश के नाम से अभिहित किया जा सकता है।

स्रोत की दृष्टि से विचार करने के लिए विद्वान स्वतन्त्र रूपांश के मूल

१— महर्षि यास्क निरुक्त प्रथम अध्याय प्रथम पाद सूत्र ४

रुप तक पहुँचने का प्रयास करते हैं, जिससे पारिभाषिक शब्दावली मे तत्सम नाम से अभिहित किया जाता है एव इसके विकसित रुप को तद्‌भव की सज्ञा दी जाती है। इसके उपरात उसके मूल भाषापरिवार का ज्ञान आवश्यक होता है। इसके अभाव म उनके अय स्रोता पर विचार करते समय यह भी देखा जाना है कि अमुक स्वतन्त्र रूपाश की सृष्टि का कौनसा इतर आधार सम्भव है। इसका प्रयोग सज्ञा, सवनाम एव विशेषण के साथ होने पर नवीन स्वतत्र रुप सज्ञा को जन्म देता है। उन्हें सम्स्कृत मे तद्धित व्युत्पादक प्रत्ययों के नाम से अभिहित किया गया है एव जो प्रत्यय धातु के साथ प्रयुक्त होकर स्वतत्र रुपाँश की अभिनव सृष्टि करते हैं उन्हे कृत्‌ प्रत्यय के नाम से अभिहित किया गया है। इन प्रत्यया द्वारा निष्पन्न रुप क्रमश तद्धितात एव कृदन्त के नाम से अभिहित किये जात हैं।

वर्णनात्मक अध्ययन के अन्तगत भाषा के सवप्रचलित स्वरूप का ही ग्रहण किया जाता है। प्रत्ययों के वर्णनात्मक अध्ययन म प्रत्यय विधान की दृष्टि मे प्रचलित शब्दों के सरचनात्मक स्वरुप का विवेचन प्रस्तुत किया जाता है अत मैंने बीकानेरी बोली के उन्ही प्रचलित स्वतत्र एव आबद्ध रूपाँशों का अध्ययन प्रस्तुत किया है जिनके साधक खण्ड सम्भव हो एव उनका प्रयोग प्रचलित हो। यदि कोई भी पदिमग्राम विदेशी भाषा स आया हो अथवा उसका तत्सम या तद्‌भव रुप हो तो उसका विवेचन यहाँ प्रस्तुत नहीं किया गया है क्योंकि वे बीकानेरी के सघटनात्मक नियम एव विधाना से अभिनियन्त्रित नहीं किये जा सकते। उपयुक्त विश्लेषण के आधार पर लघु शोध प्रबध में बीकानेरी बोली के यौगिक शब्दों की व्युत्पत्ति को दृष्टि में रखकर विश्लेषण किया गया है।

२– विभक्ति–प्रत्यय

व्याकरण के अन्तगत भाषा के अनुरूप एव इस आधार पर उसकी व्यवस्था का सबध बोध कराया जाता है।[1] इसके अन्तगत स्वतत्र रूपाँश का वाक्य मे स्थानक्रम तथा उसका इतर स्वतत्र रूपाँश के साथ सबध बोध का विश्लेषण प्रस्तुत किया जाता है। स्थानक्रम का अध्ययन वाक्य विज्ञान के अन्त

१– ब्लूमफील्ड लग्वेज

गत सम्भव होता है जो मेरे प्रबंध की सीमा के बाहर है। इस प्रबंध के अध्ययन क्षेत्र में वाक्य के अंतर्गत स्वतंत्र रूपांशों के पारस्परिक संबंध बोधक अंशों का वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करना अभीप्सित है। वैयाकरणों ने इस प्रकार के संबंध-सूचकों का सामान्य विश्लेषण विभिन्न वर्गों में विभाजित करके किया है। जो इस प्रकार है—

अ— नामपरक

(क) लिंग सूचक
(ख) वचन सूचक
(ग) कारक संबंध सूचक

आ— आख्यातपरक

(क) काल
(ख) अर्थ
(ग) वाच्य
(घ) लिंग, वचन एवं पुरुष

इस प्रकार के व्याकरणिक संबंध सूचकों का नामकरण भी भिन्न भिन्न प्रकार से किया गया है। संस्कृत वैयाकरणों ने नाम शब्दों के संबंध सूचकों को 'सुप' प्रत्यय तथा आख्यात संबंध सूचकों को 'तिङ' प्रत्यय के नाम से अभिहित किया है। सुप प्रत्यय वे हैं जिनका योग संज्ञा, सर्वनाम एवं विशेषण रूपांशों के साथ लिंग, वचन एवं कारक बोधक कोटियों की अभिव्यंजना के लिए होता है। तिङ प्रत्यय वे हैं जो क्रिया बोधक स्वतंत्र रूपांशों के साथ प्रयुक्त होकर तत्संबंधी विभिन्न कोटियों के अर्थ बोध की क्षमता रखते हैं जिनके अन्तर्गत क्रिया रूपांशों के वाच्य, काल, प्रयोग व रीति एवं लिंग, वचन, पुरुष कोटियों के अर्थ व्यंजन की क्षमता होती है। इस प्रकार इन प्रत्ययों से सिद्ध स्वतंत्र रूपांशों को क्रमशः सुबन्त एवं तिङन्त पद के नाम से अभिहित किया गया है। हिन्दी में इनके लिए कोई सर्वसम्मत नाम नहीं मिलता। प्रायः संस्कृत व्याकरण परम्परा का ही हिन्दी में अनुसरण

किया गया है। इस प्रकार संबंध सूचकों को मैंने एक ही समान संज्ञा विभक्ति प्रत्यय प्रदान की है। विभक्ति प्रत्यय वे हैं जो धातु अथवा प्रातिपदिक के पश्चात् लग कर उसे वाक्य में व्यवहार योग्य पद की संज्ञा प्रदान करते हैं। सभी प्रकार के व्याकरणिक कोटि के संबंध सूचक इस सीमा में आ जाते हैं। इस प्रकार नाम एवं आख्यात रूपों के व्याकरणिक संबंध बोधक अंश सभी इस " विभक्ति " की सीमा में स्वीकार किये जा सकते हैं।

३— पश्च प्रत्यय

प्रत्येक भाषा के अंतर्गत कुछ इस प्रकार के रूपांश हैं, जिन्हें वैयाकरणों ने स्वतंत्र रूपांश में स्वीकार किया है, पर वे इस सीमा में नहीं आते क्योंकि इनमें प्रत्ययों के समान स्वतंत्र अर्थ बोधक क्षमता नहीं होती। वे किसी अन्य स्वतंत्र रूपांश के साथ प्रयुक्त होकर ही निहित अर्थ के द्योतक होते हैं। अतः इस प्रकार के रूपांशों को इतर स्वतंत्र रूपांशों के समकक्ष स्थान दिया जाना अनुचित है। हिन्दी के व्याकरण में इन्हें तो, भर, भी ही, आदि क्रिया विशेषण के अन्तर्गत अव्यय कहकर चर्चित किया गया है परन्तु ये ऐसे अंश हैं जिन्हें निश्चय पूर्वक अव्यय नहीं कहा जा सकता क्योंकि उनका व्यवहार तभी सार्थक होता है जब ये वाक्य के किसी पद के पश्चात् आते हैं।[1] मेरे विचार से इस प्रकार के रूपांशों का पृथक् वर्ग में स्वीकार किया जाना चाहिए क्योंकि एक ओर तो उनमें व्याकरणिक कोटि के संबंध बोधक अंशों के समान स्वतंत्र रूप से अर्थ बोधक क्षमता नहीं होती तथा न उनका प्रयोग वाक्य में अनिवार्य ही होता है। ये स्वतंत्र रूपांश के निहित अर्थ में केवल बल की वृद्धि ही करते हैं न कि अभिन्न अर्थ की द्योतनता। यदि इन अंशों को वाक्य से निकाल दिया जाय तो वाक्य के अर्थ में किसी प्रकार का अभाव नहीं होता, अतः मैंने इस प्रकार के स्वतंत्र रूपांशों का अध्ययन पृथक वर्ग में किया है। इन्हें पश्च की संज्ञा दी जा सकती है क्योंकि इनका प्राय प्रयोग प्रत्ययों के उपरांत होता है।

१— डॉ० मुरारीलाल उप्रैति हिन्दी में प्रत्यय विचार, पृष्ठ २६

अध्याय/२

नाम–प्रत्यय

प्रस्तुत अध्याय का प्रतिपाद्य नाम प्रत्यय है। नाम प्रत्यय का अभिप्राय ऐसे व्युत्पादक प्रत्ययो से हैं जो सना विशेषण एव क्रिया विशेषण के पूव मध्य एव अत्य म सलग्न होकर अभिनव नाम पदो की रचना करते हैं। इस अध्याय म केवल बीकानेरी के ही नाम व्युत्पादक प्रत्ययो का वणनात्मक विश्लेपण प्रस्तुत किया गया है। तत्सम प्रत्ययो को जिनका प्रयोग बोली म होता है यहाँ प्रस्तुत नही किया गया है क्योकि उनका विवेचन सस्कृत के वणनात्मक अध्ययन म ही सम्भव है यही स्थिति विदेशी स्वतत्र रूपाग्रा की है।

बीकानेरी नाम प्रत्यया को योग की दष्टि से ३ वर्गों मे विभक्त किया जा सकता है–

१– पूव प्रत्यय
२– मध्य प्रत्यय
३– अत्य प्रत्यय

१- पूव-प्रत्यय

जो प्रत्यय प्रकृति के आदि भाग म सलग्न होकर प्रकृत्यथ म अभिनवता लाते है, पूव प्रत्यय की सना से अभिहित किय जाते हैं।

२- मध्य-प्रत्यय

जिन प्रत्यया के मध्य याग स अथ अभिनवता का आगम होता है, उन्हें मध्य प्रत्यय कहा जाता है। मध्य प्रत्यय के अन्तगत यह उल्लेखनीय है कि मध्य स्वर विकार ही अर्थ अभिनवता का कारण होता है, यथा–

उतर>उतार

३- अन्त्य-प्रत्यय

जो प्रत्यय प्रकृति एव रूढ़ शब्दा (सना, सवनाम, विशषण एव क्रिया विशेषण) के अन्त म सलग्न हाकर अथ अभिनवता लाते हैं उन्हें अन्त्य प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किया जाता है।

२ १ पूर्व-प्रत्यय

बीकानेर मे पूव प्रत्ययो का याग सज्ञा, विशेषण, क्रिया विशेषण, प्रातिपदिको एव धातुआ के पूव उपलब्ध होता है। सवनाम पदा के पूव पूर्व प्रत्यया का याग देखन को नही मिलता। बीकानेरी मे निम्नांकित पूव-प्रत्यय उपलब्ध होते हैं–

/अ/, /अण/, /अल/, /औ/ /क/, /कु/, /चौ/, /तर/ /तुओ/ /दु/, /न/, /पड/, /पर/, /फो-/, /वद/, /बि/, /बे/, /ला/, /स/, /सर/, /सु/ /हम/

व्युत्पादकता की दृष्टि से उपयुक्त सभी पूव प्रत्ययो को तीन वर्गों म विभक्त किया जा सकता है –

१– समान कोटि व्युत्पादक पूव प्रत्यय

२– असमान कोटि व्युत्पादक पूव प्रत्यय

३– समान असमान कोटि व्युत्पादक पूव प्रत्यय

१ समान कोटि व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय

एस व्युत्पादक प्रत्यय जिनके योग से मूलांश कोटि के ही रूप निष्पन्न

होते हैं अर्थात् जो प्रत्यय संज्ञा, विशेषण अथवा धातु के पूर्व में संलग्न होकर पुनः संज्ञा, विशेषण, धातु ही व्युत्पन्न करते हैं समान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय की संज्ञा से अभिहित किये गये हैं। उदाहरणार्थ /पड़दादी/ में /पड़-/ पूर्व प्रत्यय है जो /दादी/ संज्ञा के पूर्व संलग्न होकर संज्ञा ही व्युत्पन्न करता है।

२ असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय

ऐसे व्युत्पादक प्रत्यय जिनके योग से मूलांश कोटि से इतर रूप निष्पन्न होते है, असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय की संज्ञा से अभिहित किये गये हैं। उदाहरणार्थ / दरअसल / में /दर / पूर्व प्रत्यय /असल/ विशेषण के पूर्व संलग्न होकर क्रिया विशेषण व्युत्पन्न करता है।

३- समान-असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व-प्रत्यय

ऐसे व्युत्पादक प्रत्यय जिनके योग से मूलांश अथवा इतर कोटि दोनों प्रकार के रूप निष्पन्न होते है समान असमान कोटि व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय की संज्ञा से अभिहित किये गये है। उदाहरणार्थ /अ / पूर्व प्रत्यय को प्रस्तुत कर सकते है /अकाज/ में /अ / पूर्व प्रत्यय /काज/ संज्ञा से पूर्व लगकर /अकाज/ संज्ञा व्युत्पन्न करता है परन्तु यही पूर्व प्रत्यय /अचेत/ में /चेत/ संज्ञा में संलग्न होकर /अचेत/ विशेषण व्युत्पन्न करता है। ऊपर समान एवं असमान कोटि में गिनाये गये पूर्व प्रत्ययों के अतिरिक्त शेष सभी पूर्व प्रत्यय इस वर्ग के अन्तर्गत आते है।

बीकानेरी में कुछ पूर्व प्रत्यय इस प्रकार के हैं जिनका अन्त्य प्रत्यय प्रतिबंधित है, यथा—

नि - ओ
निमलो
सू ओ
सूगलो
अण ओ
[illegible]

बीकानेरी म कहा कहीं पूर्व प्रत्यय के प्रभाव के परिणाम स्वरूप मूलांश का आदि स्वर लुप्त हो जाता है एव अन्त्य प्रत्यय प्रतिबंधित हो जाता है

ब + ईजत + ई

बजती

बीकानेरी बोली म पूर्व प्रत्ययों का यौगिक विधान सश्लिष्ट कोटि का है एव सख्या की दृष्टि स एक पूर्व प्रत्यय का योग ही उपलब्ध होता है दो या दो से अधिक पूर्व प्रत्ययो का योग देखने को नही मिलता।

बीकानेरी म उपलब्ध पूर्व प्रत्ययो का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

पूर्व प्रत्यय	मूलांश	व्युत्पन्न संज्ञा रूप	अर्थ
अ	काल	अकाल	हीनता
अ	न्याव	अन्याव	,,
अण	बण	अणबण	अभाव
अल	मस्ती	अलमस्ती	भाव
औ-	गुण~गण	औगण	हीनता
क	पूत	कपूत	,,
कु	सुगन	कुसुगन	,,
कु	ठोड	कुठाड	,,
चौ	वार/ओ	चौवारा	संख्यायक
	भाट/आ	चौभाटा	,,
तर	मूल	तरमूल	अंग विशेषसूचक
तु/ओ	जड/आ	तोजडा	हीनता
दु	भाग~हाग~वाग	दुवाग	,,
न	पूत/ई	नपूती	अभाव
पड	नानो	पडनानो	पूर्व पीढ़ी
पर	देस/ई	परदमी	पराया
पो	सीडो	पोसीडो	स्थूलता
ब~-	नाम	बन्नोम	बुरे

पूव प्रत्यय	मूलाग	व्युत्पन्न सज्ञा रूप	अथ
बे -	ईजत/ई	बेजती	(निषेध सूचक)
बै -	राग	वरागी	(अभाव सूचक)
ला -	परवाई	लापरवाई	(निषेध सूचक)
स -	पूत	सपूत	(श्रेष्ठता सूचक)
सर -	पच	सरपच	(मुख्यता सूचक)
सु -	नाम	सुनाम	(श्रेष्ठता सूचक)
हम -	दरदी	हमदरदी	(सहानुभूति „)

२ २ मध्य-प्रत्यय

बीकानेरी बोली मे मध्य प्रत्यय योग भी उपलब्ध होता है। मध्य प्रत्यय योग के अतगत स्वर विकार ही अथ अभिनवता का कारण होता है। इसका वणनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

शब्द	मध्य प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
वड	अ>आ	बाड
उतर	अ>आ	उतार
झूल	उ>आ	झाल
डगो	अ>आ	डाडो

२ ३ अन्त्य-प्रत्यय

बीकानेरी म कुछ अन्त्य प्रत्यय धातु म सलग्न होकर सज्ञा विशेषण आदि विविध पदो की रचना करते हैं एव कतिपय प्रत्यय सज्ञा सवनाम विशेषण आदि म सलग्न होकर पुन विविध प्रकार के सज्ञा सवनाम विशेषण पदो की रचना करते हैं। इस आधार पर हम बीकानेरी अन्त्य प्रत्ययो को दो वर्गों म विभाजित कर सकते हैं–

क– प्रथम पद प्रत्यय

ख– द्वितीय पद प्रत्यय

२ ३ १ – प्रथम पर प्रत्यय [र

जो अन्त्य प्रत्यय धातु म सलग्न होकर सज्ञा, विशेषण आदि प
की रचना करते हैं वे प्रथम पर प्रत्यय की सना से अभिहित किये जाते
हैं।[1] बीकानेरी म उपलब्ध सजीव प्रथम पर प्रत्यय अधोलिखित हैं जो नाम
पदो की रचना करते हैं—

/—०/ /—अक/ /—अक/ओ/ /—अक/आई/, /—अत/, /—
अन/, /—अण/ /–अन्त/ /—अद/, /—आ/ई, /—आव/ओ/, /—आप/,
/—आप/आ/, /—आर/ई/, /—आर/ओ/, /—आव/, /—आवट/, /—आव/
अण/ओ/ /—इय/आ/, /— इस/, /—एज/ /—एर/आ/ / आड/ई/ /—
ोट/ई/ /—आण/ /—ओण/जो/ /—ओस/ /—क/आ/ /—क/ई/ /—
ट/आ/, /– ट/ जो /—त/ई/ /—त/इय/आ/, /—ण/ई/ /—ण/ओ/, /—व/
ई/ /—आव/अण/ई/, /—वाण/ /—वार/ओ/ /—हट/,

उपर्युक्त प्रथम पर प्रत्ययो का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार
प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सना रूप
/—०/	नाच	/—०/	नाच भा० वा० सज्ञा
	तप	/—०/	तप ,,
	भोग	/—०/	भोग भा० वा० सना
	फेर	,,	फेर ,, ,,
	चाट	,,	चाट–पदार्थ वा० सना

१— इस अध्याय म केवल नाम व्युत्पादक प्रथम पर प्रत्ययो का ही विवेचन किया
गया है —

/—अक/	बैठ	/—अक/	बैठक अधिकरण वा स
	रम	"	रमक भा० वा० स०
/—अक/ओ/	झप	/—अक/ओ/	झपको मत वा० स०
/—अक/जाई/	फट	/अक/जाई/	फटकाई "
/—अत/	बल	—अत	बलत भा० वा० स०
	खप	,	खपत
	रग	"	रगत "
/—अन/	जल	—अन	जलन "
/—अण/	बेल	—अण	बलण वस्तु वाचक सज्ञा
	घडक	—अण	घडकण भा० वा स०
	चल	—अण	चलण
/—अत/	भड	—अत	भडत "
/—अद/	बड	—अद	बडद ,
/—आ/ई/	बो व	आई	बोवाई ,
	कर	आ/ई	कराई ,
	चर	आ/ई	चराई ,
	जड	आ/ई	जडाई "
/—आव/आ/	चढ	आव/ओ	चढावा मत वा० स०
	कढ	आव/ओ	कढ़ावो पदार्थ वा० सं०
	बुल		बुलावा "
/—आप/	मिल	—आप	मिलाप भा० वा० स०
/—आप/ओ/	पूज	—आप/ओ	पूजापो ,
/—आर/ई/	पूज ~ पुज	—आर/ई	पुजारी मत वाचक सज्ञा
	चित्र		चित्रकारी करण वा० स०
/—आर/आ/	निपट	आर/आ	निपटारो भा० वा० स०
/—आव/	घूम ~ घुम	—आव	घुमाव
	झुग	,	झुगाव "
—आव/आ	दस	/—आव/आ/	देसावो ,

/—आवट/	थक	—आवट	थकावट भा० वा० स०
	बण	,	बणावट "
/— आव/अण/ओ/	रस	—आव/अण/ओ	रसावणो वत वाचक स
/—इय/आ/	घट	—इय/आ	घटिया "
	लख	,	लखिया "
/—इस/	माल	—इस	मालिस भा० वा० स०
/—एज/	बध	—एज	बधेज "
/—एर/ओ/	बस	—एर/ओ	बसेरा ,
/—ओड/	हल	—ओड	हलाड ,
/—ओट/ई	कस	—ओट/ई	कसोटी करण वा० स०
/—आड/ई/	राख	—ओड/ई	राखाडी वत ,
/—आण	मल	—आण	मलाण ,
/— आण/ओ	बछ	—ओण/ओ	बछोणो वस्तु वाचक स
/—ओस/	पाड	—आस	पाडोस भाव वा० स०
/—क/आ	छोल ∽ छल	—क/आ	छलका कम वा० स०
/—क/ई	झप	—क/ई	झपकी कम वा० स०
/—ट/आ/	सरा	—ट/आ	सराटा भा० वा० स०
/—ट/ओ/	झपट	—ट/ओ	झपटो भा० वा० स०
/—त/ई	चाल	—त/ई	चालती भा० वा० स०
	कर		करती ,
	बल		बलती "
/—त/इय/आ/	भर	—त/इय/ओ/	भरतिया वस्तु वा० स०
/—ण/ई/	कर	—ण/ई	करणी भा० वा० स०
	चट		चटणी वस्तु वा० स०
ण/आ/	कतर	,	कतरणी करण " ।
	गाव	—ण/ओ	गावणो कम ' ,
/—व/ई/	ढक	"	ढकणा करण "
	घो	—व/ई/	धावी वत " ,

/—आव/अण/ई/	पैर	—आव/अण/ई	पैरावणी	क्रम वा०	सं०
	जम	'	जमावणी	'	"
/—वोन/	पक	—वोन	पकवोन	"	"
/—वार/ओ/	बट	—वार/ओ	बटवारा	भा० वा०	स
/—हट/	गडगड	—हट	गडगडाहट	"	'

२ ३ २ द्वितीय पर प्रत्यय

जो प्रत्यय रूप शब्दो अर्थात् संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया विशेषण शब्दो के अन्त भाग में संलग्न होकर अनुमगी संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण एवं क्रिया-विशेषण पदो की संरचना करते हैं, वे प्रत्यय द्वितीय पर प्रत्यय की संज्ञा से अभिहित किये गये हैं। बीकानेरी बोली में उपलब्ध नाम व्युत्पादक द्वितीय पर प्रत्ययों को योग की दृष्टि से निम्नांकित चार वर्गों में विभक्त किया जा सकता है—

१— संज्ञा से संज्ञा　　　　३— विशेषण से संज्ञा
२— सर्वनाम से संज्ञा　　　४— क्रिया-विशेषण से सं

२ ३ २ १ संज्ञा से संज्ञा व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी बोली में संज्ञा से संज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्य निम्नलिखित है—

/—अक/ /—अक/ई/, —अक/ ओ/ /—जट/ई/ /—अड /—अण/ /—अत/ /—अण/ई/, /—अल/ /—अ ग/जा/ /—आ /—ई/ /—आक/ /—आक/आ/ /—आड/ /आड/ई/ /—जात/, / /—आप/आ/, /—आयत/, /—आर/, /—आर/ई/ /—आर/ ओ/, / /—णाल/ई/ /—आस/ /—इय/आ/, /—इय/ओ/ /—इयत/, /—इन्द / आ/, /—ई/, /—इच ओ/ /—ईन/ओ/, /—उ/ओ/, /—एर/, /- / एर/ओ/, /—एन/ /—ओ/ /—ओ/ई/ /—ओड/ओ/ /—ओए /—ई/ /—ओण/आ/ /—ओल/ई/ /—ओत/ओ/ /—आल/ई/, /—क /—क/—कन/आ/, /—क/आ/ /—क/आर/ /—क/इ/, /—ग/ई /—गर/ /—गार/ गर/ई/ /—गार/ /—डाआ/, /—च/ई/ /—चा

-ओ/, /—ज/, /—ज/ग/, /—ज/ओ/, /—ञाम/ओ/, /—ट/, /—ट/आ/, /—ट/ओ/, /—ड/ओ/, /—ड/ई/, —/ड/ल/ई/, /—त/आ/,/ /—त/ई/,/ —त/ आ/, /—त/ओड/, /—णेत/ /—णेत/इ/ /—घर/,/ —घार/ई/, /—ना/ई/, /—ण/ई/ /—तोम/ओ/ /—प/ /पण/, /-पण/ओ/, /-पान/, /-व/ओ/, /म/ /म/आ/, /-यार/ई/, /यार/ओ/ /र/ई/, /र/ऊ/, /र/आ/, /ल/इय/आ/, /ल/इ/, /ल/ओ/, /व/आ/, /-व/आ/, /-वज/, /-व/ ओ/ /-वाडा/, वाड/ओ/ -/-वाल/, /-वोन/

उपयुक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सं० रू०
/अक/	फड	-अक	फडक भा० वा० सं०
	कड	"	कडक "
	ढाल	-अक	ढोलक लघु वा० सं०
/-अक/ई/	धम	-अक/इ	धमकी भा० वा० सं०
	भभ	"	भभकी "
अक/ओ/	ठण	-अक/ओ	ठणका "
	बड्	'	बडको "
/-अट/	फोक	-अट	फोकट "
/अट/ई/	भप	अट/ई	भपटी "
/-अड/	हुल ∽ हुल	-अड	हुल्लड "
	कीच	-अड	कीचड स्वाभव
/-अण/	धाबी ∽ धोब	-अण	धोबण स्त्री वा० सं०
	माली ∽ माल "		मालण '
	भंगी ∽ भंग	'	भंगण "
/अग/आ/	अड	-अग आ	अडगा सवय वा० सं०

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
	लफ	'	लफगा गुण वा० स०
/आ/ई/	लोग ᔕ लुग	-आ/ई	लुगाई स्त्री '
	पडत		पडताई भा० वा० स०
	कोम ᔕ कम		कमाई "
/आ/	डोर	आ	डोरा वस्तु '
/-आक/	पास	-आक	पोसाक वस्तु "
/-आक/आ/	फट	आक/आ	फटाका वस्तु '
	धम		धमाका "
/-आड/	जाग ᔕ जुग	आड	जुगाड भा० वा स०
	लात ᔕ लत	'	लताड
/-आड/ई/	आग ᔕ अग	-आड/ई	अगाडी स्वार्थक
	जब	'	जबाडी अ ग वा० स०
/-आत/	जवार	-आत	जवारात समुदाय वा
/-आप/ओ/	राड ᔕ रड	-आप/ओ	रडापो भाव
/-आयत/	पच	-आयत	पचायत
/-आर/	लो ब	आर	लोबार व्यवसाय वा म
	सोनो ᔕ सोन	'	सोनार "
	कु भ		कु भार
/-आर/ओ/	बणज	-आर/ओ	बणजारा कर्न वा म
	ठठ		ठठारा '
/-आर/ई/	जूओ ᔕ जू	-आर/ई	जुआरी व्यवसाय वा म
/-आल/ई/	हाथ ᔕ हथ	-आल/ई	हथाली अ ग '
/-आस/	वाड	-आस	वाडास भा वा स०
	मार	'	मारास '
/-इय/आ/	कसर	इय/आ	कसरिया रग वा० स०
	फूलगुलाब	'	फूलगुलाबिया "

/इय/ओ/	क्वाड	इय/ओ	क्वाडियो व्यवसाय वा० स
	रावड	"	रोवडियो "
/इयत/	इन्सोन	इयत	इन्सानियत भा० वा० स०
/-इन्द/ओ/	रात	-इन्द/ओ	रातिन्दो राग "
/ई/	परख	ई	परखी वस्तु० वा० स०
	राख∽रख	-ड/ई	रखडी व्यजन वा० स०
/इच/ओ/	बाग∽बग	इच/आ	बगीचो वहद् काय० "
/इन/ओ/	माह∽म	ईन/आ	मईनो स्वाथक स०
/-उ/ओ/	राड∽रड	उ ओ	रडुआ सम्बन्ध वा० स०
/एर/	टटा∽टट	एर	टटर "
/-एर/ओ/	लूट∽लुट	एर/ओ	लुटेरो व्यवसाय वा० स०
/एल/	फूल∽फुल	-एल	फुलल सबध आ० स०
/-ओ/	फेर	-ओ	फेरा भा० वा० स०
	भल	"	भला सबध वा० स०
	बास		बासा आवास वा० स०
/-ओ ई/	बन्द	-ओ/ई	बन्दोई व्यवसाय "
	बन द	-ओ/इ	बेन्दोई[1] सम्बध वा० "
	नणद	-ओ/ई	नणदोई " "
/-आड/ओ/	हाथ∽हथ	ओड/आ	हथाडा करण वा० स०
/-ओण/ई/	जठ	-ओण ई	जेठोणी स्त्री वा० स०
/-ओत/ई/	बाप∽बप	-ओत/ई	बपोती परम्परा सूचक
/-ओण/ओ/	घर	-ओण/ओ	घरोणो सबध सूचक
/-ओत/आ	समझ	-ओत/आ	समझोतो सम्बन्ध वा० स०
/-ओल/ई/	नीम व	-ओल/ई	नीम्बोली अपत्य वा० स०
/-क/	मोच	-क	मोचक व्यजन वा० स०
/-क/अत/ओ/	फड	-क/अत/आ	फडकता गुण वा० स०

१— 'बेन्दोई' म 'द' का आगम 'नणदोई' के सादृश्य पर हुआ है।

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यया	व्युत्पन्न सना रुप
/ क/आ/	हाव	क/आ	हावका वत वा० स०
	छाव	"	छावका ,
/ क/तो/	वड	,	वडक्तो भाव वा० स०
/ क/आर/	जै	क/आर	जकार भाव वा० स०
	फट	"	फटकार ,
/-क/ई/	घम	क/ई	घमकी ,
/-ग/ई	वद	ग/ई	वदगी "
	दन		दनगी सवध वा० स०
/-गर/	जादू	गर	जादूगर कतृ वा० स०
/ गर/ई/	बाबू	गर/ई	बाबूगरी भा० वा० स०
	नेता	"	नेतागरी
/-गार/	याद	गार	यादगार स्मृति वा० स०
/-ड/आ/	बूक	ड/ओ	बूकडो पक्षी वा० स०
	धावौ	"	घोवीन्ग हृयायक
/ च/ई/	अफीम	च/ई	अफीमची व्यसन वा० स०
	तवलो ~ तवल		तवलची ,
	दग		दगची लघु वा० स०
/ चार/ओ /	भाई	चार/आ	भाईचारा भा० वा० स०
/-ज/	गू	ज	गूज
	घू	,	घूज ,
/ ज आ/	वू	ज/आ	वूजा सवध वा० स०
ज ओ	बन ~ भण ~ भाण	-ज/आ	भाणजा सवध वा० स०
/ जा॰/ओ	माय	जा॰/ओ	मायजाओ अपत्य वा० स०
/-ट/	छौ	-ट	छाट वस्त्र वा० स०

पूर्व प्रत्यय	संज्ञा	परप्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा	रूप
/-ट/आ/	पट	-ट/आ	पट्टा	वेन्या वा० स०
/ट/ओ/	दोपट ∽ दुपट ৷ दुपट	-ट/ओ	दुपट्टो	यन्त्र वा० में०
/ ड/ओ/	दुग	ड/ओ	दुगड़ो	स्वार्थक ,
	अक ∽ आक	,	आकड़ा	संबंध वा० स०
	भगी	,	भगीड़ो	ह्यार्थक वा० स०
/ ड/ई	राम	ड/ई	रामड़ी	आभूषणवा० स०
	पाग		पागड़ी	लघु वा० स०
/ ड/ल/ई/	बाव	-ड/ल/ई	बावड़ली	स्वार्थ वा० स०
/ त/आ/	धीर	त/आ	धीरता	भा० वा० स०
	धीर	,	धीरता	,
	जन	त/आ	जनता	समुदाय वा० स०
/-त/ई/	तप	त/ई	तपती	भाव वा० स०
/ त/ओ/	राई ∽ राय	त/ओ	रायतो	व्यंजन वा० स०
/-त/ओड/	भोग ∽ भग	-त/ओड	भगतोड	ह्यार्थक ,
/-दोन/	पोन	-दोन	पानदोन	पात्र वा० स०
	अंतर		अंतरदोन	
/-दोन/ई/	पीक	दोन/ई	पीकदानी	,
/ घर/	गीदी	घर	गीदीघर	,
/ धार/ई/	मण	धार/ई	मणधारी	स्वामी वा० स०
/-न/ई/	ओमद	न/ई	ओमदनी	"
	नथ	न/ई	नथनी	स्वार्थक वा० स०
/-ण/ई	चाद	-ण/ई	चादणी	,
	पराव	,	परावणी	संबंध वा० स० " (विवाह के अवसर पर पहनाये गये वस्त्रादि)
	भील	-ण/ई	भीलणी	स्त्री वा० स०

पर प्रत्यय	सना	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/-णी/ई	हाथी ~ हथ	-णी/ई	हथणी पशु वा० स०
/ नोम/ओ/	राजी	नाम ओ	राजीनामो सबध वा०सा०
/-प/	कड	/-प/	कडप ,
	भंड	/-प/	भडप ,
/-पण/	बाल	/ पण/	बालपण वयस वा०सा०
	सग	,,	सगपण सवध वा०सा
/-पण ओ/	गोल	पण/ओ	गोलपणो हेयाथक
	सैसी	,	सैंसीपणो
/-पाल/	खेतर	-पाल	खेतरपाल स्वामी वा सा
	दवार		दवारपाल
/ ब/आ/	मल	ब/ओ	मलवा हेयाथक
	दह	,	दड्बो
/ म/	परीत	म	परीतम स्वामी वा सा
	बाल		बालम ,
/ म/ओ/	घूर	म ओ	घूरमो व्यजन
	सूर		सूरमा गुण
/-यार/ई/	पोणी ~ पणि	-यार/ई	पणियारी सैंबध ,
	दव		दवयारा भाव ,
/-यार/ओ/	घास ~ घसि	-यार/आ	घसियारा व्यवसाय ,
	भट्टी ~ भटि		भठियारा
/ र/ई/	बाम ~ बम	र ई	बमरी सावध ,
/ र/ऊ/	प ी ~ पम	र ऊ	पसर स्वार्थक सना
/ र/आ	टाप	/ र/आ	टापरा हेयाथक
	गुर		गुरा उपकरण ,,
	दव		दवरा साधक ,,
-न्‍ त्या/आ	पा	न त्या न	पगनिया

पर प्रत्यय	सना	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सना रूप
/ ल/ई	डफ	ल/ई	डफली लघु
-ल/ओ	पाव	-ल/ई	पावली मुद्रा ,
	भाई ~ भाय	ल/ओ	भायलो संबंध ,,
/ व/आ।	छाज		छाजलो वस्तु ,
/-वंत/	माल ~ मल	वा/आ	मलवा व्यंजन
/ वज/	कला	वंत	कलावंत गुण वा० सं०
/-व/ओ/	भाई ~ भा	वज	भावज संबंध ,,
/-वाड/ओ/	राड ~ रड	-व/ओ	रडवो ,
	आगो ~ अग	वाड/ओ	अगवाडा
	सूनो ~ सून	-वाड/ओ	सूनवाडो
	पीछो ~ पिछ	,	पिछवाडो ,
/ वाल/	राजा ~ रज	,	रजवाडो
/वोन/	कोट	-वाल	कोटवाल उपनामवा०सं
	बाग	वोन	बागवान स्वामित्व ,

२ ३ २ २ सवनाम से सज्ञा

बीकानेरी म सवनाम से सज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय निम्न-लिखित हैं-

/-ओ/ /-प/ओ/ /-व/ओ/

उपयु क्त पर प्रत्ययो का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है

पर प्रत्यय	सवनाम	परप्रत्यय	व्युत्पन्न सना रूप
/-ओ/	आप	ओ	आपो भा०वा०सं०
/-प/ओ/	अपण	-प/ओ	अपणापो ,
/ व/ओ/	अपण	व/ओ	अपणावो ,

२ ३ २ ३ विशेषण से संज्ञा

शेखावाटी में विशेषण से संज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय निम्नांकित हैं–

| अक | | अत | | अण | | अस | | –आ/ई | | आप/ओ | | आर/आ | | आव |, | आस | | आवट | | इय/आ |, | ईय/ओ |, | ण्त/ओ |, | ओ | | ओण | | –क/आ |, | ग/ई |, | ज |, | –ज/ओ |, | ट | | त/ई | | प | | –पण | | स/ई | | –य/ओ |, | व/ओ |

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/ अक /	पाच ∽ पच	-अक	पचक समुदाय वा० स०
/ अण /	भूठ	-अण	भूठण भा० वा० स०
/ अत /	खलाफ	अत	खलाफ्त ,,
/-अस/	बार ∽ बार	-अस	बारस तिथि वाचक स०
/ आ ई /	साफ ∽ सफ	-आ/ई	सफाई भा० वा० स०
	फीटा ∽ फीट		फीटाई ,
	खाटो ∽ खट		खटाई
	मीठा ∽ मिठ		मिठाई व्यंजन वा०स०
/आप/आ/	बूढो ∽ बूढ	आप/आ	बूढापो भा० वा० स०
	राँड ∽ रँड		रँडापो ,
	मोटा ∽ मोट	,,	मोटापो
/ आर/आ/	अ घ	आर/ओ	अ धारो सबध वा०सं०

पर प्रत्यय	विशेपण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/-आव/	वट	-आव	वटाव सवध वा०स०
	लगोए ∽ लग	"	लगाव "
/ आस/	खाटो ∽ खट	-आस	खटास भा० वा० स०
	बडो ∽ बाड	,	बाडास "
/ आवट/	तर	आवट	तरावट ,
/ इय/आ/	पीलो ∽ पील	इय/आ	पीलिया सवध वा० स०
	घोलो ∽ घोल	,	घोलिया ,
/ इय/ओ/	तेरे ∽ तेर	इय/ओ	तरियो सस्कार "
/ एल/ओ	आधो ∽ अध	एल/ओ	अधेलो मुद्रा वा स
/-ओ/	एक	-आ	एको गिनती ,
	दो ∽ दू	-आ	दूओ ,
/ ओए/	वीच	-ओए	वीचोए भाव वा० स०
	लवो ∽ लव	-आए	लवाए ,
/ क/ओ/	च्यार ∽ चौ	-क/ओ	चौको सवध वा० स०
	छौ ∽ छ		छको , "
/-ग/ई/	नाराज	-ग/ई	नाराजगी भा० वा०स०
	ताजो ∽ ताज		ताजगी ,
/ ज/	दो ∽ दू	ज	दूज तिथि वा० स०
	तीन ∽ ती		तीज "
/-ज/ओ/	पाच ∽ प	-ज/ओ	पजो सवध वा० सं०
/-ठ/	छौ ∽ छ	-ठ	छठ तिथि वा० स०
त/ई/	ज्यादा ∽ ज्याद	त/ई	ज्यादती भा० वा० स०

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/-थ/	च्यार ~ चौ	थ	चौथ तिथि वा० सं०
/-पण/	पागल	पण	पागलपण भाव० वा० सं०
	बडो ~ बड	,	बडपण , ,
/-म/ई/	दस	-मी	दसमी तिथि वा सं
/-य/ओ/	सात	/-य/ओ	सातयो
	आंठ	,	आठ्यो ,
	नौ ~ न		नयो ,,
/-व/ओ/	दस	-व/आ	दसवा क्रम वा० सं०
	बार ~ बार		बारवा संस्कारवा० सं

बीकानेरी बोली म क्रिया विशेषण से संज्ञा व्युत्पन्न करने वाले पर प्रत्यय अधोलिखित हैं–

३ ३ २ ४ क्रिया-विशेषण से संज्ञा

/-अत/, /-इय/ओ/ / ई/, /-ण/ई/, /-णर/ /-वीण/, /-वार/

उपर्युक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

पर प्रत्यय	क्रिया-विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/-अत/	[illegible]	अत	[illegible] भा० वा० सं०
/-इय/ओ	[illegible]	-इय/आ	[illegible] वा० सं०
/-ई/	[illegible]	ई	[illegible] परिश्रम वा० सं०
/-ण/ई	[illegible]	-ण/ई	[illegible] भा० वा० सं०

पर प्रत्यय	क्रिया-विशेषण	पर प्रत्याय	व्युत्पन्न संज्ञा रूप
/—गार/	रोज	गार	रोजगार भा० वा० म०
	बेम	"	बेसगार कत वा० स०
/—बीण/	दूर ∽ दुर	—बीण	दुरबीण करण वा० स०
/—वार/	पैदा	—वार	पैदावार भा० वा० स०

संख्या की दृष्टि से बीकानेरी में पर प्रत्ययों का योग दो, तीन एवं चार तक उपलब्ध होता है। उदाहरण द्रष्टव्य है—

दो प्रत्ययों का योग

(—अक,—अण)

घड+अक = घडक (अक० धातु)+अण = घडकण (संज्ञा)

लट+अक = लटक (')+अण = लटकण "

(—आ वट)

सज+—आ = सजा (सक० धा०)+वट = सजावट "

(ओक —ड/ओ)

पछ+—ओक = पछोक (संज्ञा)+—ड/ओ = पछोकडो "

(—आ —व/ओ)

चढ़ +आ = चढ़ा (सक० धा०)+व/ओ = चढ़ावो "

तीन प्रत्ययों का योग

(—अक, —आर,—अण)

रण +अक = रणक (सक० धातु)+आर = रणकार "

+अण =रणकारण "

(—अक, —आव, —अण)

घड़ +अक = घडक (संज्ञा)+आव = घडकाव (भा० वा० स०)

+अण = घड़कावण "

(—आव, —अण, —इय/ओ)

रो +आव = रोआव (धातु) +अण रोआवण ,

—इय/ओ=रोआवणियो "

चार व्युत्पादक प्रत्ययो का योग

(—अक +आर, +अण, इय/ओ)

फट +अक = फटक, +आर = फटकार (भा० वा० स०)

+अण, फटकारण (सज्ञा) +इय/ओ = फटकारणियो "

(—अक आव, —अण, —इय/ओ)

गुड+अक = गुडक (स०) +आव = गुडकाव (स०)+—अण
गुडकावण (स०) +इय/ओ =गुडकावणियो (सज्ञा)

○○

अध्याय/३

सर्वनाम–प्रत्यय

३ १ सामान्य विवेचन

सवनाम उस विकारी शब्द को कहते हैं जो पूर्वापर सम्बध से किसी सज्ञा के बदले म आते हैं।[1]

जो सब के नाम बन जाते हैं उन्हें सवनाम कहते हैं।[2]

प्रस्तुत अध्याय म सावनामिक स्वतत्र रूपाशो के आबद्ध अशो का वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया गया है एव विविध प्रकार के आबद्ध रूपाशो को विवत के मूल रूप से पृथक करने का प्रयास किया गया है। इसी कारण क्रमश प्रत्येक रूप की उपलब्ध पृथक तालिका भी प्रस्तुत की गई है।

बीकानेरी के उपलब्ध सावनामिक स्वतत्र रूपाशो को हम मुख्य रूप से दो वर्गों म विभक्त कर सकते हैं—

(१) वैयक्तिकता बोधक

१— कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ ७२

२— किशोरीदास वाजपेयी हिन्दी शब्दानुशासन, पृष्ठ १७३

ऐसे सावनामिक स्वतन्त्र-रूपांश जो केवल वयक्तिक संज्ञा रूपों के ही स्थानापन्न रूप में प्रयुक्त होते हैं वैयक्तिकता बोधक सवनाम की सना से अभिहित किये गये हैं। इनका विभाजन दो रूपों में किया गया है—

(अ) प्रथम पुरुष
(आ) द्वितीय पुरुष

२ निर्वैयक्तिकता बोधक

ऐसे सावनामिक स्वतन्त्र रूपांश जिनका प्रयोग मुख्य रूप से निर्वैयक्तिक संज्ञा रूपों के ही स्थानापन्न रूप में होता है तथा गौण रूप से आवश्यक विशेषक पद रूप में किया जाता है, वे निर्वैयक्तिकता बोधक सवनाम कहे जाते हैं। निर्वैयक्तिकता बोधक सवनामों को निम्नांकित भागों में विभाजित किया जा सकता है—

१— निश्चय सूचक — (अ) निकटवर्ती
२— अनिश्चय सूचक (आ) दूरवर्ती
३— प्रश्न सूचक
४— सम्बन्ध सूचक
५— नित्य सम्बन्ध सूचक
६— आदर सूचक
७— निजता सूचक
८— साकल्य सूचक

वर्णनात्मक विश्लेषण प्रस्तुत करते समय सर्वप्रथम सावनामिक स्वतन्त्र रूपांशों के केन्द्रक अंशों को उपलब्ध करने का प्रयास किया गया है— ये सम्बन्ध बोधक आबद्ध रूपांश निम्नांकित हैं—

(अ) मूल या तिर्यक रूप विधायक
(ब) वचन-बोधक
(स) ध्वनि प्रतिबद्धित विकार जन्य परिवर्तन
(द) कारक-सूचक अंश

उक्त विविध प्रकार की सम्बन्ध बोधक इकाइयों का योग मूल-अंशों के साथ इस प्रकार हुआ है जिनका सामान्यतया विच्छेद सम्भव नहीं होता इनका उच्चरित रूप भी श्वांस के एक ही झटके में होता है। इन सभी प्रकार के सघटकों को पृथक-पृथक इकाई के रूप में उपलब्ध करने का सतत प्रयास किया है। अध्ययन-सुविधा की दृष्टि से प्रत्येक सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांश सविभक्तिक रूप धारण करने से पूर्व की स्थिति तक पृथक वर्ग में एवं तदुपरान्त होने वाले कारक सम्बन्धी विभागों को पृथक वर्ग में प्रस्तुत किया गया है। यही कारण है कि प्रत्येक सार्वनामिक-स्वतन्त्र रूपांश की दो तालिकाएं प्रस्तुत की गई हैं—

(१) कारक

सम्बन्ध सूचक आबद्ध रूपांशों के योग से व्युत्पन्न संश्लिष्ट रूप

(२) कारक

तथा सम्बन्ध वाचक आबद्ध रूपांशों के योग से व्युत्पन्न रूप।

एकरूपता के दृष्टिकोण से सार्वनामिक आबद्ध रूपांशों के विश्लेषण के निम्नलिखित संकेतों का प्रयोग किया गया है—

(अ) प्राणता सूचक (—)
(आ) अनुनासिक्य (×)
(इ) श्रुति सूचक (०)
(ई) सामान्य रूप सूचक (मूल)

उक्त तात्विक विश्लेषण को दृष्टि में रखकर ही हम अब सार्वनामिक प्रत्ययों का विश्लेषण वर्णनात्मक दृष्टि से प्रस्तुत करेंगे। आगे क्रमशः सार्वनामिक-रूप एवं प्रातिपदिक संरचना तालिका प्रस्तुत है।

३ २ १ वैयक्तिकता बोधक सर्वनाम प्रथम पुरुष

बीकानेरी के प्रथम पुरुष सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपांशों की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

	एक वचन	बहुवचन
कर्ता	हूँ, म्हैं	म्हे,म्हो
कर्म	मनैं	म्हाँने
करण	म्हैंसू	म्हासू
सम्प्रदान	म्हारैं	म्हांर
अपादान	म्हैसू	म्होसू
सम्बन्ध	म्हारी, रो, रा,	म्हारी, म्हारो, म्हारा
अधिकरण	म्हैंमें	म्हामे

प्रथम पुरुष एक वचन /ह/ की सरचना तालिका इस प्रकार है—

उपलब्ध रूप	केन्द्रक रूप	मूल आधार विधायक प्र	तियक आधार विधायक प्र	ध्वनि प्रतिबंधित रूप	ध्वन्यात्मक लेखन
हूँ	/ह/	/ऊ/		/०/	/हअ/
म्हैं	/म/		/ऐ/	/०/	/हअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि प्रथम पुरुष एक वचन का सावनामिक अग /हूँ/ है । इसका मूल आधार विधायक प्रत्यय /अ/ है । अनुनासिकता ध्वनि प्रतिबंधित है । तियक आधार विधायक प्रत्ययो के रूप म हम /ऐ/ को स्वीकार कर सकते है फलत

(१) मूल आधार विधायक /ऊ/
(२) तियक् आधार विधायक /ऐ/

इस प्रातिपदिक का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

/हअ/

सूचना—

प्रथम पुरुष एक वचन का केन्द्रक रूप हमने /ह्/ माना है। पर यदि प्रथम पुरुष सार्वनामिक रूप तालिका पर दृष्टिपात किया जाय तो विदित होगा कि कर्ताकारक एक वचन के मूल रूप के अतिरिक्त शेष सभी रूपों म /म/ विद्यमान हैं। अत यह भी माना जा सकता है कि बोली मे कर्ता कारक एक वचन का रूप 'म्ह' रहा होगा (जैसा कि मारवाड़ी की अन्य बोलियों म है) और /ह्/ पर अधिक बल होने से /म/ का लोप हो गया होगा। अत /ह/ अवशिष्ट बचा। /ह/, /म/ का ही महाप्राण उच्चरित रूप है। अत /म/ भी केन्द्रक रूप माना जा सकता है।

प्रथम पुरुष /म्/ की बहु वचन सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उपलब्ध रूप	केन्द्रक रूप	मूल आधार विधायक	तियक आधार विधायक	ध्वनि प्रतिबंधित	ध्वन्यात्मक लेखन
म्हे	/म/	/ए/			/हअ/
म्हा	/म्/		/ओ/	/०/	/हअ/
म्हा	/म/		/आ/	/०/	/हअ/

उपर्युक्त तालिका का वर्णनात्मक विवेचन हम इस प्रकार प्रस्तुत कर सकते हैं—

उपर्युक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि /म/ सभी रूपों म विद्यमान है अत सार्वनामिक केन्द्रक रूप म /म/स्वीकार किया जा सकता है। मूल आधार विधायक प्रत्यय /ए/ है। तियक आधार विधायक प्रत्यय /आ/ /ओ/ /आ/ है। ध्वन्यात्मक इकाइयाँ आबद्ध अंगों के रूप मे स्वीकार की जा

सकती है। मूल एव तियक प्रत्ययो के उपलब्ध रूपो को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

(१) मूल आधार विधायक /ए/

(२) तियक आधार विधायक /आ/ /आ/

इस सार्वनामिक स्वतंत्र रूप का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

/हुअ/

३ २ २ द्वितीय पुरुष

द्वितीय पुरुष /त/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	तूं थूं तें थें	थ थों
कर्म	तने थनें	थोंने
करण	थमू	थामू
सम्प्रदान	थार	थार
अपादान	थमू	थामू
सम्बन्ध	थारो, थारी थारा	थारो थारी थारा
अधिकरण	तम थम	थाम

द्वितीय पुरुष /त/ की एक वचन सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

उ० रूप	के० रूप	मू० आ० वि० प्र०	ध्व० प्र०	ध्व० लेखन
/थूं/	/त/	/ऊ/	/०/	/हुअ/
/त/	/त/	/ऊ/	/०/	/हुअ/
/तें/	/त/	/ए/	/०/	/हुअ/
/थें/	/त/	/ए/	/०/	/हुअ/

उपयु क्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि यहाँ पर /द/ सावनामिक केन्द्रक रूप मे उपलब्ध होता है। मूल आधार विधायक प्रत्ययो क रूप म /ऊ/ को स्वीकार किया जा सकता है।

तियक आधार विधायक प्रत्यया क रूप म /ए/ को स्वीकार किया जा सकता है। परिणाम स्वरूप मूल एव तियक् आधार विधायक प्रत्यया का रूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

१– मूल आधार विधायक /अ/

२– तिर्यक् आधार विधायक प्रत्यय /ए/

इन सावनामिक स्वतत्र रूपाशो का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

१– मूल आधार विधायक /हअ/

२– तियक आधार विधायक प्रत्यय /हअ/

द्वितीय पुरुष /द/ बहुवचन सावनामिक रूपांशा की सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

उ० रूप	के० रूप,	मू० आ० वि० प्र०,	नि० आ० वि० प्र०,	ध्व० प्र०,	ध्व०लेखन
थे	/द/	/ए/			/हअ/
था	/द/		/आ/	/०/	/हअ/
थां	/द/		/आ/	/०/	/हअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि यहाँ /थ/ सभी सावनामिक रूपाशा मे विद्यमान है अत /थ/ ही सावनामिक केन्द्रक रूप म स्वीकार किया जाना चाहिये । पर /थ/ /द/ का ही महाप्राण उच्चरित रूप है अत /द/ सावनामिक अश के रूप म स्वीकार किया गया है। नि० आ० वि० प्र० /आ/ तथा /ओ/ है अनुनासिकता ध्वनि प्रतिबन्धित है। इनकी सरचना तालिका इस प्रकार है –

१- मूल आधार विकारी प्रत्यय /ए/
तिर्यक आधार विकारी प्रत्यय /ए/ /आ/

इन प्रातिपदिकों का रूपात्मक गठन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

१- मूल आधार विकारी प्रत्यय /एअ/
२- तिर्यक आधार विकारी प्रत्यय /एअ/

२.३ निश्चयवाचक सर्वनाम

इन सार्वनामिक स्वतंत्र रूपों के विविध रूपों को निम्न प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है-

२.३.१ निश्चय सूचक –

(अ) निकट वर्ती
(आ) दूर वर्ती

हिन्दी में अन्य पुरुष का काम निश्चयवाचक सर्वनामों से लिया जाता है।[1] चौरासी में भी अन्य पुरुष का काम निश्चयवाचक सर्वनामों से लिया जाता है एवं निश्चयवाचक सर्वनामों के दो ही रूप उपलब्ध होते हैं-

१- निकटवर्ती /आ/
२- दूरवर्ती /वा/

वार्ताओं में उपलब्ध निकटवर्ती एवं दूरवर्ती सार्वनामिक रूपों की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है-

१ निकटवर्ती /ओ/

	एकवचन	बहुवचन
कर्ता	आ आ, इय	ये ईया
कर्म	ईन इयान	ईयान
करण	ईमू ईयमू	ईयामू
सम्प्रदान	ईर ईयर	ईयार

१- डा० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास पृष्ठ २८३

अपादान	ईसू, ईयसू	ईयासूँ
सम्बन्ध	ईरो, इरी, ईरा	ईयारा, ईयारी
	इयेरो, ईयेरी ईयेरा	ईयारा
अधिकरण	ईमे ईयेंमे	ईयांमे

१ दूरवर्ती (वो)

	एक वचन	बहुवचन
कर्ता	वो वा वै	वे, वा
कर्म	वन	वान
करण	वसू	वांसू
सम्प्रदान	वर	वार
अपादान	वैसू	वासू
सम्बन्ध	वैरा वैरो, वरा	वारा, वारी, वारा
अधिकरण	वैम	वांमे

निश्चय वाचक सर्वनाम के निकटवर्ती /अ/ एवं दूरवर्ती /व/ की एक वचन संरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है–

उ० रूप	के० रूप	मू० आ०	वि० प्र०,	ति० आ० वि० प्र०,	ध्व० प्र०,	ध्व० लेखन
/आ/	/अ/					/अअ/
/आ/	/अ/	/आ/				/अअ/
/ईये/	/अ/			/ऐ/		/अहअ/
/वो/	/व/	/ओ/				/हअ/
/वा/	/व/	/आ/				/हअ/
/व/	/व/			/ऐ/		/हअ/

उक्त संरचना तालिका पर दृष्टिपात करने पर हम /अ/ एवं /व सार्वनामिक अंश के रूप में उपलब्ध होते हैं। /अ/ निकटता बोधक है / /व दूरवर्ती बोधक है। मूल आधार विधायक प्रत्ययों के रूप मे /ओ/ /आ/ व

ग्व तियक आधार विधायक प्रत्ययो के रूप मे /ऐ/ का प्रयोग हुआ है –

मूल आधार विधायक प्रत्यय /ओ/ /आ/

तियक आधार विधायक प्रत्यय /ऐ/

निश्चय वाचक सर्वनाम के निकटवर्ती /ओ/ एव दूरवर्ती /वो/ की बहुवचन सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

उ० रूप	के० रूप	मू० आ० वि० प्र०	ति० आ० वि० प्र०	ध्व प्र०	ध्व० लेखन
अे	/अ/	/ए/			/अअ/
इयो	/अ/		/ओ/	/०/	/अहअ/
वे	/व/	/ए/		/ /	/हअ/
वो	/व/		/ओ/	/०/	/हअ/
वा	/व/		/आ/	/०/	/हअ/

उपर्युक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर /अ/ एव /व/ हमारे सम्मुख सार्वनामिक अश के रूप मे उपस्थित होते हैं। /इय/ रूप /अ/ का विकसित रूप है जो अन्य राजस्थानी बोलियो मे कहीं /य/ /यो/ के रूप मे उपलब्ध होता है। मूल आधार विधायक प्रत्यय के रूप /ऐ/ एव तियक आधार विधायक प्रत्यय के रूप म आ/ उपलब्ध है –

(१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /ए/

(२) तियक आधार विधायक प्रत्यय /ओ/ /आ/

इनका ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

(१)मूल आधार विधायक प्रत्यय /अअ/, /हअ/

(२)तियक आधार विधायक प्रत्यय /अहअ/, /हअ/

३ ३ २ –अनिश्चय सूचक

बीकानेरी म अनिश्चय सूचक सर्वनाम का /कोई/ रूप उपलब्ध होता है।

(१) कूण्
(२) कई

इनम कूण् प्राणि वाचक सवनाम है एव 'कई' वस्तुवाचक सवनाम है।/कूण/एव/कई/सवनामो की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है

कूण्

	एकवचन	बहुवचन
कत्ता	कूण	कूँण
कर्म	कने	कने
करण	कसू	कसू
सम्प्रदान	करे	करे
अपादान	कसू	कसू
सम्बन्ध	करो कँरी	करा, री, री
अधिकरण	कम	कम

कई

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	कइ	कइ
कम	कईन	कईन
करण	कइसू	कईसू
सम्प्रदान	कइरे	कईरे
अपादान	कईसू	कईसू
सम्बध	कईरा रा री	कई रो रा, री
अधिकरण	कईम	कईम

प्रश्न सूचक /क/ की सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ० रूप,	के० रूप,	मू०आ०वि०प्र०,	ति०आ०वि०,	विशेषक,	ध्वन्यात्मक लेखन
कुण	/क/	/ण/	/ण/	/उ/	/हअहअ/
क्या	/क/	/ओ/	/ओ/	/य/	/हहअ/
केण	/क/	/ए/	/ण/	/ए/	/हअहअ/
कूण	/क्/	/ए/	/ण/	/ऊ/	/हअहअ/
कई	/क्/	/ई/	/ई/	/आ/	/हअअ/
कई	/क्/	/ई/	/ई/	/अ/	/हकअ/
क्या	/क/	/आ/	/आ/	/य/	/हहअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर प्रतीत होता है कि इन सार्वनामिक स्वतन्त्र रूपों में केन्द्रक रूप /क्/ विद्यमान है। मूल आधार विधायक प्रत्ययों में /आ/ /ई/ /ओ/ विद्यमान है। /क्या/ एवं /क्या/ सार्वनामिक पद हिन्दी के ही समान है। प्रश्न वाचक प्रातिपदिक के मूल एवं तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि इन दोनों में पारस्परिक भेदकता बोधक आधार स्पष्ट लक्षित नहीं होता अतः इस दृष्टि से इनमें भेदकता हेतु शून्य विभक्ति का आगम विशेषक प्रत्ययों के उपरान्त स्वीकार किया जा सकता है फलतः प्रश्न बोधक सर्वनामों के निम्न रूप उपलब्ध हुए हैं—

(१) मूल आधार विधायक /आ/, /इ/, /ओ/ /ण/

(२) तिर्यक आधार विधायक /अ/ (/०/ /ई/) /०/, /ओ/) /०/ /ण/ /०/)

मूल सार्वनामिक अंशों के साथ /अ/ /ओ/ /उ/ /ऊ/ /ए/ तथा /य/ का संयोग उपलब्ध होता है। इन अंशों में /उ/ /ऊ/ एवं /ए/ को व्यक्ति वाचक एवं /अ/ /आ/ तथा /य/ को वस्तुवाचक प्रत्ययों के

नाम से अभिहित किया जा सकता है ।

उक्त सावनामिक पदो का ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

व्यक्ति वाचक /हअ हअ/
वस्तु वाचक /हहअ/

यहाँ पर वस्तु बोधक प्रातिपदिक के ध्वन्यात्मक लेखन से यह स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी मे यह अन्तर अन्य भाषाओ विभाषाओ, बोलिया के मिश्रण के कारण हुआ है जसे— /क्या/, एव /क्या/ हिन्दी के ही रूप हैं और ये बीकानेरी म इसी रूप म प्रयुक्त होते हैं । /काई/ /कई/ म अनुनासिकता बोली की प्रवति के परिणाम स्वरूप हैं । इस तालिका से यह भी स्पष्ट होता है कि मूल एव तिर्यक् आधार विधायक प्रत्ययो म वचन के प्रति उदासीनता दृष्टिगत होती है । इनका वचन निर्धारण जिनके ये स्थाना पन्न है उन्ही-उन्ही की दृष्टि में रखकर किया जाता है ।

३ ३ ४ सम्बन्ध सूचक—

बीकानेरी सम्बन्ध सूचक सवनाम /जु/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	जिको, जिक	जिके जिका जिको
कम	जिकन	जिकान
करण	जिकसू	जिकासू
सम्प्रदान	जिकैरे	जिकारै
अपादान	जिकसू	जिकासू
सम्बन्ध	जिकरो जिकरा	जिकारो जिकारा
अधिकरण	जिकम	जिका म

बीकानेरी सम्बन्ध सूचक सवनाम की एक वचन एवं बहुवचन की

सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

उ रूप	के रूप	मू आ वि प्र	ति आ वि प्र	लिं व वो	विशेपक ध्व प्र		ध्व ले
जिको	/ज्/	/क/		/ओ/	/इ/		/अहहअ/
जिकी	/ज/	/क्/		/ई/	/इ/		/अहहअ/
जिका	/ज्/	/क/		/आ/	/इ/		/अहहअ/
जिके	/ज/	/क/		/ए/	/इ/		/अहहअ/
जिक्यो	/ज/	/क्/	/ओ/		/इ/	/०/	/अहहहअ/
जिकै	/ज्/	/क/	/ऐ/		/इ/		/अहहअ/
जिको	/ज/	/क/	/ओ/		/इ/	/०/	/अहहअ/

/ज्/ सभी सावनामिक रूपा म विद्यमान हैं अत /ज/ को साव-ामिक अश के रूप म स्वीकार किया जा सकता है एव /क/ को मूल आधार विधायक प्रत्यय माना जा सकता हैं। /ऐ/ एव /ओ/ तियक आधार विधायक प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं। /इ/ एव /ओ/ लिंग बोधक प्रत्यय है, इस प्रातिपदिक का ध्वयात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता हैं—

[अहहअ]

सूचना—

डॉ० कन्हैयालाल शर्मा ने सम्बध वाचक सवनाम जिको म /ज/ को केद्रक रूप मानकर 'क' को स्वाथक प्रत्यय माना है। इसका कारण बताते हुए उन्होने लिखा है कि राजस्थानी की अधिकाश बोलियो म जो, जे जी आदि रूप ही उपलब्ध होते हैं। अत 'क' स्वाथक प्रत्यय ही माना जायेगा।[1]

१— डा० कन्हैयालाल शर्मा वीरसतसई की भाषा—एक अध्ययन, पृष्ठ २१—

३ ३ ५

बीकानेरी में सह सम्बन्ध वाचक सवनाम का स्वतन्त्र रूप उपलब्ध नहीं होता उसके स्थान पर दूरवर्ती निश्चय वाचक सवनाम "वो' का ही प्रयोग उपलब्ध होता है। यथा—

जिको आयो थो वो गयो (बीकानेरी)
जो आया था वह गया (हिन्दी)
जिको पढसी वो सुख पासी(बीकानेरी)
जो पढेगा वह सुख पायेगा (हिन्दी)

३ ३ ६ आदर सूचक

आदर सूचक सवनाम /आप/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

/आप्/

	एक वचन	बहुवचन
कर्त्ता	आप	आप
कर्म	आपनैं	आपन
करण	आपसू	आपसू
सम्प्रदान	आपरैं	आपर
अपादान	आपसू	आपसू
सम्बन्ध	आपरो, री, रा	आपरो, री, रा
अधिकरण	आपमें	आपमें

आदर सूचक /आप/ की सरचना तालिका इस प्रकार प्रस्तुत है–

उ॰ रूप,	के॰ रूप	मू॰ आ॰ वि॰ प्र॰,	ति॰ आ॰ वि॰ प्र॰,	विशेषक,	ध्व॰ लेखन
/आप/	/अ/	/अ/	/अ/	/प्/	/अह्/

ऊपर लिखित तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि यहाँ पर सावनामिक केन्द्रक रूप /अ/ विद्यमान है। /प/ को हम आदर सूचक विशेषक के रूप मे स्वीकार कर सकते हैं। मूल आधार विधायक प्रत्यय /अ/ माना जा सकता है। मूल व तिर्यक प्रत्यय म भेदकता लक्षित नही होती, अत भेदकता सिद्धि हेतु /०/ विभक्ति का आगम माना जा सकता है —

(१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /अ/

(२) तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय (/०/+/अ/)

इसका ध्वन्यात्मक लेखन इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

/अह/

इस सावनामिक रूपादा का प्रयोग भी प्रथम, द्वितीय एव तृतीय तीनो पुरुषा मे होता है और यदि कही इस सवनाम /आप/ का प्रयोग भिन्न भिन्न क्षेत्रा मे हो, वहा इसमे /०/ विभक्ति का योग माना जा सकता है। निजता-सूचक सवनाम के लिए भी इसका प्रयोग होता है। लिंग, वचन बोध जिनके ये स्थानापन्न है, पर आधृत है।

३ ३ ७ निजता सूचक

बीकानेरी में निजता सूचक सवनाम की सरचना आदर सूचक सवनाम के अनुसार ही है।

३ ३ ८ सर्व सूचक

सव सूचक सवनाम /सब/ की रूप तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

/सब/

	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	सब	सब
कर्म	सबनै	सबनै
करण	सबसूं	सबसूं
सम्प्रदान	सबरै	सबरै

अपादान	सबसू	सबसू
सम्बन्ध	सबरो, रा, री	सबरो, रा, रे
अधिकरण	सबमे	सबमे

सब सूचक /स/ की सरचना तालिका इस प्रकार है—

उ०रूप	के०रूप	मू०आ०वि०प्र०,	ति०आ०वि०प्र०	ध्वन्यात्मक लेखन
/सब/	/स/	/ब/	/ब/	/हअबह/
/सारा/	/स्	/आ/	/आ/	/हअहअ/

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि इनमे सार्वनामिक अश /स/ विद्यमान है जो समेतार्थक माना जा सकता है।

इस सवनाम का प्रयोग प्रथम, द्वितीय एव तृतीय तीनो पुरुषो म ही किया जाता है। यह सार्वनामिक अश यद्यपि समूहवाची विशेषण का प्रति निधित्व करता है अत इसका विश्लेषण विशेषण के क्षेत्र म ही सभव है पर सव नाम के क्षेत्र म भी स्वीकार किया गया है। अत मैंने भी इसे पृथक्त्व प्रदान किया है। मेरे विचार से /म/ विशेषक अश एव सार्वनामिक अश /स/ म भेदकता स्थापक किसी न किसी अश का योग अवश्य है। गहराई से देखने पर /सब/ वाले रूप म /स/ के सयुक्त स्वर /अ/ को सार्वनामिक प्रत्यय स्वीकार किया जा सकता है तथा /सारा/ के अन्तगत /०/ विभक्ति का योग स्वीकार किया जाना चाहिये। इस प्रकार सब वाचक रूप धारण करने के लिए विशेषक /स/ के साथ /०/ एव /अ/ आवद्ध अशो का योग माना जा सकता है।

तालिका के आधार पर /आ/ एव /ब/ मूल आधार विधायक प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं। तियक एव मूल रूपो म भेद लक्षित नही होता अत इस भेदकता के बोध हेतु /आ/ एव /ब/ के पूव /०/ विभक्ति का आगम माना जा सकता है—

(१) मूल आधार विधायक प्रत्यय /आ/, /व/
(२) तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय (/०/आ/) (/०/व/)

उपयुक्त तालिकाओं के आधार पर बीकानेरी के उपलब्ध सार्वनामिक केन्द्रक रूपों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(अ) वैयक्तिकता बोधक —

(१) प्रथम पुरुष	/म्/
(२) द्वितीय पुरुष	/त्/

(अ) निर्वैयक्तिकता बोधक —

१— निश्चय सूचक

(क) निकटवर्ती	/अ/
(ख) दूरवर्ती	/व/

२— अनिश्चय सूचक	/क/
३— प्रश्न सूचक	/क्/
४— सम्बन्ध सूचक	/ज्/
५— आदर सूचक	/अ/
६— निजता सूचक	/अ/

उपयुक्त समस्त तालिकाओं में सार्वनामिक पदों के व्युत्पादक अंगों को पृथक तालिका में प्रस्तुत किया जा सकता है—

प्रातिपदिक	मू०आ०वि०प्र०		ति०आ०वि०प्र०	
	एकवचन	बहुवचन	एकवचन	बहुवचन
(अ) वैयक्तिकता बोधक—				
(१) प्रथम पुरुष	/ऊ/	/ए/	/ऐ/	/ओ/, /आ/
(२) द्वितीय पुरुष	/ऊ/	/ए/	/ऐ/	/ओ/ /आ/
(आ) निर्वैयक्तिकता बोधक—				
(१) निश्चय सूचक				

निकटवर्ती दूरवर्ती	/ओ/,/आ/	/ए/	/ऐ/	/ओ/ /आ/
(२) अनिश्चय सूचक–	/ई/	/ई/	(/०/ई)	(/०/ ई)
(३) प्रश्न सूचक	/आ/,/ई/, /ओ/ /ए/	/आ/ /ओ/ /ई/, /ए/	(/०/आ/) (/०/ओ/,)	(/०/ ई) (/०//ए/
(४) सम्बन्ध सूचक	/क/	/क/	/ऐ/	/ओ/
(५) सब सूचक	/ब/	/ब/	-	-
(६) निज एव आदर सूचक	/अ/	/अ/	(/०/ अ)	(/०/अ)

उपयु क्त तालिका म प्रातिपदिक विधायक प्रत्यया मूल आधार विधायक प्रत्यय एव तिर्यक आधार विधायक प्रत्यय-का विभिन्न सावनामिक पदा मे समान व्युत्पादक अ शा की आवृतिया हुई । उन्ह निष्कर्ष रूप म इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

मू०आ०वि०प्र०		ति०आ०वि०प्र०	
एक वचन	बहु वचन	एकवचन	बहुवचन
/अ/ /उ/ /ई/ /ऊ/	/अ/ /आ/,/ऊ/	(/०/अ)	(/०/ अ)
/ऊ/ /ए/ /ओ/,/ए/	/ई/ /उ/,/ऊ/	(/०/अ)	(/०/ अ)
/व',/क/	/ए/ /ते/,/आ/	(/०/अ)	(/०/ ई)
	/ए/,/ब/ /क ,	(० ए)	(० ए)
		ऐ	ओ

उपयु क्त तालिका में व्युत्पादक प्रत्यय एकवचन एव बहुवचन म समानता रखते है अत उन्ह निष्कर्ष रूप म इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

मू०आ०वि०प्र०		ति०आ०वि०प्र०	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
/अ/, /आ/, /ई/, /ऊ/	/अ/, /आ/	/इ/ (/०/ अ)	(/०/ अ)
/ऊ/, /ए/, /ओ/ /ए/	/ई/	/उ/, /ऊ/, (/०/ अ)	(/०/अ)
/व/, /क/		/ए/, /ऐ/, /ओ/, (/०/ इ)	(/०/ ई)
		/ण/, /व/, /क/ (/०/ ए)	(/०० ए)
		/ऐ/	/ओ/

३ ६ उपर्युक्त तालिका में व्युत्पादक प्रत्यय एक वचन एव बहु वचन में समानता रखते हैं अत उन्हें निष्कप रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है–

मूल आधार विधायक प्रत्यय	तियक् आधार विधायक प्रत्यय
/अ/ /आ/, /ई/, /उ/, /ऊ/,	/आ/, /ई/, /उ/, /ऐ/
/ए/ /ओ/, /ण/, /व/ /क/	/ओ/ /०आ/, /०आ , /०ई/
	/०उ/, /०ऊ/, /०ए/

३ ६ वर्णित तालिका के उपलब्ध प्रत्यया को वर्णानिक क्रम म इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(अ) मूल आधार विधायक प्रत्यय

(१) स्वर प्रत्यय /अ/ /आ/ /ई/, /ऊ/, /ए/ /ओ/

(२) व्यजन प्रत्यय /ण/ /व/, /क/

(३) शून्य प्रत्यय /०/

(आ) तियक आधार विधायक प्रत्यय

(१) स्वर प्रत्यय /आ/ /ई/, /उ/ /ए/, /ओ/

(२) /०/ आ, /०/आ/, /०/ ई, /०/ ऊ /०/ ऐ

(३) व्यजन प्रत्यय /ण/, /व/, /क/

अध्याय/४

विशेषण-प्रत्यय

सामान्य विवेचन

जिस विकारी शब्द से संज्ञा की व्याप्ति मर्यादित होती है उसे विशेषण कहते हैं।[1]

प्रत्यय विधान की दृष्टि से हम बीकानेरी विशेषण शब्दों को दो वर्गों में विभक्त कर सकते हैं—

(१) मूल विशेषण
(२) यौगिक विशेषण

१ मूल विशेषण

मूल विशेषण से आशय ऐसे शब्दों से है जो किसी प्रकार के व्युत्पात्मक प्रत्ययों का योग ग्रहण नही करते यथा—

एक, दो, तीन, च्यार, पाच छौ सात, तेज, नीच आदि।

२ यौगिक विशेषण

१—श्री कामता प्रसाद गुरु हिन्दी व्याकरण, पृष्ठ १२४

यौगिक विशेषण से आशय है— संज्ञा सर्वनाम, विशेषण, क्रिया-विशेषण, धातु म व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न विशेषण पद यथा—

संज्ञा— केसर+प्रत्यय-/ईय/आ/=व्युत्पन्न विशेषण केसरिया।
सवनाम— औ ~इ+प्रत्यय/सा/ओ/=व्युत्पन्न विशेषण इस्सो।
विशेषण— च्यार ~चौथ+प्रत्यय /आई/=व्युत्पन्न विशेषण चौथाई।
क्रिया विशेषण— अटपट+प्रत्यय-/ई/=व्युत्पन्न विशेषण अटपटी।
धातु— चल+प्रत्यय=/आऊ/=व्युत्पन्न विशेषण चलाऊ।
व्युत्पादक विशेषण प्रत्ययों को हम दो वर्गों में विभाजित कर सकते हैं—
(१) पूर्व प्रत्यय
(२) पर प्रत्यय

४ २ पूर्व प्रत्यय

बीकानेरी मे उपलब्ध विशेषण व्युत्पादक पूर्व प्रत्यय अधोलिखित हैं—
/अ-/, /अण-/ /अल-/, /औ-/, /कु-/, /गुण-/, /न/ /नर-/, /बे-/, /स-/, /सु-/

उपयु क्त पूर्व प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पूर्व प्रत्यय	मूलांग	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/अ-/	दाग	अदाग
/अण-/	पढ	अणपढ
	देखी	अणदेखी
/अल-/	मस्त	अलमस्त
/औ-/	गुण ~ गण	औगण
/कु-/	ढ्व	कुढ्व

पूव प्रत्यय	मूलांश	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/कु-/	नामी	कुनामी
/गुण-/	तीस	गुणतीस
/न-/	धडक	नधडक
	डर	नडर
/नर-/	घन	नरघन
/बे-/	डौल	बेडौल
	काम	बेकाम
/स-/	जल	सजल
/सु-/	जोण	सुजोण
/साप-/	चेत	सापचेत

सूचना—

उपयुक्त विशेषण व्युत्पादक पूव प्रत्यय इस प्रकार के भी हैं जो एक ओर विशेषण रूप निष्पन्न करते हैं तो दूसरी ओर इतर रूप भी। उदाहरणार्थ /अ-/ के द्वारा एक ओर तो विशेषण रूप निष्पन्न होते हैं यथा /अ-/+चेत= अचेत तो दूसरी ओर सना रूप भी यथा /अ-/+काल = अकाल।

उपयुक्त पूव प्रत्ययों को अथ अभिनवता की दृष्टि स इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

१ अभाव एव हीनता बोधक

/अ-/, /अण-/, /औ-/, /कु-/

पूव प्रत्यय	मूलांश	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/अ-/	छूत	अछूत

पूव प्रत्यय	मूलांग	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/अण—/	गनत	अणगणत
/औ—/	गुण ∽ गण	औगण
/कु—/	ढव	कुढव

२ एक कम वोधक—

/गुण—/	गुण—	चास	गुणचास
	"	साठ ∽ सठ	गुणसठ

३ निपेधाथ वोधक

/न—/, /नर—/, /वे—/

पूव प्रत्यय	मूलांश	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/न—/	पूत/ई	नपूती
/नर—/	घन	नरघन
/वे—/	धडक	वेधडक

४ सहितता वोधक

/स—/, /साप/

/स—/	जल	सजल
/साप—/	चेत	सापचेत

५ श्रेष्ठता वोधक

/सु-/

/सु—/	जोण	सुजोण

६ निश्चय बोधक

/अल—/

/अन—/ मस्त अलमस्त

उपयुक्त पूर्व प्रत्यया एव मूलाशो का यौगिक विधान सश्लिष्ट कोटि का है। योग क्रम की दृष्टि से इन्हे सूत्र रूप मे इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है— पूर्व प्रत्यय + मूलाश + व्युत्पन्न विशेषण रूप। सख्या की दृष्टि से पूर्व प्रत्यया का योग इकहरा ही उपलब्ध होता है।

४ ३ २ पर प्रत्यय

प्रायोगिकता के आधार पर विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्ययो को निम्नाकित वर्गों मे विभाजित किया जा सकता है।

(अ) गुण बोधक विशेषण पर प्रत्यय

बीकानेरी गुण बोधक विशेषण पर प्रत्ययो को उनके मूलाशो के आधार पर पाच भागो मे विभाजित किया जा सकता है—

१—सज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
२— सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
३— विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
४— क्रिया-विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।
५— धातु से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय।

(आ) सख्या वाचक विशेषण पर प्रत्यय

४ ३ १ सज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी मे सज्ञा से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नाकित हैं—

/—अन/ /—अस्यी/, /—अग/, /—अग/ /आ/ /—आ/
/—आ/ /ई/ /—आइ/ /ई/, /—आत/ /ई/ /—आर/

/ऊ/, /—आवर/, /—आल /ऊ/, /—आल/आ/, /—आल/ओ/, /—इयल /—इय/आ/, /—इद/ओ/, /—ई/, /—इन/, /—ईल/ओ/, /—ऊ/, /—ओए/ई/, /—ओए/ओ/ /—कार/, /—क/ई/—खोर/, /—गार/ /—ची/, /—दार/, /—नाक/, /—वाज/, /—मद/, /—ल/ओ/, /—ष्ट्र/, /—वर/, वार/, /—वी/, /—वोन/, /—सार/,

उपयुक्त पर प्रत्ययों का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	संज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न वि०रू०
/-अल/	चोटी ∽ चोट	-अल	चोटल
	ठाठो ∽ ठाठ	"	ठाठल
	ढेढ़	"	ढेढल
/अस्वी/	तेज	अस्वी	तेजस्वी
/ अ ग/आ/	दड	अ द	दडद
/-आ/ई/	अड	-अ ग/आ	अडगा
/-आड/ई/	पूरब ∽ पुरव	-आ/ई	पुरवाई
/-आ/ई/	खेल	-आड/ई	खेलाडी
/-आत/ई/	बर	-आत/ई	बराती
/-आर/ऊ/	दूघ	-आर/ऊ	दुधारू
/-आवर/	देस	-आवर	देसावर
/-आल/ऊ/	झगडो ∽ झगड	-आल/ऊ	झगडालू
/-आल/आ/	घूघर ∽ घुघर	-आल/आ	घुघराला
/-आल/ओ/	मू छ	-आल/ओ	मूछालो
/ इयल/	दाडी ∽ दड	इयल	दडियल
/इय/आ/	दूघ	इय/आ	दूधिया
	सलेट	इय/आ	सलेटिया

/ इद/ओ/	बाई	-इद/ओ	बाइदो
	बास	"	बासिंदा
/ ई/	देस	ई	देसी
	बास	"	बासी
	बनावट	"	बणावटी
/ ईन/	सौख	ईन	सौखीन
	रग	"	रगीन
/ ईल/आ/	जेर	ईल/ओ	जेरीलो
	खरचो ∽ खरच	"	खरचीलो
	गाठ	"	गाठीलो
/ ऊ/	घर	ऊ	घरू
	बजार	"	बजारू
/ एड/ई/	भाग ∽ भग	/ एडा/ई	भगेडी
/ एर/	दल	एर	दलेर
/ एल/ऊ/	घर	एल/ऊ	घरेलू
/ ओ/	देवर	ओ	देवरो
/ ओण/ई/	सेल	ओण/ई	सेलोणी
/ ओन/आ/	मरद	-ओन/आ/	मरदोना
/-ओन/आ/	जन	"	जनोना
/-कार/	सला	-कार	सलाकार
	पेट	"	पेटकर
/-क/ई/	सन	क/ई	सनकी
/-खोर/	हराम	-खोर	हरामखोर
	घूस		घूसखोर
/-गार/	मदद	-गार	मददगार
	गुण ∽ गुणे		गुणेगार
/-ची/	अफीम	ची	अफीमची

/-दार/	दल	-दार	दलदार
	रस	,,	रसदार

पर प्रत्यय	सज्ञा	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न सज्ञा रूप
/-नाक/	गतरो ∽ गतर	-नाक	गतरनाक
/-बाज/	धोखो ∽ धाखे	-बाज	धोखेबाज
/मद/	अक्ल	मद	अक्लमद
/-ल/आ/	लाड	ल/ओ	लाडलो
/-ली/	लारै ∽ लार	,,	लारली
/-ल/उ/	दया	-ल/उ	दयालु
/-वर/	ताकत	-वर	ताकतवर
/-वार/	उम्मीद	-वार	उम्मीदवार
/-वी/	माया	-वी	मायावी
/-वान/	रूप	-वान	रूपवान
	धन	-वान	धनवान
/-सार/	मलण	-सार	मलणसार
	काम	,,	कामसार

४ ३ २ सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी बोली म सर्वनाम स विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नांकित हैं —

/-इ/, /-स्स/ओ/, /-त/आ/ /त/ओक/

उपर्युक्त पर प्रत्ययो का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

पर प्रत्यय	सर्वनाम	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/ई/	आपग	ई	आपसी
/-स्स/आ/	जो ∽ इ	स्स/आ	इस्सा
	वो ∽ व	"	वस्सो
	कुण ∽ क	,	किस्सो
/त्त/आ	कुण ∽ क	-त्त/ओ	कत्ता
	जका ∽ ज	,	जत्ता
/-त/आर	जो ∽ इ	त/ओर	इतोर

बीकानेरी बोली में कुछ सार्वनामिक स्वतंत्र रूपों का वाक्यगत विशेषणवत भी प्रयोग होता है। जहाँ उनका प्रयोग विशेषणवत किया जाय वहाँ हम /०/ विभक्ति स्वीकारनी चाहिए।

उपयुक्त सर्वनाम से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्ययों पर दृष्टिपात करने पर हम विदित होगा कि मूलांग एवं प्रत्ययों का योग संश्लिष्ट कोटि का है।

/-स्स/ओ/ /त/ओ/ प्रत्ययों में द्वित्व बलाघात के कारण हुआ है।

४ ३ ३ विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी बोली में निम्नलिखित विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय उपलब्ध होते हैं –

/-आ/ई/ /-आय/ओ/ /ई/, /ए/ /एड/ /एल/आ/ /-कर/ /कार/ /त/ई/ /ण/ई/ /ल/ओ/ /व/ओ/ /थ/आ/ /-ज/ओ ,

पर प्रत्यय	विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/आ/ई/	च्यार ∽ चौथ	-आ/ई	चौथाई
/आय/आ	पर	-आय/ओ	परायो

/ई/	निज	ई	निजी
/-ए/	दा	-ए	दाए
	दो ∽ द	,,	दए
	मात	,,	माते
/-एड/	आपा ∽ अप	एड	अपेड
/-एल/ओ/	एक	-एल/ओ/	एकेलो
	दो ब		दोकलो
/आ/	मान	आं	माना
	पचास		पचासों
	बाट		बाटा
/-अर/	घुन	-अर	घुनकर
/-आर/	दुग	-आर	दुगार
/-गर/	पगा ∽ पग	-गर	पगगार
/-त/ई/	कम	-त/ई	कमती
/-ण/ई/	तपस्वी ∽ तपस्व	-ण/ई	तपस्वणी
/-ल/आ/	हेठो ∽ हेठ	-ल/ओ	हेठलो
/-व/आ/	नौ ∽ न	-व/आ	नवाँ
	दस	,,	दसवाँ
	बीस	,,	बीसवाँ
/थ/ओ/	च्यार ∽ चौथ	थ/ओ	चौथो
/-ज/ओ/	दा ∽ दू	-ज/ओ	दूजो
/-सर/आ	दो ∽ दू	-सर/ओ	दूसरो
	तीन ∽ ती	,,	तीसरो

४ ३ ४ क्रिया-विशेषण मे विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी म क्रिया विशेषण से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्नां

कित हैं —

/-आवर/ / ई/

पर प्रत्यय	क्रिया विशेषण	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-आवर/	गिरट	-आवर	गरटावर
/ ई/	ऊपर	ई	ऊपरी
	वार		वारी

४ ३ ५ धातु से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय

बीकानेरी मे धातु से विशेषण व्युत्पादक पर प्रत्यय निम्न लिखित हैं—

/अत/ /आऊ/, /आक/ /-आव/ओ/
/-आव/अण/ओ/ /इयल/ /इय/आ/ /ऊ/ /कार/
/ रक/ /वण/आ/ /व/आ/

उपर्युक्त पर प्रत्यया का वर्णनात्मक विश्लेषण इस प्रकार है—

पर प्रत्यय	धातु	पर प्रत्यय	व्युत्पन्न विशेषण रूप
/-अत/	गढ़	अत	गढत
	रट	,,	रटत
/आऊ/	टिकाऊ टक	-आऊ	टकाऊ
	चल	,,	चलाऊ
/ आक /	तर	,	तराक
/ आव /ओ/	लड	-आव/ओ	लडावो
/ आव /अण/आ	डर	-आव/अण/आ	डरावणा
/ इयल /	मर	इयल	मरियल

	सड	,,	मडियन
	अड	,,	अन्यिल
/इय/आ/	वड	इय/आ	वन्यिा
	घट	,,	घटिया
/ऊ/	खा	ऊ	खाऊ
	उडा	,,	उडाऊ
	रट	,,	रट्टू
/-वार/	जाण	-वार	जाणवार
/न्न/	जाग	-न्न	जागन्न
/-वण/ओ/	सुवा	-वण/ओ	सुवावणों
	भा	,,	भावणा
	खा	,	खावणा
/व/ओ/	ढाल ~ ढन	-व/आ	ढनवाँ
	जुड	,	जुन्दा

दो व्युत्पादक पर प्रत्ययों का योग

(-अस्वी, -णी)

तप+/अस्वी/= तपस्वी (वि०)+/णी/ = तपस्वणी

तीन व्युत्पादक पर प्रत्ययों का योग

+(-आ, -वट, ई)+

वण /आ/=वणा (सकमक धातु) +/वट/=बणावट (स०)+/ ई/ =बणावटी

४ ४ सख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

पूर्णता के आधार पर हम सख्यावाचक विशेषणो को दो भागो म विभक्त कर सकते हैं –

(१) पूर्णा क बोधक विशेषण
(२) अपूर्णा क बोधक विशेषण

४ ४ १ पूर्णा क बोधक सख्या रूपो की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है –

एक	इग्यार	रै
दो	बार	,
तीन	तेर	"
च्यार	चौ॰	"
पाच	पनर	,
छौ	सोल	लै
सात	सतर	रै
आठ	अठार	,
नौ		
दस		

उगणीस	ईस	सचास	चास
बीस	,,	अडचास	,
इक्कीस	,,	गुणचास	,,
बाईस	,	पच्चास	,,
तेईस	,,	इक्कोवन	,,
चौइस	,,	बोवन	ओवन
पच्चीस	,,	तेपन	पन
छाइस	,,	चौपन	
सताईस	,,	पिच्चपन	,
अठाईस	,,	छप्पन	,
गुणतीस	,	सतोवन	,,
तीस	ईस	अठोवन	,,
इक्तीस	,,	गुणसठ	,
बतीस	,	साठ	,,
तेतीस	,	इक्कसठ	सठ
चौतीस	,	बासठ	,,
पतीस	,	तेसठ	,,
छतीस	,	चोसठ	,,
सतीस	,	पैंसठ	,,
अडतीस	,,	छ्यांसठ	,,
गुणतालीस	,	सिडसठ	,
चालीस	,,	अडसठ	,
इक्तालीस	आलीस	गुणतर	थ तर
बैंयालीस	,	सत्तर	तर
तैंयालीस	,	इक्कोतर	,
चम्मालीस	,	बवोतर	,
पतालीस		तेवतर	,
छैयालीस	,	चौहतर	,

मिनतर		इ्पासी	आमी
ध्रिनतर		नम्यासी	"
गिनतर		नुक्रे	
इन्तर		इक्रोएम	आएम
गुगयामी		बोएम	
अम्मा		नेएम	एएम
ग्यामी	य/नामी	चोलम	आगम
यवामी		पिन्याएम	ओएम
तवामी		धिनम	इनम
घोरगी		मनालाम	आएम
मिन्यामी		अडोलम	
धरामी	आमी	निन्यागम	
[illegible]		[illegible]	

लेकर ३८ तक तीस । ३६ से ४६ तक आलीस । ४७ से ५० तक चास । ५१ से ५८ तक ओवन अथवा इसके समपरिवतक पन, वन। ५९ से ६८ तक सठ। ६६ से लेकर ७८ तक तर। ७६ से ८८ य/ आसी/ एव ८९ से ६६ तक ओणम। व्युत्पादक अ श उपलब्ध हैं।

(२) इन व्युत्पादक आबद्ध अ शो को प्रत्येक दहाई की सख्या बोधक समपरिवतक रूप मे स्वीकार कर सकते हैं।

(३) द्वितीय स अष्टम तक के दशक नवम सख्या के दो पदिमग्रा के योग से निष्पन्न होते हैं, जिसम पूववर्ती अ श तक एक कम का बोधक एव द्वितीय अ श अपनी अगली सख्या का बाधक है।

(४) /स/ इसका योग दस् उगणीस, बीस् तीस्, चालीस् पचास अस्सी एव सौ सख्या बाचको म उपलब्ध है।

/अस्सी/ मे /ई/ एव /सा/ मे /ओ/ विकार उपलब्ध होते हैं।
/ठ/ /साठ/ अ श बाचक म उपलब्ध होता है।
/र/ /सत्तर/ सख्यावाचक म मिलता है।
/व/ -/नब्बे/ सख्या बोधक अ श म उपलब्ध होता है।

प्रत्यक दशक की दहाई म सख्या बोधक मूलाश को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है जो पूर्णांकों के मूल रूपों के ध्वनि प्रतिबधित समीपवतका के रूप म दृष्टिगत होत हैं –

दस, बीस, तीस, चालीस, पचास, साठ सतर, अस्सी नब्बे म क्रमश /द/ /ब/ /त/, /च/, /पच/, /सठ/, /सत/, /अ/, नव् मूलाश समपरिवतक स्वीकार किय जा सकते हैं।

४ ४ २ अपूर्णांक बोधक

अपूण सख्या वाचक विशेषण से पूण सख्या के किसी भाग का बोध होता है।[1]

१— डॉ० धीरेन्द्र वर्मा हिन्दी भाषा का इतिहास, पृष्ठ २७१

अपूर्णांक वाचक विशेषण रूपों की व्युत्पत्ति बीकानेरी बोली में स्वतंत्र इकाई का रूप धारण कर चुका है अतः उनके अन्तर्गत व्युत्पादक प्रत्ययों का ढूंढना असम्भव है। इन प्रत्ययों के अन्तर्गत लिंग, वचन बोधक व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों का योग उपलब्ध होता है। उनका विवेचन आगे किया गया है।

अपूर्णांक बोधक विशेषण प्रत्ययों को हम निम्नलिखित भागों में विभाजित कर सकते हैं –

(१) क्रम संख्या वाचक विशेषण प्रत्यय
(२) आवृत्ति संख्या वाचक विशेषण प्रत्यय
(३) अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

४ ४ २ १ क्रम संख्यावाचक विशेषण प्रत्यय

क्रम संख्या वाचक विशेषण प्रत्ययों में ल/ओ र/ओ ज/ओ, थ/ओ, व/ओ ठ/ओ प्रत्ययों का योग उपलब्ध होता है–

ल/ओ/ इस प्रत्यय का प्रयोग प्रथम विशेषण पद में होता है यथा–
एक-पे + ल/ओ पेलो

/र/ओ/, /ज/ओ/ इस प्रत्यय का प्रयोग द्वितीय एवं तृतीय विशेषण पद में उपलब्ध होता है –

दो ∽ दू ज/ओ, र/ओ = दूजो, दूसरो
तीन ∽ ती " " तीजो तीसरो

/-थ/ओ/

इस प्रत्यय का प्रयोग चतुर्थ विशेषण पद में प्रयुक्त होता है। यथा–

च्यार ∽ चौ -थ/ओ चौथो

/-व/ओ/

इस प्रत्यय का प्रयोग पंचम, सप्तम अष्टम तथा नवम विशेषण पदों में उपलब्ध होता है, यथा—

पाँच	-व/आ	पाचवा
सात	"	सातवा
आठ	"	आठवा
नौ ~ न	"	नवो ~ नमा
सौ	"	सौवा

/-ठ/ओ/

इस प्रत्यय का प्रयोग षष्ठ विशेषण पद म प्रयुक्त होता है । यथा —

छो ~ छ	-ठ/आ	छठो

सूचना —

/-व/आ/ प्रत्यय का प्रयोग ही विश्लेषित विशेषण रूपो के अतिरिक्त सभी सख्याओ म उपलब्ध होता है । अत इसे ही मूल समपरिवतक विशेषण प्रत्यय के रूप म स्वीकार किया जा सकता है एव शेष प्रत्ययो को गौण समपरिवतक के रूप म स्वीकार किया जा सकता है ।

४ ४ २ २ आवृत्ति सख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

आवृत्ति वाचक विशेषण पदो म हम / गुण/ ओ/, /-ण/आ/ प्रत्ययो का योग उपलब्ध होता है । इन प्रत्ययो का प्रयोग दो से लेकर सभी सख्याओ म उपलब्ध होता है । यथा—

दो ~ दु	गुण ~ गण/ओ	= दुगणो
दो ~ दू	-ण/ओ	दूणो
दस	-गुण/ओ	दसगुणो
सौ	"	सौगुणो

४ ४ २ ३ अनिश्चित सख्या वाचक विशेषण प्रत्यय

/-ओ/ एव /-आ/ प्रत्ययो के द्वारा अनिश्चित सख्या वाचक विशेषण पद व्युत्पन्न होते हैं । यथा —

घणो	थोड़ा

पद्दाड़ा म प्रयुक्त होने वाले प्रत्यय निम्न लिखित है

/-आ/, /-य/ओ/, /र/आ/, /-व/आ/

इनके उदाहरण इस प्रकार है —

/-ओ/

एक्को, दूजो पाचो सातो, आठो

/-य/आ/

तीयो

/-र/आ/

चौथो, दूजो

/-व/आ/

नवो

याग की दृष्टि से उपयुक्त प्रत्ययो का याग सन्निष्ट कोटि का है। इन याग क्रम को मूल रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

मूलांग + प्रत्यय = व्युत्पन्न विशेषण रूप

बीकानेरी म कुछ प्रत्यय इस प्रकार के हैं जो एक ओर व्याकरणिक संबंध बोध कराते हैं एवं दूसरी ओर अभिनव रूप भी व्युत्पन्न करते है। उदाहरणाथ —

/-आ/, /आ/, प्रत्यय पु० एक० व० एव बहु० व० क बोधक हैं। यथा—

घणो घोडा

उपयुक्त उदाहरणो म /-ओ/ से पु०ए०व० प्रत्यक्ष कारक का बोध होता है एव /-आ/ स पु० ब० प्रत्यक्ष कारक का बोध होता है। परन्तु इन्हीं व्याकरणिक प्रत्ययो द्वारा लिंग, वचन, कारक के अतिरिक्त वाक्यस्तरीय सम्बन्ध म अथ अभिनवता का बोध होता है, वहाँ ये व्युत्पादक रूप धारण कर लेते है यथा—

	एकवचन	बहुवचन
तस	तसो	तसा
मैल	मैलो	मैला
चौवार्	चौवारो	चौवारा
भूख	भूखो	भूखा

उपयुक्त रूपांशो पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि एक ओर तो ये प्रत्यय लिंग वचन के बोधक हैं तो दूसरी ओर इनसे विशेषण स्वतन्त्र रूपांश भी व्युत्पन्न होते हैं। अत -ओ/, -आ/, -/ई को व्याकरणिक एव व्युत्पादक दोनो कोटियो के प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं।

बीकानेरी म विशेषण स्वतन्त्र रूपांशो म व्याकरणिक प्रत्यय योग जनित विकार भी व्युत्पन्न करते हैं। इस सम्बन्ध मे सामान्य निष्कर्ष इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं –

१-अकारान्त, आकारान्त, ईकारान्त एव ऊकारान्त

इन विशेषण पदो म विशेष्य के अनुरूप विकार उत्पन्न नहीं होता यथा–

(क) अकारान्त विशेषण

(१)	सुपातर बेटा	पुलिंग एकवचन
(२)	सुपातर बेटी	स्त्रीलिंग एकवचन
(३)	सुपातर बेटा	पुलिंग बहुवचन
(४)	सुपातर बेट्यां	स्त्रीलिंग बहुवचन

(ख) आकारान्त विशेषण

(१)	बढ़िया घोड़ो	पुलिंग एकवचन
(२)	बढ़िया घोड़ी	स्त्रीलिंग एकवचन
(३)	बढ़िया घोड़ा	पुलिंग बहुवचन
(४)	बढ़िया घोड़्यां	स्त्रीलिंग बहुवचन

(ग) ईकारान्त विशेषण

(१)	मूजी आदमी	पुंलिंग एकवचन
(२)	मूजी लुगाई	स्त्रीलिंग एकवचन
(३)	मूजी आदम्या	पुंलिंग बहुवचन
(४)	मूजी लुगाया	स्त्रीलिंग बहुवचन

(घ) ऊकारान्त विशेषण

(१)	उडाऊ छोरो	पुंलिंग एकवचन
(२)	उडाऊ छोरी	स्त्रीलिंग एकवचन
	उडाऊ छोरा	पुंलिंग बहुवचन
(४)	उडाऊ छोरया	स्त्रीलिंग

उपयुक्त विशेषण रूपों में किसी प्रकार के व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों का योग नहीं होता। अतः उक्त अकारान्त, आकारान्त, ईकारान्त एवं ऊकारान्त के लिंग, वचन निर्धारण हेतु /o/ विभक्ति स्वीकार की जा सकती है।

२- ओकारान्त

आकारान्त विशेषण में लिंग–वचन के अनुरूप परिवर्तन होता है।

(१)	काला घोडा	पुंलिंग एकवचन
(२)	काला घोडा	,, बहुवचन
(३)	काली घोडी	स्त्रीलिंग एकवचन
(४)	कालया घोडया	स्त्रीलिंग बहुवचन

उपयुक्त उदाहरणों में विशेष्यों के अनुरूप विशेषणों में लिंग, वचन प्रत्ययों का योग दृष्टिगत होता है।

अध्याय / ५

आख्यात-प्रत्यय

५ १ सामान्य विवेचन

बीकानेरी म आख्यात प्रत्यय सरचना के आधार पर दृष्टिपात करने पर सव प्रथम उनमे प्रयुक्त व्याकरणिक सम्बन्ध बोधक अशो का भाग दृष्टिगत होता है। इन व्याकरणिक सम्बन्ध बोधक अशो द्वारा काल वचन आदि सम्बन्धो का बोध होता है। इन सम्बन्ध बोधको को पद स दूर करने पर अवशिष्ट रूप को धातु क नाम स अभिहित किया जाता है। सरचना की दृष्टि से धातु के दो रूप होते हैं–

(१) मूल धातु
(२) यौगिक धातु

(१) मूल धातु

जिन धातुओ के बीकानेरी म व्युत्पत्ति की दृष्टि से प्रचलित रूप के आधार पर सार्थक खड सम्भव नही हो उन्हे मूल धातु के नाम से अभिहित किया गया है। यथा–

पढ़, सु आ, रो आदि

(२) यौगिक धातु

बीकानेरी मे जिन धातुओ के प्रचलित रूप के आधार पर सार्थक खड

समन हो उन्हें यौगिक धातु की संज्ञा से अभिहित किया गया है। जिन प्रत्ययों के योग से यौगिक धातुएं निष्पन्न होती हैं उन्हें व्युत्पादक प्रत्ययों के नाम से अभिहित किया गया है।

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर धातु में दो प्रकार के आबद्ध अंशों का योग उपलब्ध होता है। प्रथम प्रकार के आबद्ध अंश जो धातु से जुड़े होते हैं – धातु व्युत्पादक प्रत्यय कहलाते हैं। द्वितीय प्रकार के आबद्ध अंश व्युत्पादक प्रत्यय सहित धातु के साथ जुड़े होते हैं उन्हें व्याकरणिक कोटि में अर्थ बोधक क्रिया विभक्ति के नाम से अभिहित किया गया है।

आख्यात

धातु में व्युत्पादक प्रत्ययों का योग होता है इसलिए व्युत्पादक प्रत्ययों की सुविधा एवं धातु भेद के आधार पर इस अध्याय का 'आख्यात प्रत्यय' नामकरण किया गया है। रचना विधान की दृष्टि से बीकानेरी धातुओं के प्रमुख रूप से चार भेद किये जा सकते हैं —

१ नाम धातु
२ प्रेरणार्थक धातु
३ सकर्मक धातु
४ अनुकरणात्मक धातु

उपर्युक्त धातु भेद के आधार पर धातु व्युत्पादक प्रत्ययों को भी चार भागों में विभाजित किया जा सकता है —

१ नाम धातु प्रत्यय
२ प्रेरणार्थकधातु प्रत्यय
३ सकर्मक धातु प्रत्यय
४ अनुकार-वाची धातु प्रत्यय

५ २ (१) नाम धातु-प्रत्यय

जो धातुएं संज्ञा विशेषण आदि प्रातिपदिकों से व्युत्पन्न होती हैं – संस्कृत एवं हिन्दी वैयाकरणों ने इस प्रकार की धातुओं को नाम धातु की संज्ञा

दी है। बीकानेरी में जिन व्युत्पादक प्रत्ययों के योग से नाम धातुए व्युत्पन्न होती हैं उन्हें नाम धातु व्युत्पादक की संज्ञा दी गई है। नाम धातु-प्रत्ययों को हम दो भागों मे विभाजित कर सकते हैं–

(१) पूर्व प्रत्यय
(२) पर प्रत्यय

(१) पूर्व-प्रत्यय

/खा-/, /स-/

पूर्व प्रत्यय	नामवाची शब्द	=	व्युत्पन्न धातु
खा -	ऊबड	=	खाबड
स -	उलटो	=	सुलटो

पर-प्रत्यय

बीकानेरी मे नाम धातु-व्युत्पादक प्रत्यय निम्नलिखित हैं–

/ ०/, /-आ / इया/, / ए/

सूचना –

बीकानेरी में नाम-धातुए मुख्य रूप से /-आ/ पर प्रत्यय के योग से व्युत्पन्न होता है ––

/०-/

नामवाची शब्द	व्युत्पादक प्रत्यय	=	व्युत्पन्न धातु
फूंकार	/ ०/	=	फूंकार
हूंकार	/ ०/	=	हूंकार
छींट	/-०/	=	छींट
फूंक	/ ०/	=	फूंक
फटकार	/ ०/	=	फटकार
लताड	/ ०/	=	लताड

/-आ/

नामवाची शब्द	व्युत्पादक प्रत्यय	व्युत्पन्न धातु
सेर	-आ	सेरा
नाम ~ नम	-आ	नमा
घात ~ घत्	आ	घता
चप	-आ	चपा
कस	-आ	कसा
पढ	-आ	पढ़ा

सूचना —

कई नामवाची धातुओं में /-आ/ के योग से आद्य व्यंजन के मध्यम स्वर का ह्रस्वीकरण हो जाता है। यथा—

नाम वाची शब्द	ह्रस्वीकरण	व्युत्पन्न धातु
मूल	ऊ>उ	मुला
सूल	ऊ>उ	सुला

आद्य व्यंजन /ओ/ के /उ/ में परिवर्तित होने पर भी नाम धातु व्युत्पन्न होती है—

तोल	/ओ/>/उ/	तुला
लोभ	/ओ/>/उ/	लुभा
बोल	/ओ/>/उ/	बुला
खोल	/ओ/>/उ/	खुला

/इया/

नामवाची शब्द	व्युत्पादक प्रत्यय	व्युत्पन्न धातु
माटो ~ मुट	इया	मुटिया

/ण/

बीकानेरी में /-ण/ प्रत्यय /आप/ सर्वनाम से धातु व्युत्पन्न करता है।

सर्वनाम + व्युत्पादक प्रत्यय = व्युत्पन्न धातु
आप णा आपणा

/ ला /

नामवाची शब्द + व्युत्पादक प्रत्यय = व्युत्पन्न प्रत्यय
बात ~ बत ला बतला

लोप

बीकानेरी मे कुछ स्वरो के लोप से भी नाम धातु व्युत्पन्न होती हैं –

(क) /-आ/

शब्द	लोप	व्युत्पन्न धातु
पूजा	-आ	पूज
सजा	-आ	सज
मचा	-आ	मच

( ) /ई/

रेती	-ई	रेत

निष्कर्ष रूप म बीकानेरी म नाम धातु व्युत्पादक प्रत्यय इस प्रकार माने जा सकते हैं – खा

पूर्व प्रत्यय	/खा/, /म/
पर प्रत्यय	/०/, /आ/, /इया/ /णा/ /ला/
लोप मूलक	/आ/, /ई/

५ ३ प्रेरणार्थक–धातु–प्रत्यय

अकर्मक एव सकर्मक धातुओ मे प्रेरणार्थक धातुए व्युत्पन्न होती है । जिस वाक्य मे कर्त्ता प्रत्यक्षत क्रिया नही करता अपितु किसी अन्य के माध्यम स उस क्रिया का सम्पादन कराता है अथवा उसे कराने की आकाक्षा करता है प्रेरणार्थक धातुए कहलाती है । प्रेरणार्थक धातु म सयुक्त होने वाले प्रत्यय प्रेरणार्थक धातु प्रत्यय कहलाते हैं । बीकानेरी प्रेरणार्थक धातु प्रत्ययो को उनके कार्य व्यापारो के आधार पर दो भागो म विभाजित किया जा सकता है ।

(१) प्रथम प्रेरणायक धातु प्रत्यय
(२) द्वितीय प्रेरणायक धातु प्रत्यय

५ ३ प्रथम प्रेरणायक धातु-प्रत्यय

जिन प्रत्ययो क योग से कर्त्ता के अपने स भिन्न व्यक्ति को क्रिया करने क लिए प्रेरित करने का बोध होता है, प्रथम प्रेरणायक धातुप्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गये हैं। यथा —

'छोर न पाणी पाओ"

वाक्य म क्रिया /पा/ मे /-ओ/ प्रत्यय के योग से कर्त्ता के किसी अन्य को क्रिया करने के लिए प्रेरित करने का बोध होता है।

५ ३ द्वितीय प्रेरणार्थक धातु-प्रत्यय

जिन प्रत्ययो के योग स कर्त्ता के किसी दूसरे व्यक्ति के माध्यम स तीसरे व्यक्ति या पक्ष को क्रिया करने के लिए प्रेरित करने का बोध होता है, द्वितीय प्रेरणायक धातु प्रत्यय की सज्ञा से अभिहित किये गय हैं। यथा—

छोर नै पाणी पवाओ'

वाक्य म व /-आओ प्रत्यय के योग से यह प्रतीत होता है कि कोई यक्ति किसी अन्य व्यक्ति के माध्यम स तीसर व्यक्ति को पानी पिलान क लिए प्रेरित करता है।

योगक्रम की दृष्टि से प्रेरणायक धातु प्रत्ययो का योग मध्यग एव अन्त्य है। प्रत्यय योग कभी मूल धातु मे विकार उत्पन्न करते हैं एव कभी नही। इस आधार पर प्रेरणायक धातु व्युत्पादक प्रत्ययो का वणनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

५ ३ १ प्रथम प्रेरणायक धातु-प्रत्यय

बीकानेरी मे /-आ/ प्रत्यय मुख्य रूप से प्रथम प्रेरणायक धातु व्युत्पादक प्रत्यय है।

/-आ/

धातु	+	प्रत्यय	=	प्रथम प्रेरणार्थक धातु
उठ		-आ		उठा
उड		-आ		उडा
चढ़		-आ		चढा
चिढ		-आ		चिढा
जम		-आ		जमा
झुक		-आ		झुका
डर		-आ		डरा
पढ		आ		पढा
फर		-आ		फरा
गण		-आ		गणा
पर		-आ		पैरा
खोल		-आ		खोला
लख		-आ		लखा

बीकानेरी मे /-आ/ प्रत्यय के मध्यग से भी प्रथम प्रेरणार्थक धातु रूप व्युत्पन्न होते हैं –

धातु	+	मध्यग प्रत्यय	=	प्रथम प्रेरणार्थक धातु
बल		अ>आ		बाल
पड		अ>आ		पाड

/-ओ/ प्रत्यय के योग से अत्यल्प रूप मे प्रथम प्रेरणार्थक धातु रूप व्युत्पन्न होते हैं। इसके योग से पूर्व स्वर ह्रस्व हो जाता है —

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न प्रथम प्रेरणार्थक धातु
भीज ∽ भिज	-ओ	भिजो
सीज ∽ सिज	-ओ	सिजो
डूब ∽ डुब	-ओ	डुबो

(२) द्वितीय प्रेरणार्थ धातु व्युत्पादक प्रत्यय

/ ना/, / आव/

५ ४ सकर्मक–धातु–प्रत्यय

बीकानेरी मे अकमक धातुओ मे सकमक धातुए व्युत्पन्न होती हैं । इस प्रक्रिया मे अकमक धातुओं के पश्चात् /o/ प्रत्यय की स्थिति स्वीकार की जा सकती है एव इसके योग से आन्तरिक ध्वनि परिवतन होते हैं । अकमक धातुओ म /o/ विभक्ति के योग से निम्नलिखित आन्तरिक ध्वनि विकार होते हैं –

/अ>आ/ /इ>ए/ /उ>ऊ/, /उ>ओ/, /ऊ>ओ/

इन प्रत्ययो का वणनात्मक विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

/o/

अकमक धातु	प्रत्यय	विकार	व्युत्पन्न सकमक धातु
भर	/o/	अ>आ	भार
मर	/o/	अ>आ	मार
कट	/o/	अ>आ	काट
उतर	/o/	अ>आ	उतार
मड	/o/	अ>आ	माड
फिर	/o/	इ>ए	फेर
घिर	/o/	इ>ए	घेर
गुथ	/o/	उ>ऊ	गूंथ
चुंट	/o/	उ>ऊ	चूंट
जुड	/o/	उ>ओ	जोड
मुड	/o/	उ>ओ	मोड
घुट	/o/	उ>ओ	घोट
छूट	/o/	ऊ>ओ	छोड

निष्कर्ष रूप मे बीकानेरी म सकर्मक धातु व्युत्पादक प्रत्यय के रूप म /०/ प्रत्यय को आतरिक ध्वनि विकार सहित स्वीकार किया जा सकता है ।

५ ५ अनुकार-वाची-धातु-प्रत्यय

भाषा भावो की वाहिनी है । बीकानेरी म भावो की अत्यन्त सरल एव स्पष्ट व्यजना के लिए अनेक अनुकार वाची शब्दो का प्रयोग उपलब्ध होता है । ये अनुकार वाची शब्द मुख्य रूप से सज्ञा के समकक्ष स्वीकार किये जा सकते है एव इन सज्ञा वाची शब्दो म विविध व्युत्पादक प्रत्ययो के योग से अनेक अनुकार वाची धातु रूप अस्तित्व म आये हैं । अत इन प्रत्ययो को अनुकार वाची धातु की सज्ञा से अभिहित किया गया है । इन प्रत्ययो का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है --

(क) /ओ/

अनुकार वाची शब्द +	प्रत्यय =	व्युत्पन्न अनुकारवाची धातु
तरड	-ओ	तरडो
अरड	-आ	अरडो
दड	ओ	दडो

(ख) आदि सम ध्वनि आगम

अनुकार वाची शब्द के प्रथम वर्ण आगम को समध्वनि व्युत्पादक रूप म स्वीकार किया गया है । इसका विवरण इस प्रकार है --

मूल ध्वन्यात्मक रूप	विकार	विकारजन्य रूप	आदि सम ध्वनि आगम	व्युत्पन्न रूप
भक	अ	भक	भ	भभक
धक	अ	धक	ध	धधक
भक	अ	भक	भ	भभक
चन	ए	चन	च	चचन
फड	ए	फेड	फ	फफेड
टल	आ	टाल	ट	टटोल

निष्कर्ष रूप मे अनुकारवाची धातु प्रत्यय के रूप में /आ/ एव सम ध्वनि आगम की प्रवत्ति को स्वीकार किया जा सकता है ।

५ ६ व्याकरणिक प्रत्यय

व्याकरणिक प्रत्यय बीकानेरी म विविध प्रकार के सम्बन्धा का बोध कराते हैं । यह सम्बन्ध वाक्यस्तरीय एव पदस्तरीय दोनो प्रकार का उप लब्ध होता है । वाक्यस्तरीय सम्बन्धो को वाच्य एव प्रयोग की सज्ञा से अभिहित किया जाता है एव पदस्तरीय सम्बन्धा म काल, अथ, लिंग, वचन एव पुरुष का बोध होता है । प्रयोग का विवरण यहा प्रस्तुत नही किया गया है क्योंकि प्रयोग बोधक भिन्नपदस्तरीय सम्बन्ध बोधक उपलब्ध नही होते एव सम्बन्ध बोध भी वाक्यस्तरीय है । क्रिया-पदो म व्याकरणिक सम्बन्ध बोधको का स्वरूप इस प्रकार है—

(१) काल (२) अथ (३) वाच्य (४) लिंग, वचन एव पुरुष

इनका क्रमश विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा रहा है—

५ ६ १ काल

काल विधान से समय का बोध होता है । क्रिया व्यापार के आरम्भ, समाप्ति एव सभावना के आधार पर "काल" को तीन भागो मे विभाजित किया जाता रहा है ।

(१) वतमान काल (२) भूत काल (३) भविष्यत् काल

काय व्यापार की पूर्णता, अपूर्णता एव सामान्यता के आधार पर इन्हे तीन भागो म विभाजित किया जा सकता है—

(१) पूर्ण (२) अपूर्ण (३) सामान्य

इस प्रकार "काल" की दृष्टि से क्रिया रूपो के स्वरूप को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(१) वर्तमान पूर्ण (२) वर्तमान अपूर्ण (३) वर्तमान सामान्य
(४) भूत पूर्ण (५) भूत अपूर्ण (६) भूत सामान्य
(७) भविष्यत् पूर्ण (८) भविष्यत् अपूर्ण (९) भविष्यत् सामान्य

इनका क्रमश विवरण इस प्रकार है—

५ ६ १ १ वर्तमान पूर्ण

जब वाक्यान्तर्गत कार्य व्यापार के अभी-अभी पूर्ण होने की प्रतीति हो उसे वर्तमान पूर्ण की संज्ञा दी गई है। बीकानेरी में वर्तमान पूर्ण के उदाहरण इस प्रकार द्रष्टव्य है —

	एक वचन	बहु वचन
(अ)	म्हैं चीठी लिखी है।	म्हो चीठी लिखी है।
	थें चीठी लिखी है।	था चीठी लिखी है।
	इयें चीठी लिखी है।	बा चीठी लिखी है।
(ब)	हू गयो हूँ।	म्हे गया हा।
	थूं गयो है।	म्हे गया हो।
	बो गयो है।	बे गया है।

उपर्युक्त आधार पर काल संरचना का स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(१) धातु+मूल कृदन्त = व्युत्पन्न अंग+/०/+लिंग वचन, बोधक प्रत्यय /आ/+सहायक क्रिया /है/ अस्तित्व सूचक+व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय भूतकृदन्त=व्युत्पादक प्रत्यय+/य/ पुंलिंग+पुंलिंग एक वचन प्रत्यय /ओ/+सहायक क्रिया /है/+अस्तित्व सूचक+उत्तम पुरुष एक वचन पुंलिंग स्त्रीलिंग प्रत्यय /आ/ का प्रयोग हुआ है।

उपर्युक्त निष्कर्ष के आधार पर कहा जा सकता है—

	एक वचन			बहु वचन	
	मूल कृदन्त	सहायक क्रिया /ऊ/		मूल कृदन्त	सहायक क्रिया /आ/
१—	आयो	हो	ऊ	आया	हो आ
२—	आयो	हो	ऐ	आया	हो आ
३—	आयो	हा	ऐ	आया	हो आ

योग क्रम की दृष्टि से यह यौगिक विधान विश्लिष्ट कोटि का है एवं अनुतान्त क्रिया पदों का योग विश्लिष्ट कोटि का है तथा व्याकरणिक प्रत्ययों का योग संश्लिष्ट कोटि का है।

५ ६ १ २ वर्तमान अपूर्ण

जब वाक्यान्तगत वर्तमान में कार्य व्यापार की अपूर्णता का बोध होता है उसे वर्तमान अपूर्ण की संज्ञा से अभिहित किया गया है। बीकानेरी बोली में वर्तमान अपूर्ण के रूपों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

एक वचन	बहु वचन
हूँ पढ़ू हू, हू लिखू हूँ।	म्हे पढा हा, म्हे लिखो हो।
थू पढ है थू लिखै है।	थे पढो हो, थे लिखो हो।
वो पढै है व लिखै है।	वे पढै है, वे लिखै है।

यहा सहायक क्रिया के लिंग वचन के समान मूल धातु में लिंग वचन प्रत्ययों का योग द्रष्टव्य है। शेष विवरण वर्तमान पूर्ण के समान हैं।

५ ६ १ ३ वर्तमान सामान्य

जब वाक्यान्तगत कार्य व्यापार की पूर्णता या अपूर्णता के स्थान पर वर्तमान में समानता का बोध होता है, उसे सामान्य वर्तमान की संज्ञा से अभिहित किया गया है। उदाहरण द्रष्टव्य है—

एक वचन	बहु वचन
मन किताब लिखणी है।	म्हान किताब लिखणी है।
थन किताब लिखणी है।	थान किताब लिखणी है।
वैनं किताब लिखणी है।	वोन किताब लिखणी है।

इनका विवरण वर्तमान पूर्ण की /है/ क्रिया के समान ही है अत पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

५ ६ १ ४ भूत पूर्ण

वाक्यान्तगत जब काम व्यापार भूतकाल म पूर्णता का बोध कराता हो उसे भूतपूर्ण की सज्ञा दी जाती है। बीकानेरी बोली म भूतपूर्ण के उदाहरण इस प्रकार है—

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
हूँ गयो हो थो।	म्हे गया हा था।	हूँ गयी ही थी।	म्हे गयो हा थ्या।
थू गयो हो, थो।	थ गया हा था।	थू गयी ही थी।	थे गयो हा थ्यो।
बो गया हा, था।	वे गया हा था।	बा गयी ही थी।	व गया हा थ्या।

उपर्युक्त काल संरचना का स्वरूप इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

(धातु + कृदन्त + व्याकरणिक प्रत्यय) + (सहायक क्रिया + व्या० प्र०)
/ग/ + /य/ + ओ /ह/ /य/ + ओ

उपर्युक्त आधार पर बोली म कृदन्त प्रत्यय /य/ एवं व्याकरणिक प्रत्ययों की उपलब्धि इस प्रकार है—

१— पुलिंग एक वचन	बहु वचन
/ओ/	/आ/
२— स्त्रीलिंग एक वचन	बहु वचन
/ई/	/य/ /ओ/

सूचना—

बीकानेरी म सहायक क्रिया के रूप /ह/ एव /थ/ दोनो ही क्रियाओं का समरूप म प्रयोग होता है।

५ ६ १ ५ भूत अपूर्ण

जब वाक्यान्तगत भूतकाल मे काय व्यापार की अपूर्णता का बोध होता है तो उसे भूत अपूर्ण की सज्ञा दी जाती है । बीकानेरी म भूत अपूर्ण के उप लब्ध रूप इस प्रकार है –

पुलिंग

एकवचन	बहुवचन
१– हू पढ़तो थो, हो।	म्हे पढता था, हा।
२– थू पढतो थो, हो।	थे पढ़ता था, हा।
३– बो पढ़तो था, हो।	बे पढ़ता था, हा।

स्त्रीलिंग

एक वचन	बहुवचन।
१– हू पढ़ती थी, ही।	म्हे पढ़्त्या थ्यो, हा।
२– थू पढ़ती थी, ही।	थे पढ़्त्यो थ्या, हा।

उपयु क्त उदाहरणों के आधार पर इसके योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –

धातु + कृदन्त + सहायक धातु + लिंग, वचन प्रत्यय

कृदन्त प्रत्ययो का वर्णन 'कृत प्रत्यय' अध्याय म किया गया है। भूत सहायक क्रिया एव धातु म लिंग, वचन प्रत्ययो का योग भूत पूर्ण के अनुरूप ही है अत पुनरावृति नहीं की गई है।

५ ६ १ ६ भूत सामान्य

वाक्यान्तगत भूतकाल म जब काय व्यापार की सामान्यता का बोध होता है तो उसे भूत सामान्य की सज्ञा दी जाती है । बीकानेरी बोली मे इसके उदाहरण इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं –

पुलिंग

एक वचन	बहु वचन
१– मन किताव लिखणी थी, ही।	म्हनि किताव लिखणी थी ।
२– थन किताब लिखणी थी, ही।	थोने किताव लिखणी थी।
३– वेन किताव लिखणी थी ही।	वान किताव लिखणी थी।

इसका विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

धातु + कृदन्त + सहायक क्रिया + लिंग वचन बोधक प्रत्यय

५ ३ १ ७ भविष्यत् पूर्ण एव अपूर्ण

बीकानेरी बोली म भविष्यत् पूर्ण एव अपूर्ण बोधक प्रत्यय उपलब्ध नही हाते इनका बोध सहायक क्रिया के माध्यम से होता है।

५ ३ १ ८ भविष्यत् सामान्य

वाक्यान्तगत जब भविष्य काल म काय व्यापार की सामान्यता का बोध हो तो उसे भविष्यत् सामान्य कहा जाता है। बीकानेरी बोली म इसका उपलब्ध रूप इस प्रकार है —

एक वचन	बहु वचन
हूँ पढीस	म्हू पढसा
थू पढीस	थे पढसो
बो पढसी	बे पढसी

५ ३ २ काल सरचना

धातु के साथ सहायक क्रिया के सयोग को दृष्टि म रखकर काल सरचना को दो वर्गों म विभाजित किया जा सकता है —

(१) मूल काल (२) यौगिक काल

१– मूल काल

यक धातु का प्रयोग नही होता तो उसे मूल काल की सज्ञा से अभिहित किया जाता है ।

२– यौगिक काल

जब कृदन्त म काल सरचना हेतु /है/ अस्तित्व सूचक एव /हो/ /थो/ आदि सहायक क्रियाओ का प्रयोग होता है तो उसे यौगिक काल की सज्ञा से अभिहित किया गया है ।

५ ६ २ १ मूल काल

बीकानेरी म मूल काल के रूप इस प्रकार उपलब्ध है —

(१) वतमान सामान्य	हूँ पढू
(२) भूत सामान्य	म्हे पढो
(३) भविष्यत् सामान्य	हूँ पढीस रूप
(४) भूत पूर्ण	हूँ पढियो
(५) वतमान सकेताथ	हूँ पढतो
(६) आदराथ विध्यथ	आप पढा
(७) सामान्य विध्यथ	थू पढे

उपयु क्त उदाहरणो पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि मूल धातु अथवा कृदन्तो म लिंग, वचन प्रत्यया का योग हुआ है । यथास्थान इनका विवरण काल एव अथ शीपक के अन्तगत किया जा चुका है ।

५ ६ २ २ यौगिक काल

कृदन्ता के आधार पर बीकानेरी मे उपलब्ध यौगिक काल सरचना को तीन वर्गों में विभक्त किया जा सकता है –

(१) वर्तमान कालिक	—	यौगिक रूप
(२) भूत कालिक	—	यौगिक रूप
(३) भविष्यद् कालिक	—	यौगिक

५ ६ २ २ १ वर्तमान कालिक यौगिक रूप

वर्तमान कालिक कृदन्त रूपों में /थो/, /हो/ धातु में विभिन्न व्याकरणिक प्रत्ययों का प्रयोग उपलब्ध होता है। बीकानेरी में वर्तमान कालिक यौगिक रूप इस प्रकार है —

सावतो हो सावतो होगी, सावती हासी सावता थो, सावती थी सावता हा आदि।

इनका विवरण अन्य शीर्षक के अन्तर्गत किया जा चुका है अत पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

५ ६ २ २ २ भूत कालिक यौगिक रूप

भूत कृदन्तों के साथ अन्य सहयोगी क्रिया रूप /हो/ /थो/ धातु के व्याकरणिक रूपों का प्रयोग हुआ है जिनका विवरण अन्य क्षेत्र के अन्तर्गत किया गया है। बीकानेरी में उपलब्ध भूतकालिक यौगिक रूप इस प्रकार है — मारियो मारिया, आदि।

५ ६ २ २ ३ भविष्यत् कालिक यौगिक रूप

जब भविष्य कालिक कृदन्तों में /हो/, /थो/ धातु के व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों का योग होता है तो उन्हें भविष्य कालिक यौगिक रूप की संज्ञा से अभिहित किया जाता है। बीकानेरी में उपलब्ध भविष्यत् कालिक रूप इस प्रकार है —

जावणो है जावणो है, जावणो हो जावणो हासी। इनका विवरण काल एवं अन्य शीर्षक के अन्तर्गत किया जा चुका है अत पुनरावृत्ति नहीं की गई है।

निष्कर्ष रूप में धातु में प्रयुक्त व्याकरणिक कोटि के उपलब्ध प्रत्ययों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

(क)

(१) /ऊ/ /ग/ /ओ/ /ओ/ /ग/ /आ/
(२) /ऊ/ /ग्/ /ओ/ /आ/ /ग/ /आ/
(३) /ए/ /ग्/ /आ/ /ए/ /ग/ /आ/

उपयुक्त उपलब्ध प्रत्ययो का वैज्ञानिक दृष्टि से विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता –

एक वचन	बहु वचन
/ऊ/, /ऊ/ /ए/	/आ/, /ए/

सूचना –

आदर सूचक वाक्यो मे बहु वाचनिक व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययो का प्रयोग एक वचन मे होता है –

(ख)

/इम/ /सी/ भविष्यत् वाचिक प्रत्यय है।

(ग)

/ओ/ एव /अ/ पुलिंग वाचक प्रत्यय स्वीकार किये जा सकते हैं।

(घ)

स्त्री लिंग वाचक प्रत्ययो मे /ई/ एकवचन वाचक एव /य/ओ/ को बहुवचन वाचक प्रत्यय माने जा सकते हैं।

योग क्रम की दृष्टि से इन व्याकरणिक प्रत्ययो का योग सश्लिष्ट कोटि का है।

उपयुक्त सभी कालो मे व्याकरणिक कोटि के पदों का योग क्रम अन्त्य योग की सीमा के अन्तगत आता है।

५ ६ ३, अर्थ

जब क्रिया व्यापार मे विधान की रीति का बोध हो व्याकरण के क्षेत्र

मे उस अथ के नाम से अभिहित किया गया है । बीकानेरी मे इस प्रकार के सबध (अथ) बोध की पाँच रीतियाँ उपलब्ध होती हैं —

(१) निश्चयाथ
(२) विध्यथ
(३) सभावनाथ
(४) सदेहाथ
(५) सकेताथ

५, ६ ३ १ निश्चयाथ

जब क्रिया विधान की रीति से निश्चय का बोध हो तो उसे निश्चयाथ की सज्ञा से अभिहित किया जाता है । बीकानेरी मे उपलब्ध निश्चयाथ रूप इस प्रकार है —

(अ) भविष्यत् सामान्य के रूप
(ब) वतमान सामान्य के रूप
(स) भूत सामान्य के रूप

उपयु क्त सभी रूपों का विश्लेषण क्रमश भविष्यत् सामान्य वतमान सामान्य एव भूत सामान्य के अन्तगत किया जा चुका है अत पुनरावत्ति नही की गई है ।

(द) भूत पूण के रूप

इसम लिंग वचन सहित भूत कालिक कृदन्तीय रूपों का प्रयोग होता है । यथा मरियो, पढ़ियो । इसम यौगिक भूतपूण के रूपों का भी प्रयोग होता है । यथा—पढ़िया हो करिया हो आदि । यहाँ भूत कालिक कृदन्त म /हो/ के वतमान सामान्य के विविध व्याकरणिक प्रत्ययों का प्रयोग हुआ है । कृदन्तीय व्युत्पादक प्रत्यय का विवरण कृत-प्रत्यय प्रकरण म एव /हो/ धातु का विवरण वतमान पूण म किया जा चुका है ।

(च) वतमान पूण के रूप

इसम भूत कृदन्त के साथ /हो/ धातु के सामान्य वतमान के विविध

व्यापारिक कोटि के प्रत्यया का प्रयोग होता है, यथा 'करियो है।" इनका विवरण यथा स्थान दिया जा चुका है।

(छ) वर्तमान अपूर्ण के रूप

इसमे वर्तमान अपूर्ण के रूपो का प्रयोग होता है जिनका विवरण वर्तमान अपूर्ण के अन्तर्गत किया जा चुका है।

(ज) भूत अपूर्ण के रूप

इसमे भूत अपूर्ण के रूपो का प्रयोग होता है जिसका विवरण भूत अपूर्ण मे किया जा चुका है।

(झ) भविष्यत् पूर्ण के रूप

(त) भविष्यत् अपूर्ण के रूप

(थ) भविष्यत् सामान्य के रूप

बीकानेरी मे भविष्यत् पूर्ण एव अपूर्ण बोधक रूप उपलब्ध नही होते बल्कि इनका बोध सहायक क्रियाओ के योग से होता है, जिसका विवरण भविष्यत् सामान्य के अन्तर्गत किया जा चुका है।

५ ६ ३ २ विध्यर्थ

जब वाक्यान्तर्गत किसी कर्त्तव्य परायणता, दायित्व हेतु किसी प्रकार का आदेश हो तो उसे विध्यर्थ की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। कार्य सम्पादन की प्रत्यक्षता एव अप्रत्यक्षता के आधार पर विध्यर्थ को दो भागो मे विभाजित किया जा सकता है—

(१) प्रत्यक्ष विधि
(२) अप्रत्यक्ष विधि

५ ६ ३ २ १ प्रत्यक्ष विधि

जब कार्य का सम्पादन आदेश कर्त्ता के समक्ष अभिवाछित होता है

ता उसे प्रत्यक्ष विधि की संज्ञा दी जाती है जाऊ, जाओ और जाव आदि।

बीकानेरी में उपलब्ध प्रत्यक्ष विधि के विविध रूप इस प्रकार है—

	एक वचन	बहु वचन
१—	हू जाऊ	म्हे जावों
२—	थू जाव	थे जावो
३—	वो जावै	वे जाव

उपर्युक्त उदाहरणों पर दृष्टिपात करने पर विदित होता है कि बीकानेरी बोली में प्रत्यक्ष विध्यर्थ प्रत्यय निम्नलिखित है—

एक वचन	बहु वचन
/ऊ/	/व-आं/
/आव/	/व-आ/
/व-ए/	/व-ऐ/

उपर्युक्त प्रत्ययों को यदि व्याकरणिक रीति से प्रस्तुत करना चाहें तो हम यह सकते हैं कि बीकानेरी बोली में स्वरांत धातुओं में प्रत्यय योग से पूर्व /व/ श्रुति का आगम होता है अतः /व/ को श्रुति स्वीकार कर सकते हैं एवं अवशिष्ट व्याकरणिक /उ/, /आ/, /ए/ एवं /ओ/ को प्रत्यक्ष विध्यर्थ के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

५ ६ ३ २ २ विध्यर्थ अप्रत्यक्ष

जब वाक्यान्तर्गत क्रिया व्यापार का सम्पादन आदेश कर्ता की अनुपस्थिति में होना वांछित होता है, उसे अप्रत्यक्ष विध्यर्थ की संज्ञा से अभिहित किया जाता है बीकानेरी बोली में इसके उपलब्ध रूप इस प्रकार है—

	एक वचन	बहु वचन
(क)	थूं पढ़े	थे पढ़िया
	थू करे	थे करिया

(ख) मन लावणो	म्होनै लावणो
थन लावणो	थोन लावणो
वेनै लावणो	वोन लावणो

(ग) थू आई	हो आयो
वा आई	हो आयो

(घ) आवणो है	आवणो है
आवणा है	आवणो है
आवणो है	आवणो है

उपयुक्त उदाहरणा के आधार पर इनका विवरण इस प्रकार किया जा सकता है—

(क) उपलब्ध अप्रत्यय विधायक प्रत्यय इस प्रकार है—

/ए/, /इय/, /णा/, /०/ इन्हें काल बोधक अंश के रूप में स्वीकार किया जा सकता है।

(ख) /आ/ एव /ई/ अंशो को अप्रत्यक्षता बोधक अंश के रूप मे स्वीकार किया जा सकता है।

(ग) क्रम संख्या "घ" के अन्तर्गत यौगिक रूप का प्रयोग उपलब्ध होता है जिसम भविष्य कालिक कृदन्त /णा/ एव सहायक क्रिया /ह/ के साथ /ए/ अप्रत्यक्षता बोधक अंश का योग हुआ है।

५ ६ ३ ३ सभावनार्थ

जब वाक्यान्तगत कार्य व्यापार की रीति के द्वारा कार्य की सम्भावना का बोध होता हो तो उसे सभावनार्थ की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। बीकानेरी बोली म उपलब्ध सभावना बोधक रूपो को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

	एक वचन	बहु वचन
(अ)	१– हु आऊ	म्हे आवा
	२– थू आव	थे आवो
	३– यो आव	ये आवा
(ब)	मन आवणो है	म्हान आवणो है
	२– थनै आवणो है	थोन आवणो है
	३– नैन आवणो है	वोन आवणो है

उपयु क्त उदाहरणो के आधार पर इनका विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है। वर्णित उदाहरणो म(अ)वर्गीय रूप मूल के हैं एव(ब)वर्गीय रूप यौगिक काल के हैं। इ वग म भविष्य् कालिक कृदन्त का प्रयोग हुआ है । द्वितीयाश सबद्धक के रूप म /हो/ धातु के सामान्य वतमान कालिक रूप का प्रयोग हुआ है। भविष्य कालिक कृदन्त का कृदन्त प्रकरण मे एव /हो/ धातु का विवरण यथास्थान किया जा चुका है। अत पुनरावृत्ति नहीं की गई है ।

५ ६ ३ ४ सदेहार्थ

जब वाक्यान्तगत क्रिया विधान की रीति स सन्देह का बोध हो तो उसे सन्देहार्थ की सज्ञा से अभिहित किया जाता है। शेखावाटी बोली म इसके उपलब्ध रूप इस प्रकार है –

	एक वचन	बहु वचन
(१)	आवतो होसी होवैला	आवता होसी, होवैला
(२)	आवती होसी, होवला	आवता होसी, होवैला
(३)	आवतो होसी, होवैला	आवता होसी, होवैला
(४)	आवणो होसी, होवैला	आवणो होसी, होवैला
(५)	आयो होसी, होवैला	आया होसी, होवैला

उपयु क्त उदाहरणो क आधार पर विश्लेषण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

सन्हार्य रूपों का निर्माण वर्तमान कालिक, भूत कालिक एवं भविष्यत् कालिक कृदन्तों के साथ /हो/ धातु के भविष्यत् कालिक रूप अथवा /हो/ धातु के साथ /एल/ व्युत्पादक एवं /-आ/ /ई/ व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययों के योग से होता है ।[1]

५ ६ ३ ४ सवेतार्थ

जब वाक्यान्तगत क्रिया विधान की रीति में संकेत का बोध होता है तो उसे सवेतार्थ की संज्ञा से अभिहित किया जाता है । बीकानेरी बोली में इसके उपलब्ध रूपों को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है —

(क) मूल काल

एक वचन	बहु वचन
हूं खावतो	म्हे खावता
थू खावतो	थे खावता
वो खावतो	वे खावता

(ख) यौगिक काल

हूं खावतो होयो	म्हे खावता होया
थू खावतो होयो	थे खावता होया
वो खावतो होयो	वे खावता होया

उपर्युक्त रूपों का विवरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

मूल काल में वर्तमान कालिक कृदन्त का प्रयोग उपलब्ध होता है एवं यौगिक काल में वर्तमान कालिक कृदन्त के साथ /हो/ धातु के भूत कालिक कृदन्तीय रूप का प्रयोग हुआ है ।

५ ६ ४ वाच्य

क्रिया के जिस रूप में उसके विधान का लक्ष्य निर्धारित होता है उस

१— बीकानेरी बोली में स्वरांत धातुओं में प्रत्यय योग से पूर्व 'य' श्रुति का आगम होता है अतः /हो/ धातु में प्रत्यय जुड़ने से पूर्व 'य' श्रुति का आगम हुआ है।

व्याकरण के क्षेत्र म वाच्य की सज्ञा से अभिहित किया गया है । उद्देश्य की दृष्टि से 'वाच्य' को तीन भागो म विभाजित किया गया है –

(१) कर्तृ वाच्य
(२) कर्मवाच्य
(३) भाववाच्य

५ ६ ४ १ कर्तृवाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह बोध होता हो कि उसका उद्देश्य कर्ता है, उसे कर्तृ वाच्य की सज्ञा से अभिहित किया जाता है । बीकानेरी मे उपलब्ध काल एव अर्थ के रूपो का पूर्ण विश्लेषण प्रस्तुत किया जा चुका है । ये सभी रूप कर्तृ वाच्य के बोधक हैं । यद्यपि इन रूपों म वाच्य बोधक किसी अ श का प्रयोग नही हुआ है अत /०/ विभक्ति को वाच्यांश के रूप म स्वीकार किया जा सकता है ।

५ ६ ४ २ कर्मवाच्य

जब क्रिया के व्यापार से यह बोध होता है कि उसका उद्देश्य कर्म है तो उसे कर्म वाच्य की सज्ञा से अभिहित किया जाता है । बीकानेरी म कर्म वाच्य निष्पादक पृथक् प्रत्यय उपलब्ध नही होता बल्कि उसका व्युत्पादन जा ग अथवा जा - ग + /हो/ या /आ/ + व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययो के योग से होता है ।

१	१ २ ३	देसियो	जावतो
२			जाओ
३	,	"	जाऊं
४			गयो होसी
५		,	जावतो होसी
६	,	,	गया है
७		,	जावतो हो
८	,	,	जाऊ हू

धातु आवृत्ति की दृष्टि से कर्म वाच्य के रूप दो धातु के एव तीन धातु के रूप म उत्पन्न होते हैं। उपयुक्त उदाहरणो म /जा/ धातु के साथ /ओ/, /आ/, /ई/ लिंग, वचन बोधक प्रत्ययो का योग हुआ है। क्रम संख्या ४, ५ मे /ह्/ धातु के साथ भविष्यत् संभावना के प्रत्ययो का प्रयोग हुआ है।

५ ६ ४ ३ भाववाच्य

क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाता है कि वाक्य का उद्देश्य क्रिया का कर्ता अथवा कर्म नही है, अपितु क्रिया स्वतंत्र पद्धति ग्रहण करती है तो उसे भाववाच्य कहते हैं। भाववाच्य के रूपो की रचना अकर्मक क्रिया के द्वारा होती है। भाववाच्य की रचना एव विवरण कर्मवाच्य के अनुरूप ही है, अत पुनरावृत्ति नही की गई है।

५ ६ ५ लिंग, वचन एव पुरुष

बीकानेरी म उपलब्ध लिंग, वचन एव पुरुष बोधक प्रत्ययों के सम्बन्ध म काल एव अर्थ के क्षेत्र म सविस्तार विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है। लिंग वचन एव पुरुष प्रत्ययो का निर्धारण पदान्वय पर आधृत है। बीकानेरी म उपलब्ध लिंग, वचन बोधक प्रत्यय तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

पुंलिंग

	एक वचन	बहु वचन
(१)	ओ ऊ	आ ऑ
(२)	ओ ऊं	आ ऑं
(३)	ओ ए	आ ओ ए

स्त्री लिंग

(१)	आ ऊं ई	य/ओ
(२)	आ ऊं ई	य/ओ
(३)	आए ए ई	य/ओं

अध्याय/६

कृत्-प्रत्यय

७ १ सामान्य विवेचन

जो प्रत्यय धातुओं में संलग्न होकर अभिनव रूप निष्पन्न करते हैं, वे कृत् प्रत्यय के नाम से अभिहित किये जाते हैं एवं कृत् प्रत्ययों के योग से व्युत्पन्न रूप कृदन्त कहलाते हैं। जिस संज्ञा या विशेषण आदि से किसी क्रिया (धातु) का अर्थ झलक मारता हो उसे कृदन्त शब्द कहते हैं।[1] कृदन्त रूपों को हम निम्नांकित रूपों में विभक्त कर सकते हैं—

(१) संज्ञा वाचक कृत्-प्रत्यय
(२) विशेषण वाचक कृत्-प्रत्यय
(३) क्रिया-विशेषण वाचक कृत-प्रत्यय

६ १ संज्ञा वाचक कृत्-प्रत्यय

जो प्रत्यय धातु में संलग्न होकर संज्ञावाची कृदन्त रूप व्युत्पन्न करते हैं, उन्हें संज्ञावाचक कृत्-प्रत्यय नाम से अभिहित किया गया है। बीकानेरी बोली में उपलब्ध संज्ञा वाचक कृदन्त रूप अधोलिखित हैं—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय	लिंग	वचन
पीस	/ण/	/०/	पु०	एक
दरम	/ण/	/०/	"	"

१—किशोरीदास वाजपेयी शब्दानुशासन पृष्ठ २६५

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्या० कोटि के प्रत्यय	लिंग	वचन
जीम	/ण/	/०/	पु०	एक
दख	/ण/	/ओ/	"	"
ले	/व/ /ण/	/ओ/	"	"
बोल्	/ण/	/ओ/	"	"
रम्	/ण/	/ओ/	"	"
आ	/व/ ,ण/	/ओ/	"	"
निरख्	/ण/	/ओ/	"	"

उपयुक्त तालिका पर दृष्टिपात करने पर विदित होगा कि यहाँ पर /ण/ व्युत्पादक प्रत्यय क रूप म उपलब्ध है।

६ १ १ प्रायोगिक स्थितियाँ

वितरण व्यवस्था के आधार पर कहा जा सकता है कि बीकानेरी म /ण/ प्रत्यय मुख्य रूप से केवल सज्ञा शब्द ही व्युत्पन्न करता है। कभी कभी इसका प्रयोग विशेषणवत् भी उपलब्ध होता है—

अणहोणी बात

कुमलावणो फूल

व्याकरणिक कोटि क प्रत्यय योग के आधार पर भी /ण/ का भिन्न स्तर स्थापित किया जा सकता है।

बीकानेरी म /ण/ के साथ सलग्न होने वाले व्याकरणिक प्रत्यय आगे द्रष्टव्य हैं—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
जीम्	/ण/	/०/	जीमण
नरख	/ण/	/०/	नरखण

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
पीस	/ण/	/आ/	पीसणा
/अण/ /हो/	/ण/	/ई/	अणहोणी
देख	/ण/	/ए/	देखणे
बोल्	/ण/	/आ/	बोलणा

वितरण व्यवस्था के आधार पर /ण/ प्रत्यय म /०/, /आ/, /ई/ /ए/ एव /आ/ प्रत्यया का योग उपलब्ध है।

उपर्युक्त कृन्तो से विभिन्न व्युत्पादक प्रत्ययो द्वारा भी इतर कोटि के व्याकरणिक स्वतन्त्र रूपांश उपलब्ध होते हैं, यथा—

देखणियो /देखण/इय/ओ/
पढणियो /पढण/इय/ओ/
रमणियो /रमण/इय/ओ/
करणआलो /करण/आल/ओ/
खावणआलो /खावण/आल/ओ/
मरणवालो /मरण/वाल/ओ/

उपयुक्त स्वतन्त्र रूपाशो मे प्रयुक्त होने वाले विभिन्न व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययो को योग की दृष्टि से दो वर्गों म विभक्त किया जा सकता है—

(क) पूर्व प्रत्यय (ख) पर प्रत्यय
अ

/इय/ /ओ/
/आल/ ओ /ई/
/वाल/ ओ /ई/

योग की दृष्टि स कृदन्तो के व्युत्पादक एव वचन बोधक प्रत्ययों

का योग संश्लिष्ट कोटि का है। इस योग क्रम का सूत्र रूप में इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	व्याकरणिक प्रत्यय = व्यु० कृ०
जीम्	/ण/	/०/ जीमण

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर तिर्यक् प्रत्ययों में कारक विभक्तियों का प्रयोग कृदन्तों में विश्लिष्ट कोटि का माना जा सकता है—

लावणन, जीमणसू, देखणे रै वास्ता, पीवण रो

कृदन्त प्रत्ययों में इतर व्युत्पादक प्रत्ययों का योग दोनों प्रकार का माना जा सकता है।

योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

संश्लिष्ट

व्युत्पादक प्रत्यय	कृत्	निषेध बोधक प्रकृति
अण	/होण /ई/	अणहोणी

यहाँ /ण/ व्यंजनांत है पर प्रत्यय व प्रकृति के योग से उसकी न्यूनता के कारण आक्षरिकता की उपलब्धी मानी जा सकती है।

विश्लिष्ट कृदन्त

कृदन्त	व्युत्पादक प्रत्यय	संज्ञा
करण	इय/ओ	करणियो
मरण	इय/ओ	मरणियो
पढण	आल/ओ	पढणआलो

६ २ विशेषण वाचक कृत्–प्रत्यय

जो प्रत्यय धातु में संलग्न होकर विशेषण शब्द व्युत्पन्न करते हैं,

उन्हे विशेषण वाचक कृत प्रत्ययो के नाम से अभिहित किया गया है। विशेषण-वाचक कृदन्त दो प्रकार के होते हैं –

(अ) वर्तमान कालिक कृत् प्रत्यय /त/ से व्युत्पन्न रूप
(ब) भूतकालिक कृत प्रत्यय /य/ से व्युत्पन्न रूप

६ २ १ वर्तमान कालिक कृत्-प्रत्यय

बीकानेरी के वर्तमान कालिक कृदन्त रूपो की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है—

धातु	व्युत्पादक प्रत्यय	तियक विधायक प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
पढ	त्	/-ओ/	पढ़तो
रम	-त्	/-ओ/	रमतो
सू	-त्	/ई/	सूती
सोच	त्	/-ओ/	सोचतो

उपर्युक्त तालिका पर दृष्टिपात करने से निम्नांकित निष्कर्ष निकाला जा सकता है —

(अ) बीकानेरी में /त/ वर्तमान कालिक कृत् प्रत्यय है।

(ब) इसके योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –
धातु + कृत् प्रत्यय + ति० वि० प्रत्यय = व्युत्पन्न कृदन्त

(स) यह योग क्रम सन्निष्ट कोटि का है।

(द) विशेषण के द्वारा विशेष्य के मुख्य क्रिया व्यापार का बोध होता है।

(य) विशेष्य के अनुरूप अन्य व्याकरणिक कोटि के प्रत्ययो द्वारा विकार उत्पन्न होता है।

६ २ २ भूतकालिक कृत्-प्रत्यय

बीकानेरी के भूतकालिक कृदन्त रूपों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत

। जा सकती है –

धातु	ध्वनि	कृत् प्रत्यय	तियक प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
मर	/इय/	/ओड/	/ओ/	मरियोडो
घुस	/इय/	/०/	/ओ/	घुसियोडो
रो	/य/	/०/	/ओ/	रायोडो
हस	/इय/	/०/	/ओ/	हसियो ऐ

उपर्युक्त तालिका के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किये जा सकते हैं –

(क) बीकानेरी में भूतकालिक कृदन्त प्रत्यय /ओड/ है।

(ख) प्रत्यय योग से पूर्व यदि धातु स्वरान्त हो तो /य/ अथवा /व/ श्रुति का आगम होता है एवं यदि धातु व्यंजनान्त हो तो /इय/ श्रुति का आगम होता है।

(ग) /ओ/ /ई/ तियक विधायक प्रत्यय हैं।

(घ) इसके योग क्रम को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है –
धातु+ध्वनि (श्रुति)कृत प्रत्यय+तियक विधायक प्र=व्यु० रूप

(ङ) योग की दृष्टि से यह योग क्रम संश्लिष्ट कोटि का है। इसके द्वारा विशेष्य के मुख्य क्रिया व्यापार की पूर्णता का बोध होता है।

(च) बीकानेरी में कहीं कहीं इस रूप का प्रयोग संज्ञावत् भी उपलब्ध होता है।

(छ) विशेष्य के अनुरूप इनके व्याकरणिक प्रत्ययों के योग से विकार उत्पन्न होता है।

६. ३ क्रिया-विशेषण वाचक कृत्-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के द्वारा धातु से क्रिया विशेषण रूपों की सृष्टि होती है,

इन्हें क्रिया-विशेषण वाचक कृत-प्रत्ययों की संज्ञा से अभिहित किया गया है। क्रिया-विशेषण वाचक प्रत्यय तीन प्रकार के हैं —

(१) पूर्व कालिक कृत्-प्रत्यय

(२) तात्कालिक क्रिया-विशेषण कृत्-प्रत्यय

१ २ १ पूर्वकालिक कृत्-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के द्वारा होने से दो व्यापारों में मुख्य क्रिया व्यापार के [illegible] होने से पूर्व किसी दूसरे भिन्न व्यापार के संपन्न होने की सूचना मिलती है उन्हें पूर्वकालिक कृत्-प्रत्यय कहते हैं।

बोलियों पूर्वकालिक प्रत्ययों की एक तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

धातु	प्रत्यय	व्युत्पन्न रूप
बेच	/०/	बेच
पढ़	/अ/ /र/	पढ़र
गु	/अ/ /र/	गुअर, गुर
गे	अर	गेअर /गेर

उपर्युक्त तालिका के आधार पर बोलियों में निम्नलिखित पूर्वकालिक कृत् प्रत्यय उपलब्ध हुए हैं —

/०/ /अर/ /अर/, /र/

उक्त तालिका के आधार पर निम्नलिखित निष्कर्ष प्रस्तुत किए जा सकते हैं —

(१) इन प्रत्ययों में किसी प्रकार के [illegible] प्रकार का [illegible] उपलब्ध नहीं हुआ।

(२) [illegible] को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है।

धातु + पूर्व कालिक प्रत्यय = व्युत्पन्न रूप

(३) /र/, /आ/ का प्रतिवर्द्धित रूप जहां पर का प्रयोग होता है वहां /अ/ ध्वनि का संशोधित रूप स्वीकार किया जा सकता है।

६ ३ २ तात्कालिक क्रिया-विशेषण कृत्-प्रत्यय

जिन प्रत्ययों के धातु में संलग्न होने पर मुख्य क्रिया व्यापार के साथ होने वाले अन्य क्रिया व्यापार की समाप्ति का बोध होता है, उन्हें तात्कालिक क्रिया विशेषण कृत् प्रत्यय के नाम से अभिहित किया गया है।

बीकानेरी के तात्कालिक कृत् प्रत्ययों से व्युत्पन्न होने वाले कृदन्त रूप इस प्रकार हैं —

विशेषणवाची कृदन्त + बल बोधक + /ई/ का प्रयोग। यथा —

काम होवत ई पार बोलियो।

सरप डसतेई मरग्यो।

दखत ई भागग्यो।

हूं चालता चालतो पडग्यो।

उपर्युक्त उदाहरणों में /ई/ परसर्ग के योग के अतिरिक्त द्विरुक्ति भी समन्वित होती है।

इस प्रत्यय द्वारा निष्पादित रूपों में अन्य व्याकरणिक कोटि के प्रत्यय जनित विकार उपलब्ध नहीं हैं।

निष्कर्ष रूप में बीकानेरी बोली में प्राप्त कृत् प्रत्ययों की तालिका इस प्रकार प्रस्तुत की जा सकती है —

विकारी	सनावाची	/ए/
	विशेषणवाची	अपूर्णता वाचक
		पूर्णता वाचक
		/०/ /त/
अविकारी	पूर्वकालिक	/०/ /ईय/ /र अर/
	तात्कालिक क्रिया विशेषण	/ई/

⊖ ⊖

अध्याय / ७

पश्च-प्रत्यय

७.१ सामान्य विवेचन

बीकानेरी म कुछ परसग इस प्रकार के हैं जिनके द्वारा वाक्यस्तरीय व्याकरणिक कोटि का सम्बध बोध होता है अथवा जो वाक्य म किसी व्याकरणिक वाक्यात्मक रीति का बोध कराते हैं, प्रयोग की दृष्टि से इनका प्रयोग पद या समुच्चय के पश्चात् होता है, योग की दृष्टि से ये मुक्त सक्रामक हैं अर्थ की दृष्टि से इस प्रकार के परसगों म स्वतन्त्र अर्थ बोध कराने की क्षमता नहीं होती। अत इस प्रकार के परसर्गों को पश्च प्रत्यय की सज्ञा स अभिहित किया गया है। इनकी कार्य कारिता एव प्रायोगिक स्थिति की भिन्नता के कारण इन्हें पृथक कोटि म ही स्वीकार करना चाहिये। अत इसी मान्यता को स्वीकार कर इनका पृथक् विश्लेषण इस अध्याय में प्रस्तुत किया गया है।

पश्च प्रत्ययों को बोधकता के आधार पर दो वर्गों म विभाजित किया जा सकता है —

१— परसर्ग

२— निपात

१— परसर्ग

परसग वे आवद्ध अ ग हैं जो किसी प" या प" समुच्चय के पश्चात् प्रयुक्त होकर वाक्य म किसी दूसरे प" या प" समुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्या त्मक सम्बन्ध व्यक्त करते हैं।[1] परसग से मेरा आशय एस स्वतन्त्र रूपांशो से हैं जिनम स्वतन्त्र अथ बोधकता की क्षमता नहीं होती एव जो वाक्या न्तगत किसी प" या प"समुच्चय के पश्चात् संलग्न होकर किसी दूसरे प" या पद समुच्चय से व्याकरणिक अथवा वाक्यात्मक सम्बन्ध व्यक्त करत हैं। यथा—

"वे छोर न मारियो —वाक्य म 'न परसग एक ओर सनाम" /छोर/ एव क्रियापद /मारियो/ के बीच कमपरक सम्बन्ध सूचित करता है तो दूसरी ओर इसका स्वतन्त्र अथ कुछ नहो है।

२— निपात

निपात व आवद्ध अश हैं जो उस प" या प" समुच्चय के पश्चात् वाक्य म निक्षिप्त होते हैं जिसके सम्बन्ध म किसी व्याकरणिक या वाक्या त्मक रीति या पद्धति अभिप्रेत होती है। निपात स मेरा आशय एस आवद्ध रूपाशो से है जो वाक्यान्तगत निश्चय अथवा अवधारणा सूचित करते हैं एव जिस प्रकार परसर्गों द्वारा अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त होते हैं उसी प्रकार निपातो द्वारा सम्बन्ध व्यक्त नहीं होत अपितु उनके द्वारा किसी व्याकरणिक रूढि अथवा वाक्यात्मक विधि का प्रकाशन होता है। इस प्रकार इनकी प्रकृति परसगो से भिन्न है। यथा—

छोर ईज ओ काम करियो है, वाक्य मे /ईज/ निपात /छोर/ के सम्बन्ध म निश्चय अथवा अवधारणा सूचित करता है छोरा ही इस काम को करने वाला है अन्य कोई नहीं।

१— डॉ० मुरारीलाल उप्रति हिन्दी मे प्रत्यय विचार, पृष्ठ ३०१

७२ परसग

बीकानेरी म अधोलिखित परसग उपलब्ध हैं—

१— /०/
२— /नै/
३— /सू/
४— /रै/
५— /र/ओ, आ, ई।
६— /आन/वाल/ओ,आ, ई/
७— /स/ओव/आव/ईव/
८— /म/पर/
९— /भर/तक/तई/

इन परसर्गों द्वारा किसी न किसी प्रकार का व्याकरणिक सम्बन्ध बोध होता है। रूप की दृष्टि स इन परसर्गों को दो भागों मे विभाजित किया जा सकता है—

अ— रूपान्तर रहित
ब— रूपान्तर सहित

अ— रूपान्तर रहित

जिन परसर्गों मे किसी भी प्रकार के व्याकरणिक अ गो के योग उपलब्ध नही होत अर्थात् जो वाक्यान्तगत प्रत्येक स्थिति म एक समान रहते हैं एव लिंग, वचन के अनुरूप परिवर्तित नही होते, उन्हे रूपान्तर रहित परसग की सज्ञा से अभिहित किया गया है। बीकानेरी बोली म निम्नलिखित परसग रूपान्तर रहित हैं—

/न/ /सू/ /र/ /म/ /पर/ /भर/ /तक/

ब— रूपान्तर सहित

जिन परसगो म लिंग एव वचन के अनुरूप परिवर्तन होता है, उन्हे

रूपांतर सहित परसग कहा गया है। बीकानेरी म निम्नाकित परसग रूपान्तर सहित हैं— /र/ /वाल/ म लिंग एव वचन के अनुरूप /ओ/ /आ/ /ई/ विभक्तिया लगती हैं एव /म/ परसग के उपरान्त लिंग एव वचन के अनुरूप /-ओड/ /आव/ /ईन/ अ शो का योग उपलब्ध होता है।

७ २ १ रूपान्तर रहित परसग

रूपातर रहित परसगों का विवरण इस प्रकार है—

७ २ १ १ /न/

बीकानेरी म इस परसग का प्रयोग संज्ञा, सवनाम एव क्रिया विशेषण के पश्चात् होता है। विशेषण जब संज्ञावत् प्रयुक्त होते हैं तो उनके पश्चात् इस परसग का प्रयोग उपलब्ध होता है। यथा— 'मरियाड न मत मार' वाक्य मे /मरियोड/ पद संज्ञावत् प्रयुक्त है, ऐसी दशा म /न/ का व्यवहार है। यह परसग मुख्य रूप से कम कारक का सूचक है।

इस परसग से अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त होते हैं। इसके प्रयोग एव सम्बन्ध बोध इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते हैं—

संज्ञा पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
छोर	न	छोर न
घर	न	घर न
छोरी	न	छोरी न
सवनाम पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
म्हैं ~ म	न	मन
थैं ~ थ	-न	थन
ब	-न	बन
क्रिया विशेषण	परसग	व्युत्पन्न रूप
अठ ~ अठी	-नै	अठीन
वठ ~ वठी	न	वठीन
क ~ कठी	-न	कठीन

सम्बन्ध बोध

छोरा नै अबार काम करनो है	(कर्तृ परक)
छोरी नै स्कूल जरूर जावणो है	(')
मनै काम करायो	(")
राम नै फोड़	(कर्म सूचक)
मा नै बुलाव	(')
अठीन मत देख	(क्रिया सूचक)
काल रात नै सूब पोणी पड़ियो	(अधिकरण परक)

७२१२ /सू/

इस परसग का प्रयोग सज्ञा सर्वनाम, विशेषण एव क्रिया-विशेषण के पश्चात् उपलब्ध होता है। इस परसग द्वारा करण एवं अपादान परक सम्बन्ध बोध होता है। इसका प्रयोग एव सम्बन्ध बोध इस प्रकार है—

प्रयोग

संज्ञा पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
राम	सू	राम सू
मन	सू	मन सू
ध्यान	सू	ध्यान सू
सर्वनाम पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
म्हैं	-सू	म्हैं सू
थ	-सू	थ सू
ओ/ई	-सू	ई सू
विशेषण पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
थारा	-सू	थारा सू
एक	-सू	एक सू
सब	-सू	सब सू

क्रिया विशेषण	परसग	व्युत्पन्न रूप
कद	गू	कद गू
काल	गू	काल गू
भट	गू	भट गू

सम्बन्ध बोध

छोर गू घालीज कोयनी	(कर्तृ परक)
म्है गू अब काम हुय कोयनी	"
था म्हैगू डरैं	(करण परक)
थी गूं काम कर	"
था डागले गू पडग्यो	( )
धजड गू सोगा तिर रया है	
मरा गू गयो	(हीनता वाचक)
मते गू आयो	(स्थिति सूचक)
दो रुपिया र ब्याज गू	(भाव सूचक)
म्हैं गू आयजन घोलो गाव	(तुलना सूचक)

७ २ १ ३ /रै/

इस परसग का प्रयोग संज्ञा, सवनाम विशेषण एव क्रिया विशेषण के पश्चात् होता है एव यह परसर्ग सम्प्रदान कारक का सूचक है। इस परसग के द्वारा क्रिया के साथ अस्तित्व उत्पति क्रम एव निमित्त परक सम्बन्ध व्यक्त होते हैं। इसके प्रयोग एव सम्बन्ध को उदाहरण सहित इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

संज्ञा पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
छोर	रै	छोर र
लुगाई	र	लुगाई र

टावरा	-र	टावरा रै
सवनाम	परमग	व्युत्पन्न रूप
ओ ७ इ	रै	इरै
वे	रै	वेरै
म्हा	र	म्हार
विशेषण पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
सव	र	सवर
सगला	-र	सगलोर
क्रिया विशेषण	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
अठ	र	अठरै
वठै	रै	वठरै

सम्वन्ध वोध

म्हार छोरै र दा वटा है	(अस्तित्व परक)
म्हारै दो पोता है	"
थार माम र एक हावली है	"
राम र पेन्न लाया हू	(सम्प्रदान सूचक)
इय लुगाई र एक छारो हुयो	(उत्पत्ति परक)
म्हारै च्यार छोरा हुया	"
मा वेटी रै थप्पड मार रई है	(कम सूचक)
राम र वास्त वजार गयो था	(प्रयोजन परक)

सूचना

प्रयाजन परक सम्बन्ध मे /र/ के पश्चात् 'वास्ते" का प्रयोग होता है।

६ २ १ ४ /मे/

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा, सवनाम, विशेषण एव क्रिया विशेषण के

पश्चात होता है। यह अधिकरण कारक का कारक है। यह क्रिया एवं अन्य पदों के साथ अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त करता है। इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध बोध सोदाहरण द्रष्टव्य है—

संज्ञा पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
घर	-म	घर म
वन	म	वन में

सर्वनाम	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
म्हैं	-म	म्है मे
यें	में	यें में
वा	में	वा में

विशेषण पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
एक	मे	एक म
दो	-म	दो म
औरों	म	औरो म

क्रिया विशेषण	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
आज काल	-म	आजकाल मे
इतें	म	इतें म
जल्दी	में	जल्दी

सम्बन्ध बोध

छोर न गु भार म लेजायर मारियो	(अधिकरण सूचक)
घर म कोई कोयनी	"
म्है मे आईज एक कमी है	,
थारी बदली आजकाल मे होयजासी	(काल सूचक)
म्होर जमीन म भाव सस्ता था	"
आज काल म जपुर आईस	,

म्हे मे थोमे कया फरक है (काल सूचक)

म्हा मे थू बडो है (अवस्था सूचक)

टाबर टोगर मजे म है (स्थिति सूचक)

म्हे च्यार रुपियों मे पेन मोल लियो (मूल्य सूचक)

वो घर तीन हजार में लियो "

६ २ १ ५ /ऊपर/

इस परसर्ग का प्रयोग सना, सवनाम पदो के पश्चात् होता है। इस परसर्ग के द्वारा क्रिया अथवा अन्य पद से अनेक प्रकार के सम्बन्ध व्यक्त होते हैं। इसके प्रयोग एव सम्बन्ध बोध इस प्रकार है—

प्रयोग

सना पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
डागल	-ऊपर	डागलै ऊपर
सेजड	-ऊपर	सेजडै ऊपर
आलै	-ऊपर	आलै ऊपर

सवनाम पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
म्हे	-ऊपर	म्हैं ऊपर
थ	-ऊपर	थें ऊपर
इय	-ऊपर	इयै ऊपर

सम्बन्ध बोध

गधे ऊपर मत चढ (अधिकरण सूचक)

पोथी आलं ऊपर पडी है ,

गाडी दुगै ऊपर है "

बात ऊपर बात चाली (अनतरता सूचक)

तगादै ऊपर तगादा आया "

काम करण उपर हैं	(कारक सूचक)
थोरै ऊपर पूरो भरोसो है	(विजय सूचक)

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञापदो के पश्चात् होता है एवं इससे व्युत्पन्न रूप विशेषण एवं क्रिया विशेषण होते है। इस परसर्ग का प्रयोग निपात के रूप मे भी होता है। जब इसका प्रयोग परसर्ग के रूप मे होता है तो यह अपने पूववर्ती सज्ञापद का परवर्ती सज्ञापद से मात्रा अथवा परिमाण परक सम्बन्ध व्यक्त करता है। परतु जब यह क्रिया से सम्बंधित होता है तो उसके साथ साकल्य परक सम्बन्ध द्योतित करता है। इसके प्रयोग एवं सम्बन्ध उदाहरण सहित इस प्रकार प्रस्तुत किये जा सकते है—

प्रयोग

सज्ञा पद	परसर्ग	व्युत्पन्न रूप
सेर	भर	सेर भर
दिन	भर	दिन भर
मुट्ठी	भर	मुट्ठी भर
टके	भर	टके भर
महन	भर	महने भर

सम्बन्ध बोध

पाव भर भुजिया	(परिमाण सूचक)
सेर भर घी पीग्यो	
छटाक भर खानो है	,
रात भर जागरण करियो	(साकल्य सूचक)
दिन भर सूता रयो	,
पोता करोगनो ऊमर भर राइस	
टके भर सऊर कायनो	(हीनता सूचक)

७ २ १ ७ /नव/ /तई/

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा सर्वनाम एवं क्रिया विशेषणो के पश्चात्

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
छोर र /ओ	छोरा र /आ	छोरी र / ई	छोरया र/ई

इसी प्रकार वाल / ओ आ, ई/ /स/ /आव/ /आक/ /ईक/ बीकानेरी म सामान्यत रूपान्तर सहित परसर्गों से विशेषण वाक्यांश व्युत्पन्न होते हैं एव जिस प्रकार विशेषण विशेष्य की विशेषता व्यक्त करते हैं उसी प्रकार ये वाक्यांश भी । रूपान्तर सहित परसर्गों के विषय म एक महत्व पूर्ण बात यह भी है कि इनका प्रयोग केवल पदों के पश्चात् ही होता है प्रातिपदिका के पश्चात् नही होता । यथा — /छोरी रो/ /घणा सीक/ /साईकल आलो/ इन वाक्यों मे /छोरी/ /घणा/ /साईकल/ पद है । पश्चाश्रयों का प्रयोग भी इन परसर्गों के पूर्व हो सकता है ।

७ २ २ १ /र/ /ओ, आ, ई/

इस परसर्ग का प्रयोग सज्ञा, सवनाम विशेषण एव क्रिया विशेषण के पश्चात् होता है । इसके प्रयोग एव सबध बोध को इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—

सज्ञा पद	परसग	व्युत्पन्न रूप
छोर	र/ओ	छोर रो
छोरी	र/ई	छोरी री
मनखा	र/आ	मनखो रा
सवनाम पद	**परसग**	**व्युत्पन्न रूप**
आ ~ ई	-र/ओ	ईरो
था	र/ई	थारी
म्हो	-र/आ	म्हारा
विशेषण पद	**परसग**	**व्युत्पन्न रूप**
सब	-र/ओ	सबरो

		गगनारी
	र/ई	मेमा ग
गगना	र/आ	अनुरा क्र
गर्मों	परसग	मन्ना
क्रिया विशेषण	र/आ	जन्नी
मद	र/ई	बठरा
जद	-र/आ	
बठ		

सबध बोध (स्वामी भाव-सूचक)

दार रा रमतियो है "
कुमार रो घर है (अगांगी सूचक)
घोडो री टोग "
थारो मायो (जन्य-जनक सूचक)
राजा रो बेटा "
म्हारी मा (काय कारण सूचक)
पीतल री थाली "
सो रा हथौडो (माह सूचक)
मायण रो मटलो (सापत्य सूचक)
गाँव रो गाँव (प्रयोजन परक)
वरणरो कमरो

६ २ २ २ /आल/ /वाल/ /ओ आ, ई/

इस परसग का प्रयोग संज्ञा, सर्वनाम एवं क्रिया विशेषण के पश्चात् उपलब्ध होता है एवं इसके योग से सज्ञा तथा विशेषण वाक्यांश व्युत्पन्न होते हैं। जब इसके योग से विशेषण वाक्यांश निर्मित होते हैं तो इसके विशेष्य के लिंग एवं वचन के अनुसार विभक्तियाँ लगती हैं। जब इससे सज्ञा वाक्यांश निर्मित होते हैं तो संज्ञा प्रातिपदिकों की भांति लिंग, वचन एवं कारक विभक्तियां लगती हैं यथा – पुंलिंग अ /अ/आ, आ, ई। इसके प्रयोग एवं

सवनाम पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
वो	तो	वा तो
ओ	तो	ओ तो
मैं	तो	म तो

विशेषण पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
चोखो	तो	चोखो तो
धोलो	तो	धोलो तो
खराब	तो	खराब तो

क्रिया विशेषण पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
अठै	तो	अठै तो
बठ	तो	बठ तो

सम्बन्ध बोध

बैरो छोरो तो मर ग्यो	(निश्चय सूचक)
ए रुपिया तो देवणा पडसी	"
म्हा न तो दे	(आग्रह सूचक)
काल तो आया	"
मरिया ता कायनी	(प्रश्न सूचक)
पन्योिडो तो कोयनी	(गुण सूचक)

७ ३ २ /तक/

इस निपात का प्रयोग सना, सवनाम, क्रिया एव क्रिया विशेषण के पश्चात् होता है । यह निश्चय अथवा अवधारण के अथ म प्रयुक्त होता है

प्रयोग

सना पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
पुलस	तक	पुलस तक

हिन्दी	तक	हिन्दी तक
चिन्ठी	तक	चिट ठी तक
सवनाम	निपात	व्युत्पन्न रूप
वे	तक	वे तक
म्हें	तक	म्हें तक
थें	तक	थें तक
क्रिया-पद	निपात	व्युत्पन्न
पढ़िया	तक	पन्यिा तक
सूयो	तक	सूयो तक
देखियो	तक	दखियो तक
क्रिया विशेषण	निपात	व्युत्पन्न रूप
कठ	तक	कठै तक
आज	तक	आज तक

सम्बन्ध बोध

पुलस तक बमू घबरावैं (अवधारण सूचक)
आज तक इसो कदे को होयोनी
काल तक जाईमीज (निश्चय सूचक)

७ ३ ३ /न/ /नी/

/न/, /नी/ यद्यपि इसका प्रयोग निषेध के अर्थ मे होता है परन्तु कुछ प्रयोगो म यथा " कई न कई तो करो ' वाक्य म /न/ अनुनय का सूचक है। ऐसे प्रयोगा म /न/ को निपात स्वीकार किया गया है। बोली म /न/ का प्रयोग सवनाम एव क्रिया विशेषण के पश्चात् बहुत कम रूप मे उपलब्ध होता है एव /नी/ क्रिया के पश्चात् अनुनय का वाचक है।

सवनाम पद	निपात	व्युत्पन्न रूप
कई	न	कई न
कोई	न	कोई न

क्रिया विशेषण	निपात	व्युत्पन्न रूप
कठ	न	कठ न
क्रिया पद	निपात	व्युत्पन्न
पढो	नी	पढो नी
जाओ	नी	जाओ नी
आसो	नी	आसो नी

सम्बन्ध बोध

काई न काई तो जासी (अवधारणा बोधक)
कई न कई तो केवणा पडसी "
थे बठै जावो नी (अनुनय बोधक)

इति शुभम्

उपसंहार

पिछले अध्याया म हमने बीकानेरी मे उपलब्ध प्रत्ययो का सवागीण धरानात्मक विश्लेषण प्रस्तुत किया है। अध्ययन की उपलब्धिया से यह स्पष्ट हो जाता है कि बीकानेरी म प्रत्ययो का विकास पाणिनि पद्धति पर ही आधृत है पाणिनि के प्रत्यय विधान के अनुकूल ही प्रातिपदिको के रूप का निर्माण करने वाले प्रत्यय मूल एव गौण बीकानरी मे अब भी उसी प्रकार काय कर रहे हैं, पाणिनि पद्धति के अनुसार ही कृत् एव तद्धित प्रत्ययो से कृन्तो एव तद्धितो की रचना होती है परन्तु इसके साथ यह भी नही भुलाया जा सकता कि बीकानेरी म भी नव्य भारतीय आय भाषाओ की सरलीकरण की प्रवृति अत्यन्त मात्रा मे उपलब्ध है जिसके कारण कई पद घिस घिस कर प्रत्यय का रूप धारण कर चुके हैं और अब भी कर रहे हैं।

पूव प्रत्यय (उपसग) अब भी शब्द के आदि भाग मे सलग्न होकर प्रकृत्यथ में अभिनवता लाते हैं जिस प्रकार सस्कृत मे। इतना अतर अवश्य है कि सस्कृत भाषा मे उपसर्गों को आचाय पाणिनि ने 'प्रपरासम' सूत्र द्वारा एक एक सीमित सख्या मे आबद्ध कर दिया था परन्तु बीकानेरी म पूव प्रत्यय परम्परा का विकास नवीन ढग से हुआ है। बीकानेरी प्रत्ययों के विकास मे अनेकानेक विदेशी भाषाओ का भी पूव योगदान रहा है।

बीकानेरी म मध्य प्रत्यया का योग भी उपलब्ध होता है पर अत्यल्प मात्रा म जिनका विवेचन यथा स्थान प्रस्तुत किया जा चुका है।

सहायक ग्रंथ-सूची

(क) सस्कृत के ग्रथ

१- निरुक्त	
२- महाभाष्य	महर्षि यास्क
३- अष्टाध्यायी	महर्षि
४- लघुशब्देन्दुशेखर	महर्षि पाणिनि
५- पालि महा व्याकरण	
६- मोग्गलायन पालि	कच्चायन
व्याकरण	मोग्गलायन
७- प्राकृत प्रकाश	
८- ऋग्वेद	वररुचि
९- महाभारत	व्या० सायणाचार्य
१०- श्रीमद्भागवत महापुराण	गीता प्रेस गोरखपुर
११- शब्द कल्पद्रुम	व्या० श्रीधर स्वामी
१२- सस्कृत शब्दार्थ कौस्तुभ	प्रकाशित-पूना सस्करण
१३- कपिलायतन महात्म्य	चौखम्बा सस्करण
१४- भाव प्रकाश	प० विष्णुदत्त शर्मा
१५- हलायुध कोश	निर्णय सागर प्रेस सस्करण
१६- लघु सिद्धात कौमुदी	चौखम्बा सस्करण
१७- फक्किकारत्न मञ्जूषा	व्या० कुशवाहा
१८- शब्द व्युत्पत्ति दर्शन	निर्णय सागर प्रेस
१९- सस्कृत व्याकरण	चौखम्बा सस्करण
प्रवेशिका	बाबूराम सक्सेना
२०- सस्कृत साहित्य का	
इतिहास	डॉ० ए० बी० कीथ

(ख) हिन्दी के ग्रथ

२१- सस्कृत व्याकरण	
२२- हाड़ौती बोली और	डॉ० कपिलदेव द्विवेदी
साहित्य	डॉ० कन्हैयालाल शर्मा

	डॉ॰ भोलाशकर व्यास
२३– सस्कृत का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	सुनीति कुमार
२४– राजस्थानी भाषा	डॉ॰ उदयनारायण तिवारी
२५– हिन्दी भाषा उद्‌गम और विकास	डॉ॰ चन्द्रभान रावत
२६– हिन्दी भाषा रूप और विश्लेषण	डॉ॰ धीरेन्द्र वर्मा
२७– हिन्दी भाषा का इतिहास	डॉ॰ हरदेव बाहरी
२८– हिन्दी भाषा,उद्‌भव,रूप और विकास	डॉ॰ सरनाम सिंह जी 'अर
२९– हिन्दी भाषा रूप और विकास	डॉ॰ सरनाम सिंह जी अर
३०– हिन्दी की तद्‌भव शब्दावली	डॉ॰ भोलानाथ तिवारी
३१– भाषा विज्ञान	श्याम सुन्दरदास
३२– भाषा विज्ञान	प॰ कामता प्रसाद गुरू
३३– हिन्दी व्याकरण	किशोरीदास वाजपेयी
३४– शब्दानुशासन	श्री शिवनाथ
३५– हिन्दी कारकोंका विकास	डॉ॰ मुरारीलाल उप्रंति
३६– हिन्दी मे प्रत्यय विचार	
३७– कबीर काव्य का भाषा शास्त्रीय अध्ययन	
३८– बीकानेर का राजनतिक विकास और प मघाराम	स॰ डा॰ सत्यकेतु विद्यालकार
	श्री रमेशचन्द्र जन
३९– हिन्दी समास रचना का अध्ययन	डॉ॰ हीरालाल माहेश्वरी
४०– राजस्थानी भाषा और साहित्य	प्रो॰ नरोत्तमदास स्वामी
४१– राजस्थानी	प्रो॰ नरोत्तमदास स्वामी
४२– राजस्थानी व्याकरण	डा॰ मोतीलाल मेनारिया
४३– राजस्थानी भाषा और साहित्य	सीताराम लालस
४४– राजस्थानी व्याकरण	सीताराम लालस
४५– मारवाडी व्याकरण	डॉ॰ कलाशचन्द्र अग्रवाल
४६– शेखावाटी का वर्णना त्मक अध्ययन	

(क) सस्कृत के ग्र

१- निरुक्त

२- महाभाष्य

३- अष्टाध्यायी

४- लघुशब्देन्दुशेर

५- पालि महा व्य

६- मोग्गलायन पा

व्याकरण

७- प्राकृत प्रकाश

८- ऋग्वेद

९- महाभारत

१०- श्रीमद्भागवत

११- शब्द कल्पद्रु

१२- सस्कृत शब्दा

१३- कपिलायतन

१४- भाव प्रकाश

१५- हलायुध को

१६- लघु सिद्धात

१७- फक्किकारत

१८- शब्द व्युत्पत्ति

१९- सस्कृत व्या

प्रवेशिका

२०- सस्कृत सा

इतिहास

(ख) हिन्दी के

२१- सस्कृत व्या

२२- हाडौती बो

साहित्य

२३- सस्कृत का भापा शास्त्रीय अध्ययन — डॉ० भोलाशकर व्यास
२४- राजस्थानी भापा — सुनीति कुमार
२५- हिन्दी भापा उद्गम और विकास — डॉ० उदयनारायण तिवारी
२६- हिन्दी भापा रूप और विश्लेषण — डॉ० चन्द्रभान रावत
२७- हिन्दी भापा का इतिहास — डॉ० धीरेन्द्र वर्मा
२८- हिन्दी भापा, उद्भव, रूप और विकास — डॉ० हरिदेव वाहरी
२९- हिन्दी भापा रूप और विकास — डॉ० सरनाम सिंह जी 'अरुण'
३०- हिन्दी की तद्भव शब्दावली — डॉ० सरनाम सिंह जो अरुण'
३१- भापा विज्ञान — डॉ० भोलानाथ तिवारी
३२- भापा विज्ञान — श्याम सुन्दरदास
३३- हिन्दी व्याकरण — प० कामता प्रसाद गुरु
३४- शब्दानुशासन — किशोरीदास वाजपेयी
३५- हिन्दी कारकों का विकास — श्री शिवनाथ
३६- हिन्दी मे प्रत्यय विचार — डॉ० मुरारीलाल उप्रति
३७- कबीर काव्य का भापा शास्त्रीय अध्ययन
३८- बीकानेर का राजनतिक विकास और प मधाराम — स० डा० सत्यकेतु विद्यालकार
३९- हिन्दी समास रचना का अध्ययन — श्री रमेशचन्द्र जैन
४०- राजस्थानी भापा और साहित्य — डॉ० हीरालाल माहेश्वरी
४१- राजस्थानी — प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
४२- राजस्थानी व्याकरण — प्रो० नरोत्तमदास स्वामी
४३- राजस्थानी भापा और साहित्य — डा० मोतीलाल मेनारिया
४४- राजस्थानी व्याकरण — सीताराम लालस
४५- मारवाडी व्याकरण — सीताराम लालस
४६- शेखावाटी का वर्णनात्मक अध्ययन — डॉ० कैलाशचन्द्र अग्रवाल

४७– थोर गागई की भाषा — डॉ० कन्हैयालाल जी शर्मा
४८– बीकानेर राज्य का इतिहास — डॉ० गौरीशंकर हीराचन्द ओझा
४९– मथुरा जिले की बोली, (वर्णनात्मक अध्ययन) — डॉ० चन्द्रभान रावत
५०– राजस्थान का इतिहास — कर्नल टाड
५१– पुरानी राजस्थानी — डॉ० एल० पी० तेस्सीतोरी
५२– बीकानेर एक परिचय। — गौरीशंकर आचार्य
५३– राजस्थानी भाषा की रूप रेखा। — डॉ० पुरुषोत्तम मेनारिया
५४– बीकानेर के राज्य घराने का केन्द्रीय सत्ता से सम्बन्ध — डॉ० करणी सिंह
५५– राजस्थानी शब्द कोश — सीताराम लालस

(ग) अंग्रेजी के ग्रन्थ

५६– हॉकेट ए कोर्स इन माडर्न लिंग्विस्टिक्स। — ए को हाकेट
५७– लंग्वेज — ब्लूमफील्ड
५८– स्ट्रक्चरल लिंग्विस्टिक्स — जिलिग एच० हेरिस
५९– जनरल लिंग्विस्टिक्स — आर० एच० रोबिन्स
६०– एन इंट्रोडक्शन टू डिस्क्रिप्टिव लिंग्विस्टिक्स — गेलसन
६१– दी सिद्धांत कौमुदी आफ पाणिनि — श्री चन्द्र वसु
६२– लंग्वेज, इट्स नेचर एंड यूज — जेस्पसन
६३– लैंग्वेज — सपीर
६४– डिस्क्रिप्टिव कैटलाग आफ वार्डिक एण्ड हिस्टोरीकल मन्युस्क्रिप्ट्स (प्रथम भाग बीकानेर स्टेट) — डा० एल० पी० तेस्सीतोरी
६५– गजेटियर आफ बीकानेर — पी० डब्लू० पाउलेट